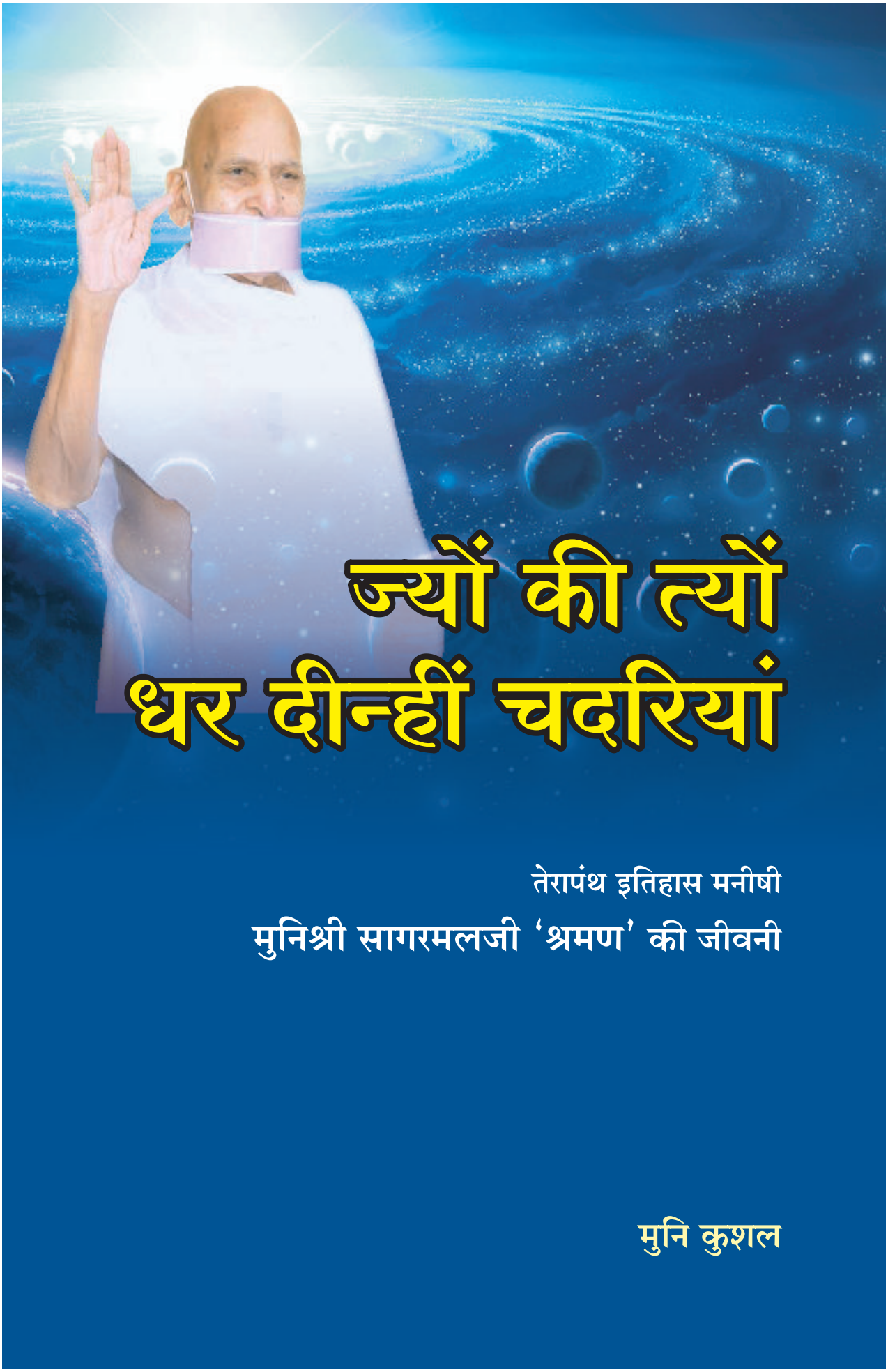

ज्यों की त्यों धर दीन्हीं चदरियां

तेरापंथ इतिहास मनीषी
मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण' की जीवनी

मुनि कुशल

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

विघ्न हरण मंगल करण,
स्वाम भिक्षु रो नाम।
गुण ओलख सुमिरण करै,
सरै अचिंत्या काम।।

आचार्यश्री महाश्रमण

अन्तिम यात्रा का दृश्य

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ज्यों की त्यों धर दीन्हीं चदरिया

तेरापंथ इतिहास मनीषी
मुनि सागरमलजी 'श्रमण' की जीवनी

मुनि कुशल

जैन विश्व भारती प्रकाशन, लाडनूं

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रकाशक : जैन विश्व भारती
पोस्ट : लाडनूं-३४१३०६
जिला : नागौर (राज.)
फोन नं. : (०१५८१) २२२०८०/२२४६७१
ई-मेल : jainvishvabharati@yahoo.com

© जैन विश्व भारती, लाडनूं

पंचम संस्करण : २०१४

कुल प्रतियां : ११००

मूल्य : ५०/- (पचास रुपये मात्र)

मुद्रक : पायोराईट प्रिण्ट मीडिया प्रा. लि. उदयपुर, फोन नं.: २४१८४८२

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आशीर्वचन

मुनिश्री सागरमलजी स्वामी (लाडनूं) तेरापंथ धर्मसंघ के एक विशिष्ट मुनि थे। वे भाईजी महाराज चम्पालालजी स्वामी की सेवा में लम्बे काल तक रहे थे। तेरापंथ के इतिहास के विषय में उनके पास बहुत जानकारियां थीं। उनमें शासनभक्ति का भाव भी परिलक्षित होता था। उनका जीवनवृत्त पाठकों को आध्यात्मिक प्रेरणा देने वाला बने। ग्रन्थ के लेखक मुनि कुशलकुमार खूब अच्छा विकास करे। शुभाशंसा।

जसोल (राजस्थान)
२४ नवम्बर २०१२

आचार्य महाश्रमण

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रस्तुति

तेरापंथ धर्मसंघ की परम्परा में अनेक दिग्गज साधु हुए है उन्होंने अपने समर्पण, सेवा, साधना, संयम, तपस्या और नाना विशेषताओं से भैक्षव गण नन्दनवन की आभा को द्विगुणित करने का प्रयास किया। उसी शृंखला में हुए—तेरापंथ इतिहास मनीषी मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण'।

मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण' भाईजी महाराज की सेवा में लगभग तीस वर्ष तक रहे। अतः आपको आचार्य तुलसी के उपपात में रहने का सहज अवसर मिल गया। मुनिश्री बचपन से ही नैसर्गिक विशेषताओं के धनी थे। दीक्षित होने के बाद मुनिश्री की योग्यता को आचार्यश्री तुलसी ने आंका। गुरुदेव का आशीर्वाद और स्वयं के पुरुषार्थ से मुनिश्री का व्यक्तित्व और कर्तृत्व निखर उठा। मुनिश्री ने संघ में, समाज में, सत्ता में और साधना के क्षेत्र में अपनी अलग ही पहचान बनायी या कहना चाहिये पहचान बन गयी।

सागरमलजी स्वामी, मणिलालजी स्वामी लगभग ५९ वर्ष तक साथ रहे। भाई न होते हुए भी आपसी व्यवहार में भातृत्व झलकता था। आप दो होते हुए भी अद्वैत थे। आप दोनों आपस में एक-दूसरे के प्रति जो अपनत्व भाव रहा इसका राज है—सागरमलजी स्वामी का वात्सल्य और मणिलालजी स्वामी का समर्पण। दोनों ही संत एक दूसरे की सेवा करने के लिए तत्पर रहते।

परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने मुझे (मुनि कुशल) दीक्षित करते ही सागरमलजी स्वामी की सेवा में नियुक्त किया। मैं अपना सौभाग्य मानता हूं कि मुझे सात वर्ष तक निरन्तर सागरमलजी स्वामी का सान्निध्य

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्राप्त हुआ। मुनिश्री ने मुझे पढ़ाया, बढ़ाया, सिखाया और कुछ काबिल बनाया। मुनिश्री हृदय से सरल व मन से निश्छल थे। उनका वात्सल्य आज भी याद आता है तो हृदय गद्‌गद्‌ हो जाता है। ऐसे उच्चकोटि के अणगार के असीम उपकार को मैं स्मृति पटल से विस्मृत नहीं कर सकता।

मुनिश्री के देवलोकगमन के पश्चात्‌ मैंने लक्ष्य बनाया, मुनिश्री के जीवन चरित्र को लिखना। महामहिम आचार्य भिक्षु व परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी की कृपा से यह कार्य भी यथाशीघ्र संपन्न हुआ।

सागरमलजी स्वामी हमारे मध्य नहीं है पर उनकी विरल विशेषताएं आज भी जन-जन के मुख से मुखरित हो रही है। मुनिश्री के जीवन से संबद्ध घटना प्रसंग अधिकांशत सागरमलजी स्वामी के मुखारबिन्द से सुने हुए थे। कुछ प्रसंग मणिलालजी स्वामी ने बताए। इस आधार पर प्रस्तुत कृति तैयार हुई है।

प्रस्तुत कृति का अवलोकन मणिलालजी स्वामी ने किया व साथ ही साथ करेक्शन भी। मैं मुनिश्री के प्रति कृतज्ञ हूं। गौतमजी सेठिया ने सूक्ष्मता पूर्वक अद्योपान्त निरीक्षण किया। व्याकरण संबंधी अशुद्धियों को शुद्ध किया। अन्य कार्यों में व्यस्त होते हुए भी श्रम किया। यह सराहनीय है। मुनिश्री के संसारपक्षीय भाई रणजीतजी कोठारी ने भी आवश्यक करेक्शन किये।

'ज्यों की त्यों धर दीन्हीं चदरिया' को पढ़कर पाठक मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण' के जीवन चरित्र को जानेंगे और कृति पढ़ कुछ प्रेरणा लेंगे तो हमारा श्रम सफलता की और चरणन्यास कर सकेगा।

२३ अक्टूबर २०१२ **–मुनि कुशल**

आचार्य भिक्षु समाधि स्थल, सिरियारी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अनुक्रमणिका

१.	एक महान संत	१
२.	जन्म	१
३.	जन्म कुंडली	२
४.	अध्ययन	४
५.	दिव्यात्मा से सम्पर्क	४
६.	मांगीलालजी का अविश्वास	५
७.	विश्वास	६
८.	दिव्यात्मा द्वारा उद्‌बोधन	७
९.	वैराग्य	८
१०.	जयचंदलालजी का वैराग्य	८
११.	मांगीलालजी का स्वप्न	९
१२.	माता की आज्ञा	९
१३.	दीक्षा	११
१४.	पांच वर्ष	१२
१५.	भाईजी महाराज की सेवा में	१३
१६.	श्रमण नाम का प्रादुर्भाव	१३
१७.	गौरांजी थारो भाई	१५
१८.	पहला प्रवचन	१६
१९.	कौन से गच्छ के हो	१६
२०.	महामूर्ख	१७
२१.	डेढ़ और डेढ़	१८
२२.	स्वामीजी के दर्शन	१९
२३.	पीरजी	२२
२४.	कवि	२२
२५.	कविता में दग्धाक्षर	२४
२६.	भिक्षु जीवन झांकी	३३
२७.	पात्र में सांप	३५
२८.	शरीर की जड़	३७
२९.	डॉक्टर	३७
३०.	वकील	३८
३१.	चित्रकार	३९
३२.	हस्तकला	४०
३३.	लिपिकार	४२
३४.	तीस साल	४३
३५.	जा सागर! कर मौज	४४
३६.	अग्रणी	४५
३७.	टालीवाला कमरा	४६
३८.	सत्ता और संत	४६
३९.	प्रभाव	४८
४०.	गांठ गायब	४८
४१.	सफल चतुर्मास	५१
४२.	सुदर्शन	५१
४३.	युवाचार्य बनने की बधाई	५३
४४.	महाप्रज्ञ	५४
४५.	लम्बे विहार	५५
४६.	गुजरात समाचार	५५
४७.	व्याख्यान में आवाज	५६
४८.	स्वास्थ्य निकाय	५८
४९.	प्यास	५९
५०.	चाकरी	५९

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

५१. मुख्यमंत्री ६१
५२. दक्षिण यात्रा ६२
५३. युवा शक्ति ६२
५४. सुनकी की घाटी ६३
५५. बेहोश ६४
५६. मर्यादा महोत्सव ६४
५७. सोना मिल गया ६४
५८. धर्मस्थला ६६
५९. गुरुदर्शन ६७
६०. इतिहासकार ६८
६१. अनासक्त ७०
६२. व्याख्यान ७०
६३. अस्वस्थ ७१
६४. सूचना प्रभारी ७२
६५. नमिऊण यंत्र ७२
६६. योग प्रयोग ७४
६७. विशेष साधना ७४
६८. सिरियारी प्रवेश ७५
६९. संत मंडली ७५
७०. यंत्र-मंत्र-तंत्र ७६
७१. वीरेन्द्रजी हेगड़े ७७
७२. भिक्षु जीवन झांकी ७७
७३. अमित वात्सल्य ७८
७४. दो कल्याणक ७८
७५. ओ. पी. जिन्दल ७९
७६. वृद्धावस्था में सेवा ७९
७७. बीस गाथा ८०
७८. सात महिना पांच पद ८०
७९. गुरु कृपा ८१
८०. अंतिम विहार ८२
८१. सतरंगी चांद ८२
८२. श्रम ८४
८३. योगी ८४
८४. गौरव ८५
८५. समय प्रबन्धन ८६
८६. आचार्यश्री तुलसी ८७
८७. आहार ८८
८८. रचना ८८
८९. फक्कड़ संत ९१
९०. थापिवाला संत ९१
९१. अस्वस्थ ९२
९२. तेरापंथ इतिहास मनीषी ९३
९३. आंखों का ऑपरेशन ९४
९४. सत्ता और सत्य ९५
९५. अस्वस्थ ९५
९६. अंतिम प्रवचन ९६
९७. अंतिम बार भिक्षु समाधि स्थल ९७
९८. अंतिम पांच दिन ९७
९९. आचार्य भिक्षु के दर्शन ९८
१००. संथारे की भावना ९९
१०१. सभी को दर्शन करने दो १००
१०२. अंतिम शिक्षा १००
१०३. अंतिम बातचीत १०२
१०४. प्रयाण १०२
१०५. जोड़ी टूट गयी १०३
१०६. अधूरे कार्य १०४
१०७. अंतिम संस्कार १०४
१०८. समाधि-स्थल १०५
१०९. चातुर्मास विवरण १०५
११०. जीवन यात्रा १०८
१११. मुनिश्री की स्मृति सभा १०९

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ज्यों की त्यों धर दीन्हीं चदरिया

(मुनि सागरमलजी 'श्रमण' की जीवनी)

एक महान संत

भारत की भूमि पर अनेकों ऋषि, मुनि, संत, महात्माओं ने जन्म लिया है। संतों द्वारा दिये गये पाथेय को ग्रहण कर जनता आध्यात्मिक पथ पर प्रस्थित भी हुई। राजस्थान की मरुधरा पर अनेक संत पुरुष अवतरित हुए हैं। जिन्होंने अपने तप, त्याग और वैराग्य से स्वयं को निखार कर महान संतों की श्रेणी में अपना स्थान बनाया है। उसी शृंखला में एक महान् संत हुये जिनका नाम था मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण'। मुनिश्री प्रखर प्रवचनकार, सिद्धहस्त लेखक, चित्रकार, तत्त्ववेत्ता, प्राच्य विद्याओं के ज्ञाता, सेवाभावी, इतिहासकार, उच्चकोटि साधक तथा अतिविरक्त और वैराग्यवान प्रकृति के धनी थे। अनेकों-अनेकों लोगों को समझा कर मुनिश्री ने उनको अध्यात्म के क्षेत्र में अग्रसर किया। आप नाना विशेषताओं के पुंजधर थे। यह तो है आपका ऊपरी परिचय। आइये! हम जाने और समझे मुनिवर के विराट व्यक्तित्व को।

जन्म

आपके पिताजी का नाम तिलोकचंदजी कोठारी था। वे सदाचारी, प्रामाणिक व धार्मिक क्षेत्र में विशेष रूप से भाग लेने वाले व्यक्ति थे। आपकी माता का नाम धापुदेवी था, वह मन से सरल, व्यवहार से निश्छल एवं धार्मिक प्रवृत्ति वाली महिला थी।

वि.सं. १९८२ माघ शुक्ला पंचमी का पावन दिन, संध्या का समय,

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

गोधुलि वेला में धापुदेवी ने एक पुत्र रत्न को जन्म दिया। पुत्र के जन्म पर सभी के चेहरे हर्षित हो उठे। बालक के दिव्य स्वरूप को देख कहा जा सकता था कि यह बालक कोठारी कुल का वैडूर्य होगा।

बालक का नाम 'सागर' रखा गया। माता-पिता भी बालक में शुभ संस्कारों के बीज वपन करने लगे। उनका लालन-पालन बड़े प्रेम से होने लगा।

जन्म कुंडली

दिनांक १८ जनवरी १९२६, सोमवार, माघ शुक्ला पंचमी को मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण' का जन्म हुआ। उसी आधार पर बनाई गई मुनिश्री की जन्म कुंडली अग्रोक्त प्रकार से है—

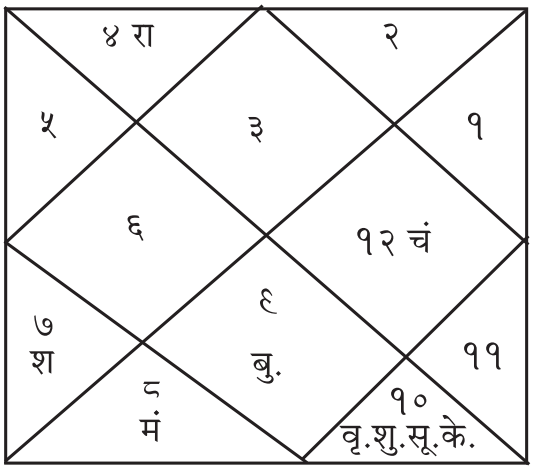

उपरोक्त कुंडली का फलादेश इस प्रकार है—

इस जन्म कुंडली के जातक का जन्म मिथुन लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी बुध सप्तम स्थान में धनुराशि (बृहस्पति की राशि) में है। लग्न पर लग्नेश बुध एवं लाभांश मंगल की पूर्ण दृष्टि से जातक सुन्दर, स्वस्थ, दीर्घ आयुष्य वाला एक बुद्धिमान व्यक्ति होगा तथा उसकी स्मरण शक्ति अत्यंत ही प्रखर होगी। किसी को भी एक बार देख या उसके बारे में सुनकर उसे याद रखेंगे। आप एक विद्वान व्यक्ति होंगे तथा शास्त्रों के अध्ययन में आपकी विशेष रुचि रहेगी। आप जो भी कार्य प्रारम्भ करेंगे

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उसे सच्चाई एवं ईमानदारी के साथ पूर्ण करेंगे।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा उत्तर भाद्रपद के प्रथम चरण का होकर दशम भाव में मीन राशि में स्थित है। जिसका स्वामी भी बृहस्पति है अतः यह जातक को धर्मात्मा, गुरु भक्त, सज्जनों की सेवा करने वाला, परोपकारी, तीर्थाटन-शील, सर्वत्र विजयी एवं यशस्वी बनाता है। आपकी तंत्र, मंत्र एवं ज्योतिष शास्त्र में श्रद्धा रहेगी। एवं इनका न्यूनाधिक ज्ञान भी होगा।

सप्तमेश गुरु के सूर्य में दाम्पत्य सुख का अभाव दिखाता है। पराक्रम स्थान में उदित सिंह राशि एवं पराक्रमेश सूर्य की कर्मेश गुरु एवं मोक्ष कारक ग्रह केतु के साथ अष्टम भाव में युक्ति एवं इस युक्ति पर धर्मेश शनि की दृष्टि तथा धर्म स्थान में व्यपदेश शुक्र की स्थिति इस जातक को उच्च कोटि का वैरागी, अध्यात्म की गहराईयों में ले जाने वाला, सत्य का साक्षात्कार कराने वाला और प्रव्रज्या एवं मोक्ष के सम्मुख ले जाने वाला योगी बनाता है। इसी योग के फलस्वरूप यह जातक ज्ञानी, ध्यानी, दर्शनशास्त्र, नीति शास्त्र, लेखन, इतिहास आदि कार्यों में विशेष रुचि शील रहेगा।

ऐसा योग स्पष्टवादी, वाद-विवाद निपुण एवं शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाला बनाता है वही पंचम भाव में उदित तुला राशि एवं पंचमेश शुक्र की भाग्यस्थान में स्थिति जातक में वाक्-सिद्धि, कल्पनाशीलता, काव्य-संगीत एवं कला के प्रति प्रेम, जप और स्वाध्याय में रत तथा सही दिशा में सोचने की शक्ति प्रदान करता है।

अष्टमेश शनि का छठे भाव में षष्ठेश मंगल के साथ जल तत्त्व की राशि वृश्चिक में विराजमान होना तथा अष्टम भाव में गुरु, केतु, सूर्य की युति जातक को कफ प्रधान रोग, हृदय रोग जैसी बीमारियों की संभावना दर्शाता है। यह योग एक तरह जहां जीवन के अंतिम पड़ाव में रोगग्रस्त होकर मृत्यु दर्शाता है वहीं दूसरी ओर उच्च भावों से समाधि मरण का स्पष्ट संकेत देता है।[1]

१. गोल्ड मेडलिस्ट, ज्योतिष विशारद रंजना गोठी द्वारा निकाला गया फलादेश

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अध्ययन

मुनिश्री छोटी अवस्था से ही कुशाग्र बुद्धि वाक्पटुता व प्रत्युत्पन्न बुद्धि के धनी थे। आपके माता-पिता ने आपको व्यवहारिक कलाएं सिखायी व आध्यात्मिक ज्ञान कराया। यह ज्ञान आपके जीवन के सर्वांगीण विकास में योगभूत बनने वाला था।

आप अध्ययन करने के लिए स्कूल जाने लगे। आप पहली, दूसरी व तीसरी कक्षा तक अच्छी दक्षता के साथ पढ़े। चौथी कक्षा में अध्ययन कम व खेलकूद को अधिक महत्त्व दिया जिसका प्रतिफल आया कि आप छह माही की परीक्षा में फेल हो गये और आपने स्कूल छोड़ दिया।

कई महापुरुष हुए हैं जो बिना पढ़े-लिखे ही महान व्यक्तित्व के धनी बन गये। मुनिश्री ने अध्ययन भले ही छोड़ दिया हो पर उनकी नैसर्गिक प्रतिभा उनके व्यक्तित्व को विकासशील व्यक्ति बनाने के लिए पर्याप्त थी।

दिव्यात्मा से सम्पर्क

भागलपुर (बिहार) में आपके ज्येष्ठ भ्राता मांगीलालजी रहा करते थे। मुनिश्री पहले अपने पिताजी के साथ रहते और फिर उनके देवलोकगमन के पश्चात् आप मांगीलालजी के पास रहने लगे। उस समय आपकी मातुश्री विद्यमान थी। पर मांगीलालजी स्वयं आपकी देखभाल करते और आपकी आवश्यकताओं की पूर्ति करते।

भागलपुर में आपके निकट के एक रिश्तेदार थे। उस परिवार में एक गोपाल नामक किशोर बालक था। मुनिश्री की उस किशोर बालक के साथ काफी घनिष्ट मित्रता थी। कई बार तो दोनों की दिन चर्या साथ-साथ में बीतती।

मुनिश्री के मित्र किसी व्याधि से संत्रस्त हो गया। काफी दिनों तक अस्वस्थ रहा। शारीरिक वेदना बढ़ने लगी। एक दिन मुनिश्री अपने परम मित्र के पास में बैठे थे। आपको महसूस हो गया अब इसका अधिक आयुष्य नहीं है आपने अन्त समय जान उन्हें नवकार मंत्र

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सुनाना शुरु किया। मित्र तन्मयता से नवकार मंत्र सुनने लगा। मन में शुभ अध्यवसाय आए और देवगति का बन्धन हो गया। मित्र का नवकार मंत्र सुनते-सुनते देवलोकगमन हो गया। अपने परम प्रिय मित्र के जाने से मुनिश्री का मन खिन्न हो गया।

कुछ ही दिनों के बाद का प्रसंग है—मुनिश्री सुबह-सुबह बर्हिभूमि की ओर जा रहे थे तभी एक दिव्यात्मा उनके सामने प्रकट हुई। आपके कदम थम गये। आप उस आकृति को देखने लगे। आकृति स्पष्ट हुई और कहा—सागर! मुझे पहचाना।

सागरमलजी बोले—क्यों नहीं! (अपन) हम तो अच्छे मित्र थे।

दिव्यात्मा—सागर! तेरे कारण ही मैं देवगति में गया। अंत समय में मुझे नवकार मंत्र सुनाया उसका ही परिणाम है कि मैं देवगति में गया।

इस प्रकार आपस में और भी बातचीत हुई। आपका और उस दिव्यात्मा से एक प्रकार से एकाकी भाव सा जुड़ गया। जैसे ही आप (सागर) रेलवे स्टेशन को पार करते वैसे ही वह दिव्य आत्मा आपके सामने आ जाती। आपके और उस दिव्यात्मा के बीच कुछ देर संवाद होता। फिर दिव्यात्मा अपने स्थान की ओर प्रस्थान कर देती तथा मुनिश्री अपने कार्य को सम्पन्न कर वापस घर लौट जाते।

मांगीलालजी का अविश्वास

आप (श्रमण सागर) बर्हिभूमि की और नित्य जाते। आपके साथ यदा-कदा अमीचंदजी भी जाते थे। एक दिन आप दोनों सुबह नित्य क्रम के लिए रवाना हुए। रेल्वे स्टेशन को पार किया व आपका उस दिव्यात्मा से वार्तालाप प्रारम्भ हो गया। अमीचंदजी ने आपको अकेले हवा में बाते करते देख पूछ लिया—भाईजी! आप किससे बातें कर रहे हैं। तब मुनिश्री ने कहा—कुछ नहीं कुछ नहीं.....ऐसा कह बात को टाल दिया।

अमीचंदजी ने इस प्रकार बातें करते हुए आपको फिर एक दो बार और देख लिया। उन्होंने मांगीलालजी से आपकी शिकायत करते हुए कहा—सागर भाईजी पागल हो गये हैं। मैंने कई बार देखा है वे

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अकेले ही बात करते रहते हैं।

मांगीलालजी ने सागरमलजी को बुलाया व डांटते हुए पूछा—बाहर जाता है तब अकेला किस से बात करता है?

सागरमलजी ने सारी स्थिति अपने बड़े भाई के सामने रख दी। मांगीलालजी ने भावावेश में डांटा व कह दिया—मरने के बाद कोई नहीं आता। ये सब झूठी बातें है। चुपचाप जाओ और चुपचाप वापस आ जाओ।

मांगीलालजी का अनुशासन बहुत कड़ा था और वे भूत, प्रेत, दिव्यात्मा आदि क्रियाकाण्डों में विश्वास तनिक भी नहीं रखते थे। उन्होंने सारगमलजी को कड़ा उलाहना दिया।

विश्वास

अगले दिन सागरमलजी बर्हिभूमि की ओर जाने लगे। रेलवे स्टेशन को पार करते ही वही दिव्यात्मा आपके सामने प्रकट हो गयी। आपका उदास चेहरा देख उन्होंने पूछ लिया—आज उदास कैसे हो? सागरमलजी कल घटित घटना क्रम को बताते हुए कहा—यह बात है। उन्हें किंचित् मात्र भी मेरी बात पर विश्वास नहीं है। आप कोई ऐसी बात बताइये कि उन्हें विश्वास हो जाए?

दिव्यात्मा—कल बाजार में चने की दाल के भाव बढ़ेंगे तुम कहना आज यह दाल खरीद लो।

आपने कहा—ठीक है। ऐसा ही कहूंगा।

आप घर पहुंचे। मांगीलालजी को जाकर कहने लगे—कल चने की दाल के भाव बहुत बढ़ जाएंगे।

मांगीलालजी बोले—तू अभी छोटा है व्यापार करना तुझे आता नहीं है। आज भारी मात्रा में खरीद ले और कल यदि भाव घट गये तो एक साथ घाटा लगेगा।

आप सकुचाते हुए धीरे से बोले—कल आपने मेरी बात पर विश्वास

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

नहीं किया। आज उन्हीं ने मुझे बताया कि कल दाल के भाव बढ़ेंगे। आप मेरी बात पर विश्वास करें और एक बार दाल खरीदें। मांगीलालजी बोले—देख सागर! मुझे तो अभी भी विश्वास नहीं है पर तेरी बात रखने के लिए दाल खरीद लेता हूं।

दाल खरीद ली। अगले दिन दुकानें खुली। बाजार में दाल के भाव दुगुने हो गये। सागरमलजी के चेहरे पर मुस्कान थी व मांगीलालजी को विश्वास नहीं हो रहा था। उन्होंने मन ही मन सोचा—सागर! द्वारा कही बात तो सही निकल गयी फिर भी वे आपकी और उन्मुख हो बोले—सागर! खुश मत हो मैं अब भी तेरी बात पर विश्वास नहीं करता।

मांगीलालजी को आभ्यान्तर में तो विश्वास हो गया था पर बाह्य व्यवहार में उन्होंने उसे नहीं दर्शाया। उन्हें सागरमलजी के भीतर विलक्षणताएं प्रतीत होने लगी।

दिव्यात्मा द्वारा उद्‌बोधन

रोज की तरह रेलवे स्टेशन को पार करते ही दिव्यात्मा सामने आकर खड़ी हो गयी। आज वह दिव्यात्मा आपके जीवन में दिव्य ज्योति जगाने के लिए आयी थी। दिव्यात्मा आज आपको उद्‌बोधन देकर जीवन की दिशा बदलने के लिए आयी थी। वार्तालाप प्रारम्भ हुआ और दिव्यात्मा बोली—सागर! तेरे कारण मेरा कल्याण हुआ। अब मेरी इच्छा है तेरा भी कल्याण हो। समग्र संसार दुःख से आकीर्ण है। घर गृहस्थी में उलझ कर क्या करेगा। तू तो जैन साधु बन जा।

आप तत्काल बोले—नहीं! नहीं! मैं कोई साधु-वाधु नहीं बनूंगा।

दिव्यात्मा—देख तेरे भीतर योग की ज्योति जाग्रत है। तेरा भविष्य स्वर्णिम है। साधु बनकर निश्चिन्त होकर साधना करना।

आप बोले—मुझे तो साधु बनना ही नहीं। साधना तो मैं घर बैठे ही कर लूंगा।

दिव्यात्मा—साधु-साधु होता है गृहस्थ-गृहस्थ होता है। खैर कोई बात नहीं दो तीन दिन बाद तेरे सामने एक घटना घटेगी उससे तेरे अंतर्मन में

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्वतः वैराग्य हो जाएगा। यूं कह वह दिव्यात्मा अन्तर्धान हो गयी।

वैराग्य

उसी दिन की बात है—एक भिखारिन भीख मांगती हुई घूम रही थी। वह आपके घर के सामने से जा रही थी। तभी गाड़ी वाले ने उस भिखारिन को टक्कर मार दी। टक्कर लगते ही उसकी हड्डी टूट गयी। वह नीचे गिर गई व दर्द के मारे कहराने लगी। क्रन्दन करने लगी। पर उसको धीरज बंधाने कोई नहीं गया। यह हृदय विदारक दृश्य मुनिश्री ने अपनी आंखों से देखा। उस भिखारिन की बड़ी दयनीय स्थिति हो गयी थी। वह बीच सड़क से घिसटती हुई एक तरफ जाकर बैठ गयी। कोई उसे रोटी देता व कोई दूध आदि खाने-पीने की वस्तु देता। पर उसे अस्पताल कोई नहीं ले गया।

तीन दिन बड़ी कठिनाई से निकले, चौथे दिन सरकारी गाड़ी आई। वह जगह-जगह से कचरा उठाते हुए आ रही थी। वह भिखारिन जहां पर बैठी थी, वहां पर काफी कचरा था। उस कचरे के साथ-साथ उस जिन्दा भिखारिन को भी उठाकर कचरा गाड़ी में डाल दिया। वह चिल्लाती रही—मैं जिन्दा हूं, मैं जिन्दा हूं, बचाओ.....पर उन कर्मचारियों ने उसकी दयनीय पुकार को नहीं सुना। इस दृश्य को देख आप उद्‌बुद्ध हुए। आपके भीतर वैराग्य की ज्योति प्रदीप्त हो उठी। आपने अपने मन में सोचा—क्या यही संसार है?

सागरमलजी ने संसार की असारता को जान लिया था, आपने उसी क्षण संकल्प किया मैं दीक्षा स्वीकार कर आत्म-कल्याण करूंगा।

जयचंदलालजी का वैराग्य

आप (सागर) भागलपुर से रवाना हो लाडनूं आये। लाडनूं में संत-सतियों के पास जाना शुरू किया। दीक्षा लेने के भाव प्रकट किये। तत्त्वज्ञान, बोल, थोकड़े आदि सिखना आरम्भ किया।

आपके बड़े भाई जयचन्दलालजी को आपके वैराग्य की बात पता चली तो उनका मन भी दीक्षा लेने को उद्यत हो उठा। आप दोनों भाई धार्मिक अध्ययन करने लगे। तत्त्वज्ञान, बोल थोकड़े आदि सीखने लगे।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दोनों ही भाई अधिकांश समय धार्मिक प्रवृत्ति में व्यतीत करते।

मांगीलालजी का स्वप्न

जयचन्दलालजी, सागरमलजी वैरागी बन गये। यह बात भागलपुर में बैठे मांगीलालजी को पता चली। वे थोड़े चिन्तित हुए। सोचने लगे—साधु का जीवन बड़ा कठिन है। दोनों वैरागी बन तो गये है पर साधु जीवन की साधना को निभाना इन दोनों के लिए अत्यन्त कठिन है।

पर मांगीलालजी दूर बैठे क्या कर सकते थे। एक रात उन्हें स्वप्न आया। उन्हें स्वप्न में लाडनूं का घर दिखायी दिया। वे घर के अन्दर खड़े थे। घर के बाहर से शेरों का झुण्ड जा रहा था। जयचन्दलालजी व सागरमलजी शेर के झुण्ड के पीछे भागने लगे। मांगीलालजी ने आवाज लगाते हुए कहा—कहां जा रहे हो? वापस आ जाओ। जयचन्दलालजी बोले—भाईजी आ रहा हूं। पर सागरमलजी कुछ भी नहीं बोले व शेरों के साथ आगे बढ़ गये और वापस नहीं आये। इतने में मांगीलालजी का स्वप्न टूट गया। वे अपने स्वप्न के बारे में चिन्तन करने लगे। किन्तु स्वप्न का अर्थ उन्हें समझ में नहीं आया। पर कालान्तर में स्वप्न का प्रतिफल सामने आया—दीक्षा लेने के आठ साल बाद जयचन्दलालजी वापस आ गये और सागरमलजी स्वामी संयम पथ पर निरन्तर आगे बढ़ते रहे।

माता की आज्ञा

दोनों भाई नित्य संत-सतियों के पास जाते उनके पास तत्त्वज्ञान आदि सीखते। यह देख आपकी माताजी सोचती—अच्छा है दोनों के मन में धर्म के प्रति लगाव है। परन्तु उनको ये पता नहीं था कि ये दोनों वैरागी बन गये हैं और दीक्षा की तैयारी कर रहे हैं। दोनों भाईयों ने भी कभी अपनी मां को यह ज्ञात नहीं होने दिया कि हमारे मन में दीक्षा लेने की भावना है। आप दोनों भाईयों ने संतों से निवेदन करते हुए कहा—हम इसी चतुर्मास में दीक्षा लेना चाहते है। हमारा जन्म स्थल तो है ही और दीक्षा स्थल भी बन जाएगा।

संतों ने कहा—दीक्षा से पहले मां की आज्ञा आवश्यक है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दोनों भाईयों ने निवेदन करते हुए कहा—महाराज! आपको तो सारी बात पता है आप इस विषय में उनसे ही पूछ लीजिए।

संतों ने कहा—ठीक है हम तुम्हारी मां से बात करने का भाव रखते है।

दोपहर की बात है आप दोनों संतों के पास बैठे थे। सामायिक के अंतर्गत स्वाध्याय कर रहे थे। उस समय आपकी मातुश्री धापूदेवी आयी। संतों को वंदना कर जैसे ही उठने लगी तो संतों ने पूछा—सामायिक करती हो?

वे बोली—हां महाराज।

संतों ने पूछा—सामायिक व्रत है। व्रत से भी ऊपर महाव्रत है और महाव्रत की आराधना करने वाला भाग्यशाली होता है।

वे बोली—महाराज हम तो व्रत की आराधना कर सकते है महाव्रत की आराधना तो भाग्यशाली ही कर सकता है।

संतों ने पूछा—यदि तुम्हारे घर में दीक्षा लेने को कोई तैयार हो तो तुम उन्हें मना नहीं करोगी?

आपकी माता ने सोचा—मेरे पुत्र दीक्षा ले यह तो संभव नहीं है अतः उन्होंने कहा—यदि मेरे घर में से कोई दीक्षा ले तो मैं उन्हें मना क्यों करूंगी।

संतों ने कहा—अच्छा त्याग करो मेरे घर में से कोई दीक्षा ले तो मैं मना नहीं करूंगी।

सरल भद्र मां ने दोनों हाथ जोड़ कर मना करने के त्याग कर दिये। वे आप दोनों के वैराग्य व दीक्षा लेने की भावना से अनभिज्ञ थी।

संतों ने रहस्य उजागर करते हुए कहा—तुम्हारे दोनों पुत्र दीक्षा लेने को तैयार है।

मां ने पूछा—कौन?

संतों ने कहा—तुम्हारे पांच पुत्र हैं। इनमें से जयचन्दलाल व सागरमल दीक्षा लेने के लिए उद्यत है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आप दोनों को आपकी मां अनिमेष दृष्टि से देखने लगी। अब वे चाहकर भी दीक्षा लेने के लिए दोनों को मना भी नहीं कर सकती थी। धापूबाई बोली—महाराज! दीक्षा ले मुझे खुशी है पर इस कठिन मार्ग पर चलना इन दोनों के लिए बड़ा कठिन है। दोनों भाई एक साथ बोले—हम कठिन मार्ग पर चलने के लिए तैयार है।

संतों ने पूछा—अब ये दीक्षा ले सकते हैं?

मां ने कहा—मना करने के मैंने त्याग कर दिये हैं। यदि ये दीक्षा ले तो मेरी मनाही नहीं। पर दीक्षा लेने के बाद ऐसा काम करे कि शासन का नाम रोशन हो।

मां की आज्ञा मिलते ही दोनों भाई खुश हो गये।

एक दिन दोनों वैरागी भाई अपने परिवार के साथ परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी के पास गये। पूज्यश्री को वंदन कर ज्ञातिजनों ने दीक्षा की आज्ञा प्रदान करने के लिए अर्ज की। संतों ने आचार्यश्री को सारी जानकारी दी।

परम पूज्य गुरुदेव ने फरमाया इस चतुर्मास में कार्तिक बदी ८ को दीक्षा देने का भाव है।

दीक्षा की आज्ञा मिलते ही दोनों ही भाईयों के चेहरे विकस्वर हो उठे।

दीक्षा की आज्ञा मिलने के पश्चात् दोनों भाइयों का वरनोला निकाला जाने लगा।

दीक्षा

दीक्षा ग्रहण करना अर्थात् दूसरा जन्म होना। जो अपनी अर्थी के उठने से पहले जीवन का अर्थ समझ ले वह आत्मार्थी होता है और वह आत्मार्थी दीक्षार्थी बनकर अपने समग्र जीवन को त्याग, वैराग्य में लगा कर परम को प्राप्त करने की चेष्टा करता है। भौतिक जीवन में तो सभी जीते हैं पर आध्यात्मिक जीवन जीने के लिए चरणन्यास, प्रयास और अभ्यास करना अपने आपमें एक बड़ी बात है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आज दोनों भाई संयम पथ पर आरूढ़ हो मुनित्व स्वीकार करने वाले थे। तेरापंथ में आचार्य भिक्षु की मर्यादा बनी हुई है—मुमुक्षु नौ तत्त्व को सीखकर मुनित्व स्वीकार करें, अन्यथा नहीं।

सभी दीक्षार्थियों के चेहरों पर परम प्रसन्नता थी। परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी चिमनीरामजी बैद के नोहरे में पधारे। विशाल जन सभा के बीच जैन भागवत दीक्षा का शुभारम्भ हुआ। सभी दीक्षार्थियों को दीक्षा प्रदान की गई। मुमुक्षु सागर से आप मुनिश्री सागरमलजी बन गये।

सागरमलजी स्वामी कई बार फरमाया करते—मैंने तो जिस दिन दीक्षा ली उस दिन से ही अपना रजोहरण स्वयं प्रतिलेखन शुरू कर दिया।

पांच वर्ष

सागरमलजी स्वामी ने दीक्षा लेने के पश्चात् पहला चतुर्मास गुरुदेव के साथ किया। उसके बाद पांच चतुर्मास अन्य संतों के साथ किये इन पांच वर्षों के कुछ प्रसंग इस प्रकार हैं—

सागरमलजी स्वामी कई बार अपने जीवन प्रसंग सुनाते हुए कहते—हमने वि.सं. २००१ का चतुर्मास डूंगरमलजी स्वामी के साथ दिल्ली किया। जयाचार्यश्री ने मुनि अवस्था में वि.सं. १८८९ का दिल्ली चतुर्मास किया था। उसके बाद एक सौ इग्यारह साल बाद हमें चतुर्मास करने का मौका मिला। चतुर्मास हमने एक तबेले में किया। एक तरफ गाय, भैंस रहती एक तरफ घोड़े बंधते और हम बीच में एक छप्परे के नीचे बैठते। वहीं पर लोग आकर बैठ जाते और उनको हम व्याख्यान सुनाते, तत्त्वचर्चा करते।

पंजाब यात्रा के प्रसंग बताते हुए मुनिश्री बताते—पंजाब यात्रा में हमें आहार-पानी भी सुगमता से नहीं मिलता। हम एक गांव में गये वहां पर हमें साढ़े तीन बजे तक पीने का पानी भी नहीं मिला। उस यात्रा में ऐसे अनेकों प्रसंग आये। एक बार हमको पीने का पानी मिल गया। हमने दोपहर में विहार किया। बीच में खेत आया उसके चारों तरफ बाड़ लगी हुई थी। दो संतों ने बाड़ पार कर दी। अब मेरा नम्बर था। मेरे हाथ में पानी की पात्री

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

थी। मैं पानी की पात्री सामने वाले संतों को दे रहा था कि एक पल्ला छूट गया और जो पानी बड़ी ही मशक्कत करने पर हमें मिला था वह पलक झपकते ही सारा बह गया। उस दिन हमें प्यासे ही दिन गुजारना पड़ा। चातुर्मास में अलबत्ता हमें आहार-पानी मिल जाता। हम रोटी को छाछ से लगा लगाकर खाते। हम लोगों को समझाते, उन्हें कहते—रात को कथा होगी एक बार जरूर सुनना तुम्हें आनन्द आयेगा।

सागरमलजी स्वामी ने पंजाब यात्रा में बहुत कष्ट सहन किये। पर अनेकों-अनेकों लोगों को समझाया।

भाईजी महाराज की सेवा में

दो चातुर्मास मन्नालालजी स्वामी के साथ सागरमलजी स्वामी ने पंजाब में किये। पंजाब यात्रा के बाद परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी के दर्शन किये।

आचार्यश्री तुलसी ने महत्ती कृपा कर सागरमलजी स्वामी को भाईजी महाराज की सेवा में नियुक्त किया। आप प्रथम दिन से ही भाईजी महाराज की सेवा समर्पित भाव से करने लगे। मुनिश्री इंगित-आशय को समझ तदनुरूप कार्य करने लगे। विनीत शिष्य उसे ही कहते है जो गुरु व रत्नाधिक मुनियों के इंगित आकार को समझ कर उनके प्रत्येक कार्य को संपादित करता है। सागरमलजी स्वामी इगियांकार सम्पन्न मुनि थे।

भाईजी महाराज की सेवा में मुनिश्री काया की छाया की भांति रहते। भाईजी महाराज गोचरी करते, पगलिये करने पधारते, दर्शन देने जाते, बर्हिभूमि जाते, जन-सम्पर्क के लिए पधारते, निरीक्षणार्थ पधारते तब-तब सागरमलजी स्वामी सदैव सेवा में तत्पर रहते।

सागरमलजी स्वामी की सेवा से भाईजी महाराज बहुत प्रसन्न रहते।

श्रमण नाम का प्रादुर्भाव

आचार्यश्री तुलसी का युग था। उस समय अनेकों परम्पराएं चलती थी। आज भी चलती है। कई परम्पराओं में शोधन हो चुका है और बहुत सी यथावत् चल रही है। उनमें से एक परम्परा थी लेखपत्र की। यह

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

परम्परा श्रीमज्जयाचार्य श्री के युग में शुरू हुई थी। इस परम्परा का आविर्भाव सूझबूझपूर्वक किया गया। आचार्य भिक्षु ने संघ की एकता अखण्डता को बरकरार रखने के लिए मर्यादाओं का निर्माण किया। विनीत साधु-साध्वियों ने उन मर्यादाओं को प्राणर्पण से पाला। तेरापंथ की मर्यादाओं का वाचन प्रायः मास में दो या एक बार होता। परन्तु मर्यादाओं का प्रतिदिन स्मरण हो इसलिए लेख पत्र का निर्माण आचार्यों ने किया। साधु-साध्वियां गुरुदेव के सम्मुख लेखपत्र का उच्चारण करते व दिन में स्वीकृति स्वरूप अपने हस्ताक्षर करते। ये पन्ने कोटवाल के पास रहते। यदा-कदा आचार्यवर उन पन्नों को मंगाकर देखते जिनके हस्ताक्षर नहीं होते उन्हें दंड मिलता।

सागरमलजी स्वामी हमें सुनाया करते थे—एक ही दिमाग के हम कई साधु बैठे थे। एक प्रसंग चल पड़ा हम हस्ताक्षर करते है तब मुनि क्यों लिखते हैं? एक संत बोले—मुनि तो वह होता है जो मौन करता है। मैं तो अब मुनि नहीं लिखूंगा। ऋषि लिखने का विचार है क्योंकि भारतीय परम्परा ऋषि प्रधान रही है। तब दूसरे ने कहा—हम साधक है इसलिए हमें साधु लिखना चाहिये। तीसरे ने कहा—साधु है यह तो सब जानते है हमें तो आत्मा को जानना है इसलिए मैं तो महात्मा लिखूंगा। अब मेरा (सागरमलजी) नम्बर आया। मैं सीधे छोगमलजी चौपड़ा के पास गया। उन्हें सारी बात बताई उन्होंने मुझे आधार बताते हुए कहा—आप श्रमण लिखें। मैं वापस आया व सब संतों को कहा—हम श्रमण भगवान महावीर की परम्परा के है। इसलिए मैं श्रमण लिखूंगा। सभी संतों ने अपने विचारानुसार वैसे ही हस्ताक्षर किये।

एक दिन हस्ताक्षर वाले कागज आचार्यश्री तुलसी ने मंगवाये और देखा कि किसी ने ऋषि लिख रखा है तो किसी ने साधु, महात्मा और श्रमण। आचार्यश्री ने उन चारों ही संतों को याद किया। चारों ही संत पूज्यश्री की सेवा में उपस्थित हो गये। आचार्यवर ने हस्ताक्षर वाले पन्ने को दिखाते हुए पूछा—यह क्या लिख रखा है?

चारों ही संतों ने ऐसा लिखने का कारण बताया। सागरमलजी स्वामी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

का नम्बर आया उन्होंने कहा—छोगमलजी चोपड़ा को मैंने पूछा तो उन्होंने मुझे श्रमण लिखने के लिए कहा। आचार्यवर ने छोगमलजी चोपड़ा को याद किया।

छोगमलजी चौपड़ा अच्छे तत्त्वज्ञानी व माने हुए श्रावक थे। उनके आते ही आचार्यश्री ने पूछा—सागर को श्रमण लिखने के लिऐ क्यों कहा?

छोगमलजी चोपड़ा बोले—गुरुदेव! हम श्रमण भगवान महावीर की परम्परा के है अतः श्रमण ही है। इन्होंने श्रमण लिखा यह तो न्याय संगत है।

आचार्यश्री सागर मुनि की ओर उन्मुख होकर बोले—सागर तेरे वकील की बात सटीक है। बाकी सभी संत मुनि लिखें। और तू श्रमण लिख सकता है।

सागरमलजी स्वामी केस जीत गये। उन्होंने उसी दिन से लिखना प्रारम्भ किया—'श्रमण सागर' और ऐसे हो गया श्रमण नाम का प्रादुर्भाव।

गौरांजी थारो भाई

साध्वी गोरांजी पात्री रंगकर लाई। वह पात्री बहुत ही सुन्दर थी। उन्होंने वह पात्री भाईजी महाराज को भेंट की। संतजन उस पात्री को विविध कार्यों में उपयोग लेने लगे। एक दिन सागरमलजी के हाथ से वह पात्री नीचे गिर गयी व खंडित हो गयी। भाईजी महाराज को ज्ञात हुआ तो उन्होंने सागरमलजी स्वामी को उपालम्भ दिया। जब साध्वी गौरांजी आयी तब भाईजी महाराज ने विनोदी लहजे में दो दोहा फरमाया—

बड़ो कुमाणस सागरियो, गोरांजी! थांरो भाई।
बाई! इनै समझाओ तो, मने हुवै सुखदाई।।
देखो फोड़ी नूई पातरी, थोड़ो-सो चिमठाओ।
भलै आदमी मैं कद आसी, अक्कल मनै बताओ।।

साध्वी गौरांजी ने सागर मुनि की ओर से नरमाई करते हुए कहा—भाईजी महाराज! ये बच्चे है, बच्चों से तो गलती हो जाती है। आप महान है कृपा कर यह पात्री मुझे दिराये मैं इस पात्री को वापस ऐसा रंग दूंगी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कि पता ही नहीं चलेगा यह खंडित है।

साध्वी गोरांजी की विनम्रता और भाईजी महाराज की सहानुभूति देख सागरमलजी स्वामी अभिभूत हो गये। मुनिश्री ने चिन्तन किया—मेरी थोड़ी सी असावधानी के कारण भाईजी महाराज को फरमाना पड़ा। साध्वीश्री को पात्री सुधारने के लिए फिर से श्रम करना पड़ेगा। अब मुझे प्रत्येक कार्य में सावधानी रखनी चाहिये।

पहला प्रवचन

वि.सं. २००५ का चतुर्मास भाईजी महाराज ने जयपुर किया। एक दिन भाईजी महाराज ने कहा—सागर! प्रवचन शुरू कर। मुनिश्री को पहले कभी प्रवचन देने का काम पड़ा नहीं था। पहला-पहला अवसर था। आप जैसे-तैसे हिम्मत कर प्रवचन पंडाल में पधारे। जयपुर की विशाल परिषद देखते ही आपके हाथ पैर कांपने लगे। हिम्मत कर बोलना शुरू किया—

णमो अरहंताणं।
णमो सिद्धाणं।
णमो आयरियाणं।
णमो.....

और मुनिश्री भूल गये मुझे आगे क्या बोलना है। तत्काल भाईजी महाराज पधारे। उन्होंने प्रवचन देना प्रारम्भ किया।

सागरमलजी स्वामी फरमाया करते थे—मैं सोचता व्याख्यान देना आसान काम है पर पहली बार मुझे महसूस हुआ कि प्रवचन देने से पहले पूर्व तैयारी होना अतिआवश्यक है।

उस चतुर्मास में मुनिश्री ने अभ्यासपूर्वक अनेकों बार प्रवचन दिया।

कौन से गच्छ के हो

परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी गुजरात पधारें। कच्छ रापड़ का प्रसंग है—सागरमलजी स्वामी बैठे थे तभी एक मन्दिरमार्गी श्रावक आया व आपके पास में बैठ कर वार्तालाप करने लगा। प्रसंगवश उन्होंने आपसे पूछा—महाराज आप कौन से गच्छ के है?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मुनिश्री ने पहली बार यह प्रश्न सुना था। आपने सीधा उत्तर देते हुए कहा—हम गच्छवासी नहीं है। हम तेरापंथी है।

वह भाई बोला—महाराज! बिना गच्छ के साधु को रहना कहां है?

भाईजी महाराज ने आपको इशारा किया व आप तत्काल संभल गये आपने कहा—हम सुधर्मा गच्छ के है।

आपका उत्तर सुन वह भाई प्रसन्न हो गया।

महामूर्ख

मुनि हीरालालजी स्वामी (आमेट) बड़े ही त्यागी वैरागी संत थे। प्रायः अभिग्रह ग्रहण करते व अभिग्रह पूर्ण होने पर आहार करते। एक दिन उन्होंने अभिग्रह ग्रहण किया—'मुझे कोई महामूर्ख कहे तो पारणा करना अन्यथा नहीं।'

आज का अभिग्रह अजीब-सा था। अब देखना यह था कि मुनिश्री का अभिग्रह कैसे फलता है।

संत जनों ने मुनिश्री को नाना प्रकार की वस्तुएं ग्रहण करने के लिए कहा। पर उनका अभिग्रह पूर्ण नहीं हुआ। संतों ने अनेक वस्तुओं के नाम लिये पर उनका अभिग्रह फला नहीं। संतों ने खूब प्रयत्न किया पर सफलता नहीं मिली। आखिर सफलता मिले तो भी कैसे? उन्हें तो कोई महामूर्ख कहे तब अभिग्रह पूर्ण हो।

संतजन मुनिश्री के अभिग्रह को पूर्ण करने कि चेष्टा कर रहे थे। इतने में सागरमलजी स्वामी पधारे। उन्होंने सारी स्थिति का जायजा लिया। फिर सोचने लगे—गुण गान तो संतों ने बहुत कर लिये अब तो सीधे शब्दों में बात करनी चाहिए। आप हीरालालजी स्वामी के पास गये और बोले—यह क्या महामूर्खों जैसा अभिग्रह कर रखा है?

भाईजी महाराज ने आंख दिखाते हुए कहा—सागर! रत्नाधिक संतों को ऐसा नहीं बोलते पर इतने में हीरालालजी स्वामी बोले—पारणा कराओ।

संतों ने पूछा—आपका अभिग्रह पूर्ण हो गया?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

हीरालालजी स्वामी बोले—आज मैंने अभिग्रह किया कि कोई मुझे महामूर्ख कहेगा तो ही पारणा करूंगा।

भाईजी महाराज आदि संत आपको विस्मित होकर देखने लगे। हीरालालजी स्वामी का अभिग्रह पूर्ण हुआ व संतों का अनुग्रह सागरमलजी स्वामी पर बरसने लगा।

सागरमलजी स्वामी की उपज अजब थी। वे समय-समय पर अपनी मनीषा का उपयोग कर उलझे हुए तथ्यों को सुलझा दिया करते।

डेढ़ और डेढ़

बम्बई मेरीन लाईन का प्रसंग है—सागरमलजी स्वामी के पास महेशदासजी प्रोफेसर आये। मुनिश्री ने उन्हें तेरापंथ एकता के बारे में विशेष रूप से अवगत कराया। उन्होंने मुनिश्री को कहा—मैं छात्रों को गणित पढ़ाता हूं और आपसे गणित का प्रश्न पूछना चाहता हूं।

सागरमलजी स्वामी ने कहा—प्रोफेसरजी! मैं साढ़े तीन क्लास फेल हूं। मैं विशेष पढ़ा-लिखा नहीं हूं। आप यदि गणित का सवाल पूछना ही चाहते हो तो पूछ लीजिए?

प्रोफेसर ने पूछा—महाराज! डेढ़ और डेढ़ कितने होते है?

मुनिश्री ने कहा—इक्कीस।

प्राफेसर जी गंभीर हो गये व बोले—महाराज! आपने बिलकुल ठीक उत्तर दिया। ये प्रश्न मैं डिग्रीधारी छात्रों को भी पूछ चुका हूं पर वे प्रश्न का सही उत्तर कभी नहीं दे पाये। उल्टा मुझे ही भला-बुरा कह देते। मुनिश्री हो सकता है आप साढ़े तीन क्लास फेल हो पर किसी प्रोफेसर से आपका ज्ञान कम नहीं है।

प्रोफेसरजी आगे बोले—छात्र लोग अपनी बुद्धि से ठीक उत्तर देते पर मेरे प्रश्न को समझ नहीं पाते। यदि मैं उनसे पूछता—डेढ़, डेढ़ कितने होते हैं और वे तीन कहते तो उनका उत्तर ठीक होता। पर मैं उनसे पूछता डेढ़ और डेढ़ कितने होते हैं। वे मेरे प्रश्न में छुपे रहस्य को समझ नहीं पाते तब सीधा तीन कह देते। सागरजी महाराज क्या आप मेरे रहस्य को समझे?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मुनिश्री ने कहा—मैं आपके रहस्य को समझ गया।

प्रोफेसर—क्या समझे?

मुनिश्री ने कहा—यदि हम अपने भाई को अपने से छोटा मानेंगे तो वह तो डेढ़ डेढ़ तीन हो जाएंगे। और अपने भाई को डेढ़-डेढ़ की तरह बराबर रखकर मानेंगे तो इक्कीस हो जाएंगे।

मुनिश्री की सटीक व्याख्या सुन प्रोफेसर जी प्रभावित हो गये।

भाईयों में यदि परस्पर प्रेम है दोनों एक दूसरे का सम्मान करते है बड़ा भाई छोटा भाई को अपने सम मानता है तो वे दो होकर भी सौ के बराबर है। इसके विपरीत अगर उनकी मानसिकता है तो वे सदा ही दो ही रहेंगे।

स्वामीजी के दर्शन

तेरापंथ धर्मसंघ में तीन महोत्सव विशेष रूप से मनाये जाते हैं। पहला भिक्षु चरमोत्सव, दूसरा मर्यादा महोत्सव और तीसरा पट्टोत्सव।

भिक्षु चरमोत्सव आचार्य भिक्षु के निर्वाण दिवस के रूप में भाद्रव शुक्ला त्रयोदशी को मनाया जाता है। आचार्य भारमलजी व रायचंदजी के युग में संभवतः भिक्षु स्मृति की जाती होगी पर महोत्सव के रूप में नहीं मनाया जाता था। तेरापंथ के चतुर्थ पट्टधर जयाचार्यश्री ने भिक्षु चरमोत्सव मनाने की स्वस्थ परम्परा प्रारम्भ की। पर किस संवत् में यह परम्परा चालू हुई कहा नहीं जा सकता। किन्तु जयाचार्यश्री की महोत्सव की ढालों (गीतों) को देखकर कहा जा सकता है कि भिक्षु चरमोत्सव वि.सं. १९१३ या १९१४ में प्रारम्भ हो गया था। वि.सं. १९१३ उषा काल रहा होगा क्योंकि जयाचार्यश्री पहले परीक्षण करते फिर स्थिरीकरण (लागू) करते अतः १९१४ में भिक्षु चरमोत्सव विधिवत् रूप से मनाना आरम्भ हो गया था। भिक्षु चरमोत्सव के दिन आचार्य भिक्षु के महान आदर्शों को दृष्टिगोचर किया जाता है। अपने आद्य प्रणेता के गुणानुवाद किये जाते है। उनकी शिक्षाओं को आत्मसात करने की विशेष रूप से प्रेरणा दी जाती है। पूरे धर्मसंघ में इस उत्सव को बड़े ही उल्लास के साथ मनाया जाता है।

जयाचार्यश्री ने चौबीस महोत्सव मनाएं। मघवागणी, माणकगणी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

और डालगणी के युग तक अनवरत चरमोत्सव मनाते रहे। कालूगणी का युग प्रारम्भ हुआ पर वे अपने वरतारे का प्रथम भिक्षु चरमोत्सव नहीं मना सकें क्योंकि भाद्रव सुद बारस के दिन डालगणी का देवलोकगमन हो गया था। अगले ही दिन भादवा सुद तेरस थी। उस स्थिति में चरमोत्सव का कार्यक्रम नहीं हो पाया।

फिर प्रत्येक भिक्षु चरमोत्सव कालूगणी ने मनाएं। आचार्यश्री तुलसी का युग आया। वि.सं. २००८ का आचार्यश्री तुलसी ने दिल्ली चतुर्मास किया। चतुर्मास में विविध कार्यक्रमों का आयोजन होने लगा। उसी क्रम में भिक्षु चरमोत्सव आया। सभी के मन में अतुल उमंग व उल्लास था। पर वृष्टि आरम्भ हो गयी और आचार्यवर प्रवचन पंडाल में नहीं पधार सकें। फिर चिन्तन किया गया कि दोपहर में चरमोत्सव का कार्यक्रम मना लेंगे। परन्तु दोपहर में फिर बरसात शुरू हो गयी। तब निर्णय लिया गया, शाम को चरमोत्सव मनायेंगे। वर्षा का क्रम शाम को भी जारी रहा। आचार्यश्री शाम को भी पधार नहीं सके। अतः चरमोत्सव का आयोजन नहीं हुआ।

भाईजी महाराज सोचने लगे—हे! भिखू स्याम आज शाम तक भी हम तेरा महोत्सव नहीं मना सके। हम से ऐसी क्या गलती हो गयी ? वे अपने प्रश्न का समाधान पाने के लिए स्वामीजी के जाप में संलग्न हो गये।

विश्राम का समय हुआ। सभी संत सो गये। पर भाईजी महाराज जाप करते रहे। जाप चढ़ता गया। तल्लीनता बढ़ती गयी। भावों की श्रेणी वर्धमानता की और बढ़ने लगी। अर्ध रात्री की वेला प्रारम्भ हुयी। भक्त की भक्ति ने इंद्रासन को प्रकंपित कर दिया। महामहिम आचार्य भिक्षु भाईजी महाराज को दर्शन देने आयें। आचार्य भिक्षु ने भाईजी महाराज से उनके मन की बात पूछी। पास में सो रहे सागरमलजी स्वामी को जगाते हुए भाईजी महाराज ने कहा—सागर! देख स्वामीजी। सागरमलजी स्वामी उठे। उन्होंने भी स्वामीजी के दर्शन किये। आचार्य भिक्षु को सांगोपांग निहारते हुए पूछा—क्या आप स्वामीजी है ? स्वामीजी ने सागरमलजी स्वामी के सिर पर हाथ रखते हुए कहा—इसमें क्या शंका करता है ?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्वामीजी के दिव्य स्वरूप को मुनिश्री देख रहे थे कि स्वामीजी अंतर्ध्यान हो गये।

भाईजी महाराज ने फरमाया—सागर! अब सोना नहीं है। अब तो स्वामीजी पर गीत लिखना है। भाईजी महाराज ने सागरमलजी स्वामी को भाव व लय बता दी और फिर मुनिश्री ने गीत बना दिया। गीत इस प्रकार है—

स्वामीजी म्हांनै दरसण दीन्हांजी

दरसण दीन्हां प्रेम स्यूं, म्हारै माथै पर धर हाथ,
स्वामीजी म्हांनै दरसण दीन्हाजी।।
सांवली सूरत सोवणी, तपुं-तपुं करतो ललाट।
काजलिया प्यालां जिसी, आंख्यां करै पल्लाट।।१।।

कानां केश सुहावणा, लम्बी लम्बी लहराती लोल।
एकल भूहां भंवर सी, चंदै सो चहरो गोल।।२।।

लम्बो कद, लम्बी ग्रिवा, लम्बा-लम्बा गोडां तांइ हाथ।
तीखी-तीखी लम्बी-लम्बी आंगल्यां, हथेल्यां हींगलू री जात।।३।।

भरवां अग-अग भलकतो, चूड़ी उतार शरीर।
सीनो बबर्ची शेर सो, मुद्रा मृदु गंभीर।।४।।

मुखड़ै ओपै मुंहपती, खांधै पर ओगो सुरंग।
झोली डावा हाथ में, मलपती चाल मतंग।।५।।

उभर्यां पगां री चलकती, नख-द्युति अजब अमीर।
क्यूं रै? कह्यो स्वामी मुलकता, खुलग्या म्हांरा तकदीर।।६।।

आठे सुध तेरस भाद्रवी, मेह अंधारी रात।
'चम्पक' विरधी भवन में, सपनै में सपने सी बात।।७।।

लय—जगत सपने री माया रे.....

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अगले दिन भाईजी महाराज व सागरमलजी स्वामी ने आचार्यश्री तुलसी को गीत सुनाया।

पीरजी

वि.सं. २००८ का प्रसंग है। गुरुदेव तुलसी लाडनूं विराज रहे थे। उस ठिकाणे में पीरजी की कब्र है। रात के समय पीरजी ठिकाणे में घूमते रहते है। एक दिन गुरुदेव तुलसी दूसरे स्थान पर पधारे। मुनिश्री व एक अन्य साधु को वही रहने का निर्देश मिला। दूसरे मुनि का नाम था—मुनि मंगलचन्दजी। रात को सोने का समय हुआ। मुनिश्री ने मंगलचन्दजी से कहा—सुना है रात को पीरजी यहा आते है। मेरी आकांक्षा है मैं पीरजी को देखूं। मंगलचन्दजी ने कहा—मेरी भी इच्छा यही है। अपने अभीष्ट को पूरा करने के लिए मुनिश्री पीरजी जिस रास्ते से आते थे उस रास्ते में कंबल बिछा कर सो गये। मुनि मंगलचन्द सामने तिबारे में सो गये। रात्रि में पीरजी आये उन्होंने मुनिश्री को रास्ता रोके हुए सोता देख कर कहा—मेरा रास्ता छोड़ दो। मुनिश्री ने आंखें खोली और देख कर कहा—दूसरा रास्ता है उधर से चले जाओ। दो-तीन बार कहने पर भी मुनिश्री नहीं उठे तो उन्होंने कड़क कर कहा—हुज्जत मत करो रास्ता छोड़ दो। मुनिश्री ने रास्ता छोड़ दिया और पीरजी चले गये। मुनिश्री तिबारे में गये मंगलचन्दजी को उठाया और कहा—देखो, देखो पीरजी जा रहे हैं। वे उठे तब तक वे ओझल हो गये थे।

कुछ समय पश्चात छत पर घोड़े के पैरों की पदचाप सुनाई देने लगी। मुनिश्री ने मंगलचन्दजी से कहा—सीढ़ियों में चलें वहां से शायद तुमको पीरजी दिखाई दे जाए। मंगलचन्दजी बोले—आगे आप पधारो पीछे में चलूंगा। मुनिश्री निर्भीक हो दो-तीन सीढ़ियां चढ़े ही थे कि मंगलचन्दजी वापस लौट गये।

मुनिश्री हमें बताया करते थे—पीरजी लम्बे चौड़े थे। हाथ में हुक्का, सफेद टोपी, सफेद कुर्ता, सफेद पजामा, गले में सफेद माला सब कुछ सफेद नितांत और सफेदी में से मैंने श्वेत प्रभा को निकलते हुए देखा।

कवि

कोई भी व्यक्ति जन्म से कवि नहीं होता है। संस्कारों का अर्विभाव

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

होने पर कवित्व का जागरण हो जाता है। सागरमलजी स्वामी को दीक्षा लिऐ एक वर्ष भी नहीं हुआ था तब की बात है। उस समय आपकी उम्र १६ वर्ष थी। परम श्रद्धेय आचार्यश्री तुलसी का पट्टारोहण दिवस आनेवाला था। सभी कवि-मुनिगण अपने-अपने उन्मुक्त भावों को छन्दों की सीमा में बांधने में संलग्न थे। कोई संत राग-रागनियां जमा रहे थे तो कोई आवर्तन-प्रवर्तन कर रहे थे। सागर मुनि सभी को देखते तो उनके मन में भी उमंग जागती मैं भी कुछ बोलूं। पर मुनिश्री कविता बनाना तो जानते नहीं थे। बोले तो क्या बोले ? मुनिश्री ने दो-चार कविजनों से विनम्र निवेदन करते हुए कहा—मुनिश्री मुझे भी कुछ बना कर देने की कृपा करें। संतों ने सीधा उत्तर देते हुए कहा—समय नहीं है।

इस रूखे से उत्तर को सुन मुनिश्री का मन भर गया। आशा निराशा में परिणिति हो गयी। उत्साह हतोसाहित हो गया। भावों में उद्वेलन होने लगा। मुनिश्री एकांत में जाकर बैठ गये सोचने लगे—मुझे कोई भी कविता, गीत बनाकर देने वाला नहीं है किसे कहूं—इस प्रकार के विचारों से उनका मन भर गया। आंखें भी भर आयी।

इतने में मुनिश्री के संसारपक्षीय बड़े भाई आये। उनका नाम था मुनि जयचंदलालजी। उन्होंने सागर मुनि को उदास व रुआंसा देख कारण जानना चाहा। सागर मुनि भीतर से भर चुके थे बस किसी के पूछने मात्र की देरी थी। उनके धैर्य का बांध फूट पड़ा। रोकने पर भी नहीं रूका। वे अपनी बात पूरी कह नहीं पायें। पर आधे अधूरे शब्दों में अपने मन की अथा, व्यथा और कथा कह डाली।

मुनि जयचंदलालजी ने कहा—सागर! मान ले आज तुझे कोई कविता बनाकर दे भी देगा पर कल.....? तेरी इतनी ही प्रबल इच्छा है तो स्वयं बनाना सिख। औरों का मुंह क्यों देखता है। घबरा मत, यह ले कागज पैन्सिल जैसा बने वैसे बनाने का प्रयास कर। शुरूआत में थोड़ी दिक्कत अवश्य आयेगी। जानते हो अपने हाथ की बनी हुई रोटी अधिक स्वादिष्ट होती है।

मुनिश्री कविता बनाने बैठे दसों-बीसों पंक्तियों को काटने के बाद

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

एक चरण बना। वह पहला चरण आपने जयचंदलालजी को दिखाया। उन्होंने कहा—बहुत ही सुन्दर है। मुनिश्री इस वाहवाही में फूल गये। उनका उत्साह सौगुना हो गया। उन्हें अपनी पहली सफलता पर आत्म गर्व हो रहा था।

जयचंद मुनि ने कहा—देखो तीन पंक्तियां और लिखो, तुम्हारा पूरा छन्द बन जाएगा। डरो मत बन जाएगा।

सागर मुनि अमित उत्साह के साथ रचना करने के लिए बैठे। गुरुदेव का स्मरण किया। दिन भर गुनगुनाते-गुनगुनाते सूर्यास्त तक चार पंक्तियां बन गई। मात्राएं अवश्य टूटती थी पर सागर मुनि को प्रसन्नता थी कि आखिर मैंने कविता बना ही ली।

आचार्यश्री के कार्यक्रम में अनेकों संत-सतियां बोले। उन बोलने वालों में से मुनिश्री का प्रथम नम्बर आया। उनकी कविता का अंतिम चरण इस प्रकार था—

'गागर में अमृत सागर भर, सागर को भवसागर तारो।'

पहला प्रयास। प्रथम सफलता ने उनके उत्साह को द्विगुणित कर दिया। फिर तो मुनिश्री को कविता बनाने का रस आ गया। मुनिश्री को लग्न क्या लगी वे तो तुक बंदि करने में संलग्न हो गये और आगे से आगे कविता बनती गयी। हर चौमासे में मुनिश्री अनुप्रासयुक्त कविता बनाते। उन्हें लोगों को, संतों को, कवि जनों को सुनाते और जब चातुर्मास सम्पन्न होता तब फाड़ देते। कवि अपनी कविताओं को फाड़ दे आश्चर्य है पर अधिकांशत वे कविताओं को फाड़ देते। कुछ वर्षों तक मुनिश्री ने ऐसा ही किया। फिर अपनी आदत में परिवर्तन किया। जो श्रेष्ठ कविता होती उसे सुरक्षित रखते।

कविता में दग्धाक्षर

आचार्यश्री तुलसी ने वि.सं. २०१२ का चतुर्मास उज्जैन में किया। सागरमलजी स्वामी को कविता बनाने का शौक तो था ही। मुनिश्री ने कार्तिक पूर्णिमा को एक कविता लिखी। कविता हृदय को छूने वाली थी।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मुनिश्री को भी अपनी कविता बहुत पसंद आयी। कविता को मुनिश्री दूसरी तीसरी बार पढ़कर झूम उठे। अब तक मुनिश्री ने जितनी भी कविताएं बनायी थी उनमें से श्रेष्ठ कविता बनी थी। इस कविता में मुनिश्री ने अनुप्रासों की झड़ी सी लगा दी। वह कविता शब्दों की दृष्टि से, भावों की दृष्टि से और लय छन्द की दृष्टि से भी सर्वोत्तम कविता थी। मानो वह कविता जीवन के सत्य को दर्शा रही थी।

सागर मुनि ने भाई सोहनलाल सेठिया के सामने अपनी कविता रखी। सोहनलालजी की काव्य शैली निराली थी। वे स्वयं प्रांजल कवि थे और हिन्दी के आशु कवि भी। तत्काल दिये गये विषय पर वे मार्मिक भाव में भावपूर्ण छन्द बोलने में माहिर थे। सागर मुनि की मानसिकता उनके साथ खूब जमती। मुनिश्री की कविता को पढ़ कर उनका चित्त प्रसन्न हो गया। कविता को उच्चकोटि की बताते हुए कहा—वाह! वाह! लखदाद है आपने क्या कविता बनायी है?

उसी दिन सायंकाल के समय सागर मुनि को बुखार चढ़ा। स्वास्थ्य धीरे-धीरे बिगड़ता गया। ज्वर कभी कम, कभी अधिक, बढ़ता चढ़ता रहता। साधु तो नदी की भांति एक गांव से दूसरे गांव विहार करते रहते है। गुरुदेव के साथ सागरमुनि भी विहार करते हुए बड़नगर पहुंचे। मुनिश्री को कमजोरी का अहसास होने लगा। बड़नगर से विहार कर ग्रामानुग्राम घूमते हुए जावरा पहुंचे। जावरा पहुंचते-पहुंचते मुनिश्री को १०६ डिग्री बुखार हो गया। आप बेहोश हो गये। घण्टों तक उपचार चला तब जाकर चेतना लौटी।

भाईजी महाराज के सामने बड़ी समस्या थी। एक ओर बुखार दूसरी ओर विहार। सागर मुनि को भाईजी महाराज पीछे छोड़ना भी नहीं चाहते थे और साथ में ले जाना भी उचित नहीं था। भाईजी महाराज आचार्यश्री के पास पहुंचे। विचार-विमर्श हुआ। सागर मुनि को जावरा ही छोड़ देने का निर्णय आया। भाईजी महाराज के मन में बहुत ऊहापोह हुआ। वे नहीं चाहते थे, सागर मुनि को अकेले पीछे छोड़ना और यह भी नहीं चाहते थे

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आचार्य प्रवर से स्वयं पीछे रहे। सागर मुनि के प्रति उनका अगाध वात्सल्य था। परन्तु परिस्थिति के सामने विवश थे।

भाईजी महाराज पधारे, सागर मुनि की नब्ज देखी और पूछा—अब कैसे हो?

सागर मुनि बोले—कमजोरी बहुत है।

भाईजी महाराज ने भूमिका बांधनी प्रारम्भ की। सागर मुनि आपके अभिप्राय को समझ गये। मुनिश्री ने सोचा—अब विहार करने की परिस्थिति नहीं है। शारीरिक सामर्थ्य जवाब दे रहा है। अपने लिये भाईजी महाराज को क्यों रोकूं। फिर मुनिश्री ने भाईजी महाराज को अर्ज करते हुए कहा—आप तो सुखे-सुखे गुरुदेव की सेवा में पधारो। मैं यहां दो-पांच दिन रुककर ठीक हो जाने पर आ जाऊंगा।

भाईजी महाराज ने सागर मुनि के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—सागर! दो-पांच दिन से कुछ नहीं होगा। साफ-साफ बात है। डॉक्टर, वैद्यजी और जतीजी ने आंत्र-ज्वर बताया है। तेरे मोती झरा उल्टा है। दाने पेट पर नजर आ रहे है। उलटा भाव सदा समय लिया करता है। तुम कोई विचार मत करना। तुम्हारे पास रहने के लिए सोहनलालजी (राजगढ़) और राजमलजी (आत्मा) को तो गुरुदेव ने आदेश फरमा दिया है। मेरी इच्छा है वसन्त या मणिलाल में से किसी एक को तुम्हारे पास और रख दूं। वे दोनों ही रहना चाहते हैं। जब से सुना है दोनों ही आग्रह कर रहे हैं। वह कहता है मुझे रख दो, और वह कहता है कि नहीं मैं रहूंगा। तुम्हें असुविधा न हो तो तुम मुनि मणिलाल को यहां रख लो। वह मन छोटा-छोटा करता है। तुम्हारे भी ठीक रहेगा। सागर मुनि को अशक्ति अधिक थी। वे कुछ बोलना चाहते थे। पर उससे पूर्व भाईजी महाराज ने सागर मुनि को रोकते हुए कहा—तुम बोलो मत। बोलने से जोर पड़ेगा। मैं जानता हूं तुम्हारी भावना। मेरा काम तो अकेले वसन्त से ही चल जाएगा। तुम मेरी चिन्ता छोड़ो।

सागर मुनि को खूब-बखूब आश्वासन दे, जतीजी को दवा-पानी की

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

व्यवस्था सौंप भाईजी महाराज ने विहार किया। मुनिश्री सहित चार संत जावरा में रुकें। जावरा जैनों का गढ़ है पर तेरापंथ का कोई एक परिवार भी वहां नहीं है। जैनों की बस्ती जो थी सब लगभग विरोध-प्रधान थी। उन दिनों मुनि सुशीलकुमारजी भी वहीं थे। वह भी एक युग था जब परस्पर में आंख से आंख भी नहीं मिलती थी। उस समय कुछ सम्प्रदाय के लोग मानों तेरापंथ को फूटी आंख से भी नहीं देखना चाहते थे। जैनों के वहां कई स्थान खाली पड़े थे। पर उनको देने के लिए कोई तैयार नहीं था। वहां कबूतर ठहरे तो आपत्ति नहीं, पर तेरापंथी संत ठहरे तो स्पष्ट रूप से मना था। सभी संत वैष्णव धर्मशाला में रूके थे। उन पर भी बहुत दबाव आये। स्थान खाली करा लेने को कहा गया। पर उस धर्मशाला का सम्बन्ध कलकत्ता से था। वह धर्मशाला कलकत्ते वालों के नाम से मशहूर थी। वहां पर एक कमरे में मुनिश्री ठहरे थे।

बुखार में नित्य उतार-चढ़ाव आते। मानसिक उतार-चढ़ाव भी सागर मुनि के चलता रहता। संत मुनिश्री का मन लगाते। भाईजी महाराज का जी तो था जावरा में और शरीर था आचार्यश्री के साथ यात्रा में। बार-बार आश्वासन के शब्द मिलते, पर सागर मुनि का मन नहीं लगता। बुखार, अशक्तता और बेचैनी के कारण उद्विग्नता दिन-प्रतिदिन बढ़ती गयी।

उस समय जैन युवक समरथमलजी आदि जो सर्वोदयी विचार धारा के थे, उन्हें जब सन्तों के बारे में पता चला कि तेरापंथी संत आये हुए हैं और एक संत काफी अस्वस्थ है तो वे आये तथा मुनिश्री की स्थिति देख उदास हो गये। समरथमलजी दूसरी बातों को भूल संतों की सेवा में संलग्न हो गये। वे रोज आते। घण्टों-घण्टों संतों की उपासना करते। वयोवृद्ध श्रावक जड़ावचन्द जी पगारिया भी बार-बार खबर लेते एवं पूछते रहते। वे पहले ही परिचय में संतों से बहुत प्रभावित हुए।

मुनिश्री सोहनलालजी व राजमलजी आपकी परिचर्या जागरुकतापूर्वक करते। औषध आदि समय पर देते। मुनि मणिलालजी आपके प्रत्येक कार्य करने में अपना सहयोग देते।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

श्रावक फकीरचन्दजी मणिलालजी स्वामी की बहुत सेवा करते।

सागर मुनि को लगा अब कुछ स्वास्थ्य लाभ हुआ है। अब विहार की तैयारी कर लेनी चाहिये। दिन में वह चिन्तन किया और रात को अचानक बुखार १०५ से गिरा और ९५ हो गया। मुनिश्री बेहोश हो गये। हाथ-पांव ठंडे पड़ने लगे। मुनि मणिलालजी क्रन्दन करने लगे। आपको महसूस होने लगा—सागर मुनि अब शायद नहीं बचेंगे। रात के दस बज रहे थे वहां कहां डॉक्टर! कहां वैद्य? कौन संभाले? धर्मशाला के बाहर एक दांतों के डॉक्टर थे। वे जाति से सिन्धी थे। वे प्रायः पानी भरने के लिए धर्मशाला में आते थे। संतों ने उनसे परिचय किया था। वे सज्जन व्यक्ति थे। यदा-कदा दिन में आते भी थे। कासीद ख्यालीलाल वहां गया व उन्हें सारी स्थिति बताई। वे भागे-भागे आये। आकर सागर मुनि को देखा। काम समाप्ति की ओर था। वे बोले—जैन मुनि रात को कुछ लेंगे नहीं, अब उपचार करूं भी तो क्या? एक काम करो सन्तो! कम्बल के टुकड़े से इनके हाथ-पैरों में गरमी पैदा करों। सन्तों ने वैसा ही किया। लगभग दो घंटे के प्रयास के बाद मुनिश्री होश में आये। मुनि मणिलालजी स्वामी ने लगभग पूरी रात जागरण में बितायी। दोनों संतों ने भी कहा—तुम सो जाओ पर वे नहीं सोये। सागरमलजी स्वामीजी ने भी कहा—मैं अब ठीक हूं तुम सो जाओ पर मुनि मणिलालजी नहीं सोये।

मुनिश्री की काल रात्रि व्यतीत हुई। वे मरते-मरते बच गये। अठारह दिन रूककर जब चलने फिरने लायक हुए, तो वहां से विहार हुआ। शारीरिक कमजोरी तो थी ही पर फिर भी मुनिश्री हिम्मत कर 'मर्यादा महोत्सव' के अवसर पर भीलवाड़ा पहुंच गये। आचार्यश्री के दर्शन किये। भाईजी महाराज भी आपकी राह देख रहे थे। आपको देखते ही आपके स्वास्थ्य के बारे में पूछा—सारी जानकारी ली। स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव जारी था। शारीरिक कमजोरी में भी मुनिश्री का आत्मबल मजबूत था। संतों के सहयोग से मुनिश्री आचार्यवर के साथ स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव होते हुए भी छापर पहुंचे।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

छापर में रात को उल्टी हुई। सागर मुनि बेचैनी की परवाह किये बिना दूसरे दिन आठ मील का विहार कर 'रणधीसर' पहुंचे। दिन भर जी घबराता रहा। लोंग गोली आदि दवाई दी पर विशेष आराम नहीं मिला। सायंकाल चार-पांच बजे के आस पास अचानक बेहोशी आ गयी। संतों ने सोचा नींद आयी होगी। भाईजी महाराज आहार करने पधारे। सागर मुनि को आवाज लगाते हुए कहा—उठ आहार कर लें। मुनिश्री तो बेहोश थे वापस कुछ उत्तर दिया नहीं।

सोहनलालजी स्वामी को भाईजी महाराज ने कहा—जाओ उसे उठाकर लाओ। सोहन मुनि आये। आपका हाथ पकड़कर बिठा दिया। ज्योंही हाथ छोड़ा सागर मुनि फिर लुढ़क गये। अब सबको पता चला। सागरमलजी बेहोश है। सेठ सुमेरमलजी आये। नब्ज देखी। स्थिति नाजुक थी। भाई को भेजकर पता लगाया पर दवा वाला बक्सा गाड़ी में चढ़ा दिया गया था। असूजती दवा काम नहीं आती, अब क्या किया जाये। संत गये कहीं से सत्य-जीवन और कुछ अर्क लाये। लौंग-सौंठ का अर्क और सत्य जीवन दुगुनी मात्रा में दिया गया। सूर्यास्त के आस पास सागर मुनि बेहोशी से होश में आये। सामने जेठ के रात की भयंकर गर्मी। सोहनलालजी स्वामी (चूरू) आदि संतों ने रात्रि-जागरण किया। सुबह तक सागर मुनि उठने लायक हुए। काल-रात्रि को पार कर मुनिश्री ने दूसरे दिन विहार किया। सागर मुनि के शरीर में अशक्तता थी। थोड़ी दूर तक तो अकेले चले। फिर दो संतों के कंधों का सहारा लेकर अपने पूरे शरीर के वजन को उनके ऊपर डाले, घसीटते पैरों से वह रास्ता तय किया। बार बार सत्य जीवन और अर्क का सेवन करते करते जैसे तैसे पड़िहारा पहुंचे।

सेठ सुमेरमलजी दूगड़ अपने नुस्खें आजमा रहे थे। उन्होंने आपको एक औषधि दी और फिर थोड़ी देर के बाद एक उल्टी हुई और मुनिश्री वापस बेहोश हो गये। संतों ने उठाकर बिछौने पर लिटाया। मकर ध्वज की मात्रा दी गयी, पर कोई असर नहीं हुआ। दिन भर उपचार चला। रात आयी। अब रोग ने नया मोड़ लिया। मुनिश्री को सन्निपात प्रारम्भ हो गया। हाथ-पांव में वाइंटे (ऐंठन) शुरू हो गये। आचार्यप्रवर दर्शन देने

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पधारे। छोटे संतों को आदेश देते हुए कहा—भक्तामर का पाठ सुनाओ। संत पाठ सुनाने लगे।

श्रावकों ने अपनी तैयारी प्रारम्भ की। विचार-विमर्श चला। अंदर ही अंदर अन्त्येष्टि क्रिया का खाखा जमाया। सेठ सुमेरमलजी नाड़ी हाथ में लिऐ बैठे थे। एक झटका आया है अगला देखें कि कितनी देर बाद आता है। बीसों लोगों ने रात जगाई। सभी के मन में धारणा थी सागर मुनि की रात निकले यह मुश्किल है। आयुष्य योग प्रबल हो तो आदमी मौत के मुख में से निकल कर वापस आ जाता है। सुबह हुई। सेठ सुमेरमलजी आये। वे काफी अनुभवी थे। उन्होंने मकर ध्वज की चौगुनी मात्रा एक साथ दिलवाई। मानो बुझते दीपक में तेल उड़ेल दिया हो। ज्योति जल उठी। सागर मुनि को लगभग बारह घण्टों के बाद होश आया। धीरे-धीरे मुनिश्री ठीक होने लगे।

गुरुदेव के साथ रतनगढ़ पहुंचे। वैद्य भगवती प्रसाद जी को दिखाया। वे कुशल वैद्य थे उनका निदान यथार्थ हुआ करता था। नवोदित वैद्य गोस्वामी धनाधीश की दवा प्रारम्भ हुई। न चाहते हुए भी भाईजी महाराज ने सागर मुनि को रतनगढ़ छोड़ा। आचार्यप्रवर सरदारशहर पधार गये।

रतनगढ़ में वैद्यों के देख-रेख में इलाज चला। एक महीने के लम्बे ईलाज के बाद मुनिश्री चलने फिरने लायक हुए। श्रमण-सागर, मुनि बसन्तलालजी और मुनि मणिलालजी रतनगढ़ से विहार कर सरदारशहर पहुंचे।

वि.सं. २०१३ का चातुर्मास आचार्यश्री तुलसी ने सरदारशहर किया। जिस दिन चातुर्मास प्रारम्भ हुआ उस दिन मुनिश्री अस्वस्थ हुए। लगभग तीन महिनों तक स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव चलता रहा। परिचारक संत और वैद्य-डॉक्टर प्रयत्न कर करके थक गये। सेठ भंवरलालजी दूगड़ ने लगभग सरदारशहर के सभी मान्य वैद्यों से परामर्श किया पर उपचार नहीं बैठा। बिगड़ते-बिगड़ते स्थिति नाजुक दौर में चली गयी। जन्म और मृत्यु

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

के बीच बहने वाली जीवन धारा का स्रोत मानों धीमें-धीमें मंद पड़ता जा रहा था। मुनिश्री की स्थिति देख सभी हताश, निराश हो गये। कोई उपाय सूझ नहीं रहा था।

सागर मुनि के चारों ओर मृत्यु की आशंका बलवती हो गई। ऐसा लग रहा था अब प्राण छूटे अब प्राण छूटे। एक दिन रात को मुनिश्री फिर बेहोश हो गये। लगातार पांच घंटे तक बेहोश रहे। सभी ने आशा छोड़ दी थी। पूरी रात सेठ भंवरलालजी, वैद्य प्रभुदयालजी, पंच नेमीचंदजी बोरड़ आदि दसों श्रावक भाईजी महाराज के पास बैठे रहे। भिन्न-भिन्न चिन्तन चले। सभी के विचार आशा रहित थे। पर भाईजी महाराज ने आशा नहीं छोड़ी। उनका विश्वास था—यह भी एक झोंका है निकल जाएगा।

अगले दिन सागर मुनि के पेट में दर्द होने लगा। शूल चलने लगी। स्थिति दर्दनाक हो गयी। मुनिश्री के पेट में दर्द अत्यधिक होने लगा। धरती पर टिक पाना भी कठिन हो गया। उछल-उछल कर दर्द हैरान कर रहा था। उपस्थित सभी लोगों व सभी संतों का हृदय द्रवित हो गया। भाईजी महाराज भिखू स्याम, भिखू स्याम जाप जपने लगे। आचार्यप्रवर दर्शन देने पधारे। वयोवृद्ध मंत्री मुनि मगनलालजी स्वामी 'कुरसी' में पधारे। उपचार चल रहे थे। मांजी महाराज (साध्वी वंदनाजी), साध्वी प्रमुखा लाडांजी तथा साध्वियां आयीं; सबने अपने-अपने उपचार बताए।

आशु कवि सोहनलालजी सेठिया आये। उन्होंने भाईजी महाराज को कुछ निवेदन किया। भाईजी महाराज ने बसन्त मुनि को आवाज दी और वह कविता जिसे सागरमलजी स्वामी ने उज्जैन चतुर्मास में बनायी थी उसे निकाल कर लाने को कहा। मुनि बसंतजी सागर मुनि के पास आये और पूछा—वह उज्जैन वाली कविता कहां है?

सागर मुनि बोल तो नहीं सके पर चेहरे पर अमनस्क विचार प्रकट कर दिये।

भाईजी महाराज ने कहा—उसे क्या पूछता है? ले आ उसकी कापियां डायरियां।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वे कापियां ले आये। सोहनजी सेठिया ने ढूंढकर वह कविता निकाली। भाईजी महाराज ने पढ़ी। उसकी पहली पंक्ति थी–

'जीने से मैं ऊब गया हूं, मुझे मृत्यु से मिलने दो।'

भाईजी महाराज पहली पंक्ति पढ़ते ही झुंझला उठे। आगे कि पंक्तियां पढ़े बिना एक ही झटके में कविता फाड़ डाली।

सागर मुनि ने अपने जीवन की सबसे प्रियतम कविता को फटते हुए देखा तो उनकी आत्मा तिलमिला उठी वे बोले–मेरी कविता मत फाड़िये। मेरे मरने के बाद भी यह कविता मेरे कवित्व का परिचय देगी।

भाईजी महाराज ने एक न सुनी उन कागज के टुकड़ों को पानी में गलाकर उन कागजों की एक छोटी गोली बनाकर संतों को देते हुए कहा–इसे रेतीले धोरों में जाकर गाड़ (परठ) दो।

कवि सोहनलालजी को भाईजी महाराज ने कहा–बस, अब रोग कट गया है। मुझे क्या पता था–सागर ने रोग को भीतर बण्डल में बांध कर रखा है। भाईजी महाराज सागर मुनि की और उन्मुख होकर बोले–पगले! एक बात कहूं? सागर ऐसी कविता भविष्य में कभी मत बनाना। क्योंकि–

कविता कुदरत की कला, सागर! मिल्यो सुयोग।
(पर) आइन्दा अपशब्द रो, फेर न करी प्रयोग।।

कविता फाड़ने के थोड़ी देर में ही मुनिश्री को मानसिक प्रसन्नता, शारीरिक राहत मिली। कुछ ही दिनों में मुनिश्री पूर्व की भांति स्वस्थ हो गये। चतुर्मास सम्पन्नता के बाद आचार्यवर के साथ मुनिश्री दस दिनों में २०० मील की पदयात्रा कर दिल्ली यूनेस्को सम्मेलन में सम्मिलित हुए।

शब्दों में कितनी ताकत होती है। प्रत्येक अक्षर अपने आपमें एक मंत्र है। सागरमलजी स्वामी ने उज्जैन चतुर्मास में दग्धाक्षर युक्त कविता लिखी। दग्धाक्षर अर्थात् अशुभ शब्दयुक्त। मुनिश्री ने अपने लिए अशुभ शब्द लिख दिये थे–**'जीने से मैं ऊब गया हूं मुझे मृत्यु से मिलने दो'** इन शब्दों ने अपना असर दिखाया। इन्ही शब्दों के कारण मुनिश्री को इतनी अस्वस्था झेलनी पड़ी। और इन्हीं शब्दों ने मुनिश्री को मौत के द्वार पर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

लाकर खड़ा कर दिया। यदि समय रहते इन शब्दों को नहीं फाड़ा जाता तो मुनिश्री का क्या होता.....। महामहिम आचार्य भिक्षु के प्रबल प्रताप से मुनिश्री मौत के मुख में जाते-जाते बच गये। मौत को मात देकर बाहर आ जाना भाग्य की बात है।

दग्धाक्षर पांच प्रकार के माने गये है—झ, ह, ए, भ और ष ये पांच अक्षर किसी भी रचना के प्रारंभ में रहना अशुभ है। अर्थात् रचना की प्रथम गाथा का प्रथम अक्षर ये पांच न हो। हालांकि कविता में ये पांच अक्षर नहीं थे किन्तु 'जीने से मैं उब गया हूं' यह पंक्ति ही दग्धाक्षर बन गई जो कवि अपने लिए निम्न शब्द लिख देता है वह कदाचित फलित भी हो जाते हैं। उन शब्दों का न्युनाधिक प्रभाव भी जीवन पर पड़ सकता है। अतः कविता की रचना करते समय उपरोक्त बातों का ध्यान रखना चाहिये।

भिक्षु जीवन झांकी

वि.सं. २०१३ का मर्यादा महोत्सव सरदारशहर हुआ। तेरापंथ द्विशताब्दी वर्ष की योजनाएं बन रही थी। द्विशताब्दी वर्ष को ऐतिहासिक रूप में मनाने के लिए चिन्तकों के चिन्तन चल रहे थे। तेरापंथ की बहुमुखी प्रवृत्तियों से लोगों को वाकिफ करना भी एक प्रमुख लक्ष्य था। अनेकों विषय सामने आये। उनमें से एक था—तेरापंथ कला दर्शन। कलाप्रिय साधु-साध्वियों को याद किया गया। सभी को योग्यता अनुसार कला का कार्य संभलाया गया। मुनि दुलीचंदजी (पचपदरा) व मुनि सागरमलजी को तेरापंथ के दो सौ साल के इतिहास को चित्रांकित करने का निर्देश मिला।

सभी साधु-साध्वियाँ अपने कार्य को निष्ठापूर्वक करने लगे। मुनि दुलीचंदजी व सागर मुनि ने आचार्य भिक्षु के जीवन को चित्रांकित करने का सोचा। चित्रांकन के लिए चूरू का चयन किया गया। वहां पर सुविधा, सामग्री, सहयोग और एकांत का प्रचुर योग था। सारी स्थिति आचार्यवर को निवेदन की गयी।

परम पूज्य आचार्य तुलसी ने इतिहासविज्ञ मिष्टभाषी मुनिश्री चम्पालालजी 'मिठिया' के साथ आपका चातुर्मास फरमा दिया। सागर मुनि

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ने नियत दिन पर चम्पालालजी स्वामी के साथ विहार किया। भाईजी महाराज सागर मुनि को पहुंचाने के लिए एक मील तक पधारे। जब सागर मुनि वन्दना करने लगे तब भाईजी महाराज ने अपने अनन्य भक्त व विश्वास पात्र सागरमलजी को शिक्षा फरमाते हुए कहा—तुम जाओ चित्त समाधि रखना, इधर की कोई चिन्ता न करना। जिस कार्य के लिए तुम जा रहे हो उसे पूर्ण निष्ठा के साथ करना और चम्पालालजी स्वामी के मनोनुकूल रहना, रहन-सहन भी उनकी दृष्टि के विपरीत मत करना। यदि अवसर मिले तो आंखों का ऑपरेशन करना भी सीख लेना। सागर मुनि ने कृतज्ञता व्यक्त की।

सागर मुनि के मन में अमित उत्साह था। जब व्यक्ति को अपने मनोनुकूल कार्य करने की स्वीकृति मिल जाती है तो वह प्रसन्न हो उठता है। वह अपने क्षेत्र में दुगुनि शक्ति लगा उस कार्य को संपादित करता है फलतः वह काम सुंदर ही नहीं सुंदरतम रूप में सामने आता है। कला के क्षेत्र में एकाग्रता, धैर्य और आत्मबल मजबूत होना बहुत आवश्यक है क्योंकि आरोहण कभी भी आसान नहीं होता है और कला के क्षेत्र में धैर्य रखना और भी कठिन होता है। श्रम से निःसृत होकर कोई भी चीज निर्मित होती है, उसका मूल्य सहस्र गुना बढ़ जाता है।

वि.सं. २०१४ का चतुर्मास सागरमलजी स्वामी ने, मिष्टभाषी चम्पालालजी स्वामी के साथ किया। मुनिश्री इतिहास की घटना सहज, सरल और मधुर भाषा में प्रतिपादित करते इसलिए आप को सभी मिष्टभाषी चम्पालालजी कहा करते।

तेरापंथ स्थापना दिवस से आचार्य भिक्षु चित्रावली का कार्यारम्भ हुआ। दुलीचंदजी स्वामी, सागरमलजी स्वामी परिकल्पना करने लगे। आप दोनों की कल्पना को पेंसिल से उकेरने में खेमराजजी शर्मा (नाथद्वारा) का अहं योग रहा। खेमराजजी वैसे तो तेरापंथी नहीं थे। पर हर साल आचार्य तुलसी की सेवा में आते। चातुर्मास में लगभग दो महीने तक रहते व संतों को चित्र बनाना सिखाते। शर्माजी श्रेष्ठतम कलाकारों में

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

से थे। उनका हाथ बहुत साफ व सधा हुआ था।

मुनिश्री दुलीचंदजी, सागरमलजी और खेमराजजी शर्मा तीनों की कल्पना ने आकार लिया। चित्र बनकर सामने आये। आगे से आगे चित्र बनते जा रहे थे। तेरापंथ नामकरण स्वीकार करने वाला चित्र जब बनाया जा रहा था तब सागरमलजी स्वामी ने कहा—स्वामीजी की आंख ऐसी थी उनका ललाट इस प्रकार था इत्यादि बातें बतायी। विस्मित दुलीचंदजी स्वामी ने पूछा—तुम्हें कैसे पता कि आचार्य भिक्षु की ऐसी आंख थी।

सागरमलजी स्वामी ने रहस्य का अनावरण करते हुए कहा—भाईजी महाराज के साथ मैंने दर्शन किये थे इसलिए मुझे पता है।

फिर 'हे प्रभो! यह तेरापंथ' वाला चित्र सागर मुनि के निर्देशानुसार बनाया।

धीरे-धीरे भिक्षु जीवन झांकी बनकर तैयार हुई। लगभग इक्कावन चित्र बनें। चातुर्मास सम्पन्न हुआ। सभी ने आचार्यवर के दर्शन किये। भिक्षु जीवन झांकी आचार्यवर को भेंट की। चित्रों को देख पूज्यश्री का हृदय प्रसन्न हो गया। उन्होंने चित्रों को दोहरा-दोहरा कर देखा। दोनों ही संतों को खूब आशीर्वाद दिया। श्रम को सराहा।

सभी संतों ने भी उन चित्रों को देखा। कला-कुशलता के प्रति सराहना व्यक्त की।

पात्र में सांप

सागरमलजी स्वामी को कला के क्षेत्र में बहुत रुचि थी। वे आये दिन कुछ न कुछ बनाते। और जो कुछ भी निर्मित करते वह वस्तु उपयोगी भी सिद्ध होती। आपने अनेकों आइग्लास बनाए जो वृद्ध संतों के बहु उपयोगी होते। कई बार मुनिश्री ऐसी चीज लाते कि वह निर्जीव होते हुए भी सजीव लगती। ऐसा ही एक प्रसंग है—

आचार्यवर सुजानगढ़ विराज रहे थे। सागरमलजी स्वामी बर्हिभूमि की ओर पधारे। वापस आते समय आपको एक विशाल काले सांप की

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कांचली मिली। कांचली को उठाया वह अखंडित थी। उस कांचली को देख इतिहास की घटना याद आ गयी। मेवाड़ केलवा की अंधेरी ओरी के मंदिर में मुनि भारमलजी के पैरों में सांप ने आंटे लगाये थे। यदि उस दृश्य को दिखाना हो तो यह सांप की कांचली बहुत उपयोगी बन सकती है। वे उस कांचली को लेकर आये। उस कांचली में मुनिश्री ने सुखी नरम घास भरी। सांप के फण में रूई भरी। अब वह लगभग लगभग असली सांप जैसा लगने लगा। मुनिश्री ने कोतुहल व कलात्मक दृष्टि से उसे एक काष्ठ पात्र में कुंडली की मुद्रा में रखा। सांप का फणजरा उठाया हुआ सा रखा और ऊपर एक पात्र उलटा ढका।

आचार्यप्रवर भोजन से निवृत हो टहल रहे थे। अनेक संत इर्द-गिर्द पर्युपासना में खड़े थे। सागर मुनि आये। सभी ने सोचा कोई वस्तु मालूम करने आयें होंगे। गुरुदेव रूके। सागर मुनि ने अभिनय करते हुए पात्र का ढकन हटाया और थोड़ा सा हाथ हिलाया। हाथ के कंपन से सांप हिलता-सा प्रतीत हुआ। सांप वास्तविक जैसा लग रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे असली सांप ही बैठा हो। आचार्यश्री समेत सभी दर्शक सहम गये। गुरुदेव ने सागर मुनि को शाबासी दी।

मुनिश्री भाईजी महाराज के पास आयें। मुनिश्री छोगालालजी (छगूबा) की पीठ सागर मुनि की ओर थी। आपने सोचा छग्गू बा अपने आपको बड़ा दाठीक निर्भीक और साहसी बताते है। एक बार परीक्षा तो करनी चाहिए। मुनिश्री ने वह बनावटी सांप उनके गले में डाल दिया। सांप को देखते ही छग्गूबा के होश हवास उड़ गये। जी धकधक कांपने लगा। शरीर से पसीना बहने लगा। उन्हें पानी पिलाया। बातों में लगाया और उनके मन को सहज करने का प्रयास किया।

छग्गूबा तो ठीक हो गये पर सागर मुनि भाईजी महाराज को देख नर्वस हो गये। आंखें भर आयी, भाईजी महाराज ने आश्वस्त करते हुए कहा—

आगेसर करणी नहीं, सागर! इसी मजाक।
धसके स्यूं फाटै हियो, हुवै अनर्थ हकनाक।।

भाईजी महाराज की सीख सागर मुनि के गले उतर गयी।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

शरीर की जड़

बीदासर का प्रसंग है। दड़ीबे का एक ग्रामीण आया। कुंभार-प्रजापति। बूढ़ा आदमी पर था रसीला रंगीला। सागर मुनि से बातों ही बातों में उसने पूछ लिया—मुनिजी! पेड़-पौधे घास फूस सबके जड़ होती है। जड़ के बिना कोई नहीं पनपता। जड़ होगी तभी वह वटवक्ष बन पायेगा। अपने शरीर की भी जड़ है। आप बताईये अपने शरीर में जड़ कहां है?

प्रश्न बड़ा विचित्र था। मुनिश्री सोचने लगे शरीर की जड़ कहां होती है? पैरों में, पैरों की अंगुलियां में या पेट में? बूढ़े ने उलझा दिया। आपने सहज रूप से उत्तर दिया—बाबा समझ में नहीं आया, भला शरीर के भी कोई जड़ होती है? यदि जड़ होती तो मनुष्य एक जगह अपनी जड़े जमा कर स्थिर खड़ा रहता।

भाईजी महाराज सागर मुनि की बात सुन रहे थे आपका उत्तर सुन वे झुंझला उठे और बोले—

गई अकल गावन्त रै, सागरिया! की सोच।
नाभि जड़ नर देह री कह दै निःसंकोच।।

सागर! कहां उलझ गया। क्या नाभि हमारे शरीर की जड़ नहीं है? जब हमारे शरीर के अवयव भी नहीं फूटे थे तब हम नाभि से शक्ति नहीं पा रहे थे? मां के पेट में नाभी ही हमारे पोषण तत्त्वों का स्रोत होता है।

सागर मुनि कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए बोले—आपने तो मुझे मूल की जानकारी देकर अज्ञात रहस्य को ज्ञात करवा दिया।

नाभि हमारे शरीर का मूल केन्द्र है जहां से सारा शरीर विकसित होता है। इसे विकास का केन्द्र बिन्दु भी कह सकते है।

डॉक्टर

एक युग था डॉक्टर साधु की शारीरिक चिकित्सा नहीं कर सकते थे। वैद्य, डॉक्टर आदि यह बता सकते थे अमुक बीमारी का ऑपरेशन कैसे करना है। उनका कार्य मात्र निर्देश तक ही सीमित रहता शेष कार्य संत ही

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

करते। डॉ. ऑपरेशन के समय वही रहते, प्रारम्भ से लेकर अंत तक की सारी गतिविधियों पर पैनी नजर रखते। संत बड़ी ही चतुराई पूर्वक ऑपरेशन करते। उस समय ऑपरेशन नहीं कह कर शल्य चिकित्सा शब्द का प्रयोग किया जाता। संभवतया आचार्य भिक्षु व भारीमालजी स्वामी के युग में ऑपरेशन हुए होंगे। पर ऐसी अधिकृत जानकारी नहीं मिलती है। ऋषिराय के युग में हेमराजजी स्वामी का ऑपरेशन करने का प्रसंग आया है। वि.सं. १८८७ में आनन्दरामजी वैद्य रूपचंदजी वैद्य के देखरेख में मुनि हिन्दूमलजी ने हेमराजजी स्वामी की आंख की कारी (ऑपरेशन) की। युग बदलते गये पर परम्पराएं चलती रही। पूज्य गुरुदेव का युग आया उस समय भी साधु का ऑपरेशन साधु ही करता था। इस कार्य में साधु-सतियां विशेष रूप से प्रशिक्षित होते। उस समय कुछ साधु-साध्वियां इस क्षेत्र में प्रवीण थे। उनमें से एक थे मुनि सागरमलजी 'श्रमण' मुनिश्री का हाथ हल्का व साफ था। आपने भाईजी महाराज के साथ रहकर न जाने कितने ही संतों के घावों को धोया, पोंछा और उनकी पीड़ा को अपनी पीड़ा मानकर अग्लान भाव से सेवा की। यदि स्वयं के हाथ में लग जाएं तो कितनी चिन्ता होती है। अपने आपको स्वस्थ रखने के लिए कितना ख्याल करते है। यदि ऐसा ही यत्न और प्रयत्न औरों के प्रति करते हैं तब हम सच्ची सेवा का निदर्शन करते हैं।

तेरापंथ धर्मसंघ में सेवा का सर्वप्रथम स्थान है। सेवा के कार्य में प्रत्येक साधु तत्पर रहता है। सेवा का विनमय कभी नहीं होना चाहिये। सेवा कर्तव्य व निर्जरा के लक्ष्य से होना चाहिए। मुनिश्री सागरमलजी स्वामी 'श्रमण' ने हरनिया के दो सफल ऑपरेशन किये। आंखों का एक ऑपरेशन किया। मुनिश्री की विशेषताओं को देख कहा जा सकता है आप श्रेष्ठ कम्पाउण्डर होने के साथ-साथ कुशल डॉक्टर भी थे।

वकील

युग था आचार्यश्री तुलसी का तेरापंथ धर्मसंघ विकास के आयामों को छूता हुआ आगे बढ़ता जा रहा था। आचार्य तुलसी के सामने नये-नये प्रसंग आते। वे प्रसंग चाहे श्रद्धा मान्यता से संबंधित हो चाहे परम्परा,

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सिद्धान्त या व्यवहार से, वे कई बार महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने से पहले संघ के साधु-साध्वियों के समक्ष अपने विचारों को रखते, पक्ष और विपक्ष के विचार सुन गुरुदेव निर्णय करते। आचार्यश्री तुलसी कई बार फरमाते—सागर! तुझे विपक्ष में बोलना है। ऐसा करने के पीछे आचार्यवर का ध्येय यह रहता कि आज जो कार्य हम प्रारम्भ कर रहे है उसका भविष्य में क्या प्रभाव पड़ेगा। पक्ष वाले संत फायदे बताते तो विपक्ष वाले संत त्रुटियां गिनाते। अंत में पूज्यश्री निर्णय करते कि क्या करना अथवा क्या नहीं करना है।

सागरमलजी स्वामी को पूज्य श्री प्रायः विपक्ष में ही रखते। क्योंकि आपकी तर्क वजनदार होती और जब आप वकील बनकर वकालत करते तो सामने वाले को सोचने के लिए मजबूर कर देते। एक बार का प्रसंग है—दो संत आचार्यश्री तुलसी के पास आये। दोनों ने अपनी-अपनी बात कही। आचार्यवर ने पूछा—तुम दोनों के वकील कौन है। तब एक संत ने अपने संतों का नाम बताया व एक संत ने सागरमलजी स्वामी का। मुनिश्री का नाम सुनते ही पूज्यवर ने फरमाया—सागर! तेरा वकील है तो लगभग तू ही केस जीतेगा।

सागरमलजी स्वामी वकालत करने में माहिर थे। वे वकील नहीं थे पर वकालत करना उनके स्वभाव में था। समय-समय पर ऐसा तर्क प्रस्तुत करते कि वह सर्वमान्य हो जाता। निःसंकोच मुनि सागरमलजी 'श्रमण' उच्च कोटि की वकालत में सिद्धहस्त थे।

चित्रकार

चित्र बनाना भी एक कला है। चित्रकार कल्पना करता है वह कल्पना रंग, पिंछी के द्वारा श्वेत कागज पर अपने भाव उकेर देता है। उसमें कितने ही भाव समाविष्ट कर चित्र को एक कलाकृति बना देता है। दर्शक जन उन चित्रों को देख कर रोमांचित हो जाते हैं। चित्र को समझने के लिए भाषा की नहीं अपितु भावों की अपेक्षा रहती है। भावों के द्वारा हम बहुत कुछ समझ जाते है। चित्र की दुनिया निराली है। हम जो बात शब्दों

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

के द्वारा नहीं समझा सकते है वह बात चित्र के माध्यम से समझायी जा सकती है। उसे हृदयंगम करवा सकते हैं।

सागरमलजी स्वामी तेरापंथ धर्मसघ में कुशल चित्रकार थे। उनके हाथ से सैकड़ों-सैकड़ों चित्र बनें। मुनिश्री के अधिकांश चित्र उपदेशमय है। कुछ चित्र घटना प्रसंगों के आधार पर भी बनाये हुए है। वि.सं. २०२० में सागरमलजी स्वामी ने पांच सौ से अधिक चित्र बनायें। और वि.सं. २०२१ के मर्यादा महोत्सव शताब्दी अवसर पर भाईजी महाराज ने प्रत्येक सिघाड़े को उनमें से चार या पांच चित्र भेंट किये।

सागरमलजी स्वामी द्वारा निर्मित प्रतिबोधक चित्र आज भी संतजन उपयोग में लेते है। उन चित्रों के द्वारा व्यक्ति के चित्त को उसके चरित्र को, उसके चिन्तन को बदलने की प्रेरणा मिलती है। ये चित्र उनकी चेतना की शक्ति को जागृत करने के लिए प्रेरणादायी सिद्ध होते है।

चित्र को देखकर बालक हो, युवक हो चाहे वृद्ध हो, सभी प्रसन्न हो जाते है। चित्र के द्वारा यह बताया जा सकता है कि अकरणीय कार्य को करने से क्या मिलेगा व प्रभु का स्मरण करने से क्या मिलेगा? नैतिक आचरण से क्या मिलेगा अथवा अनैतिकता से क्या मिलेगा? चित्र के द्वारा लोगों को समझा कर उद्‌बुद्ध किया जा सकता है।

सागरमलजी स्वामी श्रेष्ठतम चित्रकार थे। उनके द्वारा निर्मित चित्र आज भी दीर्घा (तुलसी कला प्रेक्षा, लाडनूं) की शोभा बढ़ा रहे है। दीर्घकाल तक मुनिश्री के द्वारा बनाए गये चित्रों को देख उन्हें याद किया जाएगा।

हस्तकला

मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण' हस्तकला में भी निपुण थे। हस्तकला भी एक साधना है। हस्तकला कला कुशलता की परिचायक है। एकाग्रता एवं अटल संकल्प के बिना ये कार्य नहीं होते हैं।

भारतीय हस्तकला आज भी प्राणवान बनी हुई है। न जाने कितने कला विदों ने अपनी कला को नाना प्रकार से प्रस्तुत कर भारतीय कला को

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सिरमौर रखा। कलात्मक वस्तु हर व्यक्ति को अपनी और आकर्षित करती है। कलात्मक वस्तु की मूल्यवत्ता और गुणवत्ता तभी बढ़ती है जब कलाविद का श्रम व समय उसमें साकार होता है।

तेरापंथ धर्मसंघ अन्य प्रधानताओं के साथ कला प्रधान भी रहा है। संघ में अनेकों-अनेकों साधु-साध्वियां हैं, जिन्होंने कलात्मक वस्तुओं का निर्माण कर संघ की कला प्रविणता को वर्धापित किया है।

सागरमलजी स्वामी ने हस्तकला में पारंगतता प्राप्त की। मुनिश्री समय का सदुपयोग करने के लिए दुरुपयोगी वस्तु को भी उपयोगी बना देते इस तथ्य की द्योतक है निम्नोक्त घटना—

एक बार मुनिश्री को टेनिस की एक बॉल दिखी। मुनिश्री ने उसे उठाया, वह फूटी हुई थी। आप उसे देख ही रहे थे कि एक युवक ने कहा—महाराज! इसका आप क्या करेंगे यह तो फूटी हुई बॉल है।

मुनिश्री ने कहा—तुम्हारी बात सही है फूटी हुई बॉल का क्या उपयोग। पर उपयोग हर चीज का हो सकता है बशर्ते कोई उपयोग लेने वाला हो। युवक मौन रहा। मुनिश्री ने उसके दो टुकड़े किये। गोल कटोरी वाले हिस्से को लेकर साफ किया उसे रेजमाल से रगड़ा व उस पर रंग किया। सुन्दरतम चित्र बनाये। बारीक शब्द उत्कीर्ण किये। उस गेंद का रूप, स्वरूप सब बदल गया।

उसी युवक को मुनिश्री ने वह छोटी सी टोपसी (कटोरी) दिखायी। वह कलात्मक टोपसी देख प्रसन्न हो गया, अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए बोला—मुनिश्री आपने बहुत ही सुन्दर कलाकारी की है। ऐसी टोपसी बाजारों में ढूंढने पर भी नहीं मिलती है, बहुत ही अच्छी टोपसी बनायी है। मुनिश्री ने कहा—उस दिन जो फूटी हुई गेंद मिली थी उसके ही आधे टुकड़े से यह कलात्मक टोपसी बनी है।

युवक उसे वापस उठाकर देखने लगा और फिर बोला—महाराज! आप जैसे कलाकार ही बेकार चीज को भी उपयोगी बना सकते है।

मुनिश्री के हस्तकला कौशल को देख वह युवक अभिभूत हो उठा।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जिन संतों को आंखों से सामान्य अक्षर भी दृष्टिगत नहीं होते, उनको बड़े रूप में देखने के लिए सागरमलजी स्वामी ने अनेकों-अनेकों आई ग्लास बनाएं। आंखों पर कितने नम्बर का चश्मा चाहिये, इसके लिए मुनिश्री ने हस्तचालित एक छोटी सी मशीन का निर्माण किया। कई संतों को अपने हाथ से नम्बर वाले चश्में बनाकर दिये। सागरमलजी स्वामी ने श्रमपूर्वक अपने हाथ से दूरबीन बनाया। आचार्यश्री तुलसी ने उस दूरबीन से एक किलोमीटर का नजारा स्पष्ट रूप से देखा। वह दूरबीन आज भी लाडनूं में सुरक्षित है।

सागरमलजी स्वामी ने लकड़ी की छोटी-बड़ी अनेकों चीजें बनायी। उनमें से एक थी लकड़ी की पेटी। वह लकड़ी की पेटी मुनिश्री ने एक पुस्तक के आकार में बनायी। उसे देखने पर ऐसा महसूस होता मानो यह वास्तविक रूप में पुस्तक है। हाथ में लेने के बात उसकी असलियत सामने आती। मुनिश्री ने ऐसी अनेकों कलात्मक चीजें बनायी। और वे सभी उपयोगी बनी, तेरापंथ कला दर्शन की द्योतक बनी। मुनिश्री द्वारा निर्मित चीजें आज भी लाडनूं दीर्घा में सुशोभित हो रही है।

लिपिकार

सागरमलजी स्वामी ने अन्य पारंगतता के साथ लिपि कौशलता भी प्राप्त की। लिपिकला भी अपने आपमें एक विशेष कला है। लिपिकला में विकास करने के लिए निरन्तर अभ्यास करने पर ही हम अपने अभीष्ट की पूर्ति कर सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति का लिखने का अपना अलग-अलग ढंग होता है। परन्तु लिपि सौष्ठव होने पर उस कृति की महत्ता बढ़ जाती है।

प्रश्न होता है लिपि का महत्त्व क्यों? लिपि का महत्त्व बहुत है। विपुल ज्ञान राशि को लिपि के माध्यम से सुरक्षित रख सकते हैं। लिपि के द्वारा हम अध्ययन कर सकते हैं। लिपिकला तो मानवीय सभ्यता का अंग है। लिपिकला के जनक थे भगवान ऋषभ। उनके युग में लिपि का आर्विभाव हुआ।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तेरापंथ धर्मसंघ में लिपि कुशल मुनि अनेकों हुए हैं। समय-समय पर आचार्यों ने भी प्रेरणा देकर अनेकों मुनियों को लिपिकला में दक्ष किया। उनके द्वारा लिखित ग्रंथ आज भी सुरक्षित है। सागरमलजी स्वामी ने अपने अक्षर जमाएं। जो नैरतरिक अभ्यास से मोती की भांति परिलक्षित होने लगे। आचार्यश्री तुलसी के कई बार कुछ विशेष लिखने का अवसर आता तो वे मुनिश्री को सौपते।

मुनिश्री ने भाईजी महाराज के लिए एक प्रवचन की डायरी व गीतों की डायरी लिखी। उन दोनों के अक्षर देखते है तो ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय का लिपि कौशल वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मानो कम्प्यूटर द्वारा लिखे गये अक्षरों के समकक्ष हो।

सागरमलजी स्वामी ने अपने जीवन में कई आगमों को सुन्दरतम अक्षरों में लिपिबद्ध किया। और अनेक छोटी-बड़ी रचनाएं भी लिपिबद्ध की।

सागरमलजी स्वामी ने अनेकों कलाओं में पारंगतता पायी। वे आगे भी अनेक उपयोगी विद्याओं को जानने की कोशिश करते रहें।

तीस साल

आचार्यश्री तुलसी के ज्येष्ठ भ्राता मुनिश्री चम्पालालजी स्वामी सरल हृदयी, सेवाभावी थे। पर उनके अनुशासन में चलना मानो लोह के चने चबाने जैसा था। सागरमलजी स्वामी को आपकी सेवा में रहते-रहते लगभग तीस वर्ष हो रहे थे। इन तीस वर्षों में कितने ही उतार चढ़ाव आएं। कितनी ही परिस्थितियां सामने आयी। बहुत कुछ सिखने को मिला। नये-नये प्रश्न खड़े हुए। समाधान भी हुआ। आगे बढ़ने के लिए उन्मुक्त प्रेरणा भी मिली। गल्तियों का परिष्कार हुआ। नदी की तरह बहते हुए न जाने कितने कष्ट सहे। वृद्ध संतों से अनुभव मिले वे अभिनव विकास के सोपान बनें। झंझावत आये तो बसंत ऋतु का भी आनन्द लिया। जीवन यात्रा निरापद नहीं रही। समस्या आयी पर आप पराङ्मुख नहीं हुए। कसौटी पर कसने से एक चमकता हुआ नाम सामने आया—**मुनि सागरमलजी 'श्रमण।'**

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तीस साल तक भाईजी महाराज के उपपात में रहकर आपने बहुत कुछ अर्जित किया।

जा सागर! कर मौज

वि.सं. २०३२ का जयपुर चतुर्मास सम्पन्न कर गुरुदेव फतेहपुर पधारें। भाईजी महाराज की इच्छा थी मुझे गुरुदेव से पहले लाडनूं पहुंचना है। उन्होंने आचार्यश्री से पहले पहुंचने के लिए दूसरा छोटा रास्ता लिया। विहार में असाता रही। एक प्याऊ में ठहरें। दिन में सैकड़ों यात्री दर्शनार्थ आते रहे। विश्राम कर जैसे ही भाईजी महाराज उठे उन्होंने फरमाया—एक कागज कलम देना।

सागर मुनि ने पूछा—क्यों भाईजी महाराज।

भाईजी महाराज—तु देतो सही।

सागर मुनि ने कागज और डॉट पेन निवेदन किया। भाईजी महाराज ने कुछ लिखा और कागज समेट कर अपने चादर के पल्ले में बांध लिया।

भाईजी महाराज ने विहार किया। एक मील का रास्ता मानो सौ कोस बन गया। मुनिश्री ने अपना एक हाथ मणि मुनि के कंधे पर, दूसरा हाथ सागर मुनि के कंधे पर रख कर 'धां' गाँव पधारें। रात को स्वास्थ्य ठीक था। सुबह ६.१० के आसपास भाईजी महाराज का प्रयाण हो गया। मुनिश्री के पार्थिव शरीर को वोसिराया।

मुनिश्री के ज्ञातिजन व श्रद्धालु लोग भारी संख्या में एकत्रित हो गये। भाईजी महाराज के शरीर के वस्त्र बदले गये। एक चद्दर (पछेवड़ी) पर एक कागज बंधा हुआ था। उस को खोल कर देखा। उसमें एक दोहा लिखा था—

'चम्पक' चवदस च्यांनणी, याद रहेगा रोज।
सालासर की साखस्यूं, जा सागर! कर मौज।।

भाई महाराज द्वारा रचित अंतिम दोहा जिसमें सागरमलजी स्वामी को मुनिश्री ने अंतिम आशीर्वाद शब्दों में देकर मानो सागर मुनि में अमृत सागर भर दिया हो।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भाईजी महाराज की सन्निधि में रहकर व स्वयं के पुरुषार्थ से परिपक्व होकर सागरमलजी स्वामी का व्यक्तित्व और कर्तृत्व निखर उठा।

अग्रणी

वि.सं. २०३२ पोष कृष्णा ५, २३ दिसम्बर सन् १९७५ आचार्यश्री तुलसी के संयम पर्याय के पचास वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में दीक्षा कल्याणक उत्सव मनाया जा रहा था। कार्यक्रम के बीच आचार्यश्री तुलसी ने फरमाया—मुनि सागर बहुत ही अच्छा संत है। इसने सेवाभावी चम्पालालजी स्वामी की बहुत सेवा की। भाईजी महाराज के निर्देशन में चले। मैंने कई बार देखा चम्पालालजी स्वामी के लिए ये आहार-पानी को भी गौण कर देता और उनके साथ जनसंपर्क, व्यवस्था आदि के लिए चला जाता। चम्पालालजी स्वामी के कड़े निर्देश में चलना बड़ा ही कठिन था। मैंने भी देखा उनका अनुशासन कितना कठोर था। इसने अनुशासन में चलना सीखा है। जो साधु कड़े अनुशासन में रह जाता है उसे अनुशासन करना आ जाता है। मुनि सागर चित्रकार है, कवि है, हस्तकला में कुशल है। धर्मसंघ के विद्वान मुनियों में है। मैं इसकी सेवा, साधना और आचार कुशलता इत्यादि गुणों से प्रभावित होकर इसे 'अग्रणी' बनाता हूं साथ ही साथ इसे कुछ बख्शीसें भी देना चाहूंगा—मुनि सागर—

१. राज में रहे तो साज।

२. बहिर्विहार में रहे तो सिघाड़ा।

३. चाकरी बख्शीस।

४. राज का सारा बोझ बख्शीस।

५. समुच्चय के कामकाज बख्शीस।

६. बहिर्विहार में साध्वियों से सिलाई-रंगाई वस्तु ले दे तो बख्शीस।

सागरमलजी स्वामी ने वंदना की। आचार्यवर ने आशीर्वाद देते हुए फरमाया—सागर चहुमुखी विकास करो। ज्ञान, दर्शन, चारित्र इस रत्नत्रयी में योगक्षेम करते हुए आगे बढ़ो।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

टालीवाला कमरा

वि.सं. २०३३ का चतुर्मास सागरमलजी स्वामी ने आचार्यश्री के साथ सरदारशहर किया। सभी संतों को क्रमानुसार स्थान निर्धारण करवाना था। सभी संत आचार्यश्री के सम्मुख उपस्थित हो गये। आचार्यश्री ने फरमाया—टाईल (विशेष कमरा) वाले कमरे को छोड़कर सभी अपनी-अपनी जगह निर्धारित कर लों। सभी संतों ने अपने स्थान का चयन कर लिया। सभी संतों के साथ सागरमलजी स्वामी भी अपने चयनित स्थान पर जाकर बैठ गये। मणिलालजी स्वामी ने सामान जमाना शुरू कर दिया। इतने में एक संत आएं बोले—सागरमलजी स्वामी को आचार्यश्री याद फरमा रहे है।

मुनिश्री आचार्यश्री के पास पहुंचे। आचार्यवर ने फरमाया—सागर! टाईल वाले कमरे में भाईजी महाराज विराजा करते थे अब तुम रहो।

आचार्यश्री की अयाचित कृपा पाकर मुनिश्री आप्यायित हो गये।

सत्ता और संत

मर्यादा महोत्सव पर परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी ने सागरमलजी स्वामी का चतुर्मास दिल्ली फरमाया। गुरुदेव से विदाई ले सागरमलजी स्वामी ने विहार किया। आपके साथ मुनि मणिलालजी, मुनि विनयकुमारजी और अभयकुमारजी थे।

विहार करते हुए मुनिश्री दिल्ली पहुंचे। वि.सं. २०३४ का चातुर्मास दिल्ली में प्रारम्भ हुआ। जन-सम्पर्क के साथ-साथ अणुव्रत, जैन दर्शन आदि का प्रचार-प्रसार करते समय राजनैतिक क्षेत्र में आपका उपप्रधानमंत्री जगजीवन रामजी से मिलना हुआ। सागरमलजी स्वामी के सद्भावना और राष्ट्र उत्थान के सामयिक विचार सुन उपप्रधानमंत्री जगजीवन रामजी बहुत प्रभावित हुए उन्होंने कहा—महाराज! रक्षा सचिवालय में तीनों सेनाध्यक्ष आ रहे हैं उस दिन हमारी मीटिंग है। मेरी हार्दिक इच्छा है आप वहां पर पधारें। अपने विचार प्रकट करें। मुनिश्री ने आपकी भावना को स्वीकार करते हुए वहां पर आने की स्वीकृति प्रदान की।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

नियत दिन पर मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण', मुनि मणिलालजी, मुनिश्री विनयकुमारजी और मुनि अभयकुमारजी सचिवालय पहुंचे। सत्ता ने संतों का स्वागत किया। ससम्मान संतों को प्रकोष्ट वाले कमरे में ले जाया गया। चारों ही संत यथास्थान बैठ गये। उपप्रधान मंत्री जगजीवनरामजी उनके सचिव और तीनों ही सेनाध्यक्ष आएं।

मीटिंग प्रारम्भ हुई जगजीवन रामजी ने अपने विचार व्यक्त किये। मुनिश्री विनयकुमारजी ने उद्‌बोधन दिया। मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण' ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा—आज हम रक्षा सचिवालय में आये है। विज्ञान ने अपने स्तर पर बहुत काम किया है। भारत गतिशील देश है। विज्ञान के द्वारा बहुत विकास हुआ है। परन्तु विज्ञान के साथ जीवन विज्ञान का होना भी आवश्यक है। जीने का विज्ञान आदमी में यदि आ जाए तो भारत सभी के सामने आदर्शवान नागरिकों का देश बन जाएगा। भारत का प्रत्येक नागरिक आदर्शवान कैसे बने इसके लिए आचार्यश्री तुलसी अणुव्रत का अभियान चला रहे हैं। मुनिश्री ने अणुव्रत के नियम को बताते हुए कहा—इस अभियान में संभागी बनकर लाखों-लाखों लोग लाभान्वित हुए है और हो रहे है।

मुनिश्री ने आगे कहा—यदि व्यक्ति इन छोटे-छोटे नियमों का जागरूकता पूर्वक पालन करें तो अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण होता है। एक-एक व्यक्ति सुधरेगा तो समाज सुधर जाएगा। और जिस दिन समाज सुधर गया उस दिन राष्ट्र अपने आप सुधर जाएगा। इस प्रकार मुनिश्री ने अपने और भी विचार व्यक्त किये।

मुनिश्री के विचार सुन उपप्रधानमंत्री जगजीवनरामजी तीनों ही सेनाध्यक्ष बहुत ही प्रभावित हुए। उन्होंने मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता प्रकट की एवं आभार जताया।

संत का काम है सत्य को प्रतिष्ठित करना और संकेतों द्वारा समझाना। सत्ता का काम है संविधान के द्वारा स्वच्छ समाज का निर्माण करना।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

प्रभाव

उपप्रधानमंत्री जगजीवनरामजी कही पर भी जाते तो पुलिस पहले से ही तैयार, तैनात खड़ी मिलती। उनकी सुरक्षा का विशेष तौर पर ध्यान रखा जाता। वे पहुंचे उससे दो घंटे पहले पुलिस पहुंच जाती। पूरे मकान-प्रांगण या मैदान को घेर कर जागरूकतापूर्वक सुरक्षा कमान को संभाला जाता है। पर सत्ता का नेता संत के द्वार पर आये तो सुरक्षा की जरूरत नहीं पड़ती क्योंकि संत शरीर की सुरक्षा के आगे आत्म रक्षा का मंत्र भी बता देता है।

जगजीवनरामजी उपप्रधानमंत्री होने के साथ-साथ रक्षामंत्री थे। 'रक्षा मंत्री' को मुनि श्री के वचनों में पता नहीं कौन सा 'रक्षा मंत्र' मिल गया कि वे 'बिना सुरक्षा' के एक दिन रात को नौ बजे के बाद पुलिस रहित मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण' के दर्शन करने आये। मुनिश्री ने पूछ लिया—क्या बात है आप बिना सूचना के अचानक कैसे आये?

उपप्रधानमंत्रीजी बोले—मुनिश्री उस दिन आपके विचार मुझे बहुत ही अच्छे लगे। इसी कारण आपसे चर्चा करने के लिए आया हूं। बिना सूचना के इसलिए आया हूं कि आपसे अधिक बातचीत कर सकूं। सूचित होने पर मेरा अधिकांश समय स्वागत आदि में चला जाता है।

प्रसंगवश मुनिश्री ने तेरापंथ के चतुर्थ आचार्य जीतमलजी व महाराजा रामसिंहजी का प्रसंग सुनाते हुए कहा—वे भी जयाचार्यश्री के पास ऐसे ही रात को बिना सूचना के आया करते थे।

उपप्रधानमंत्री जगजीवनरामजी व मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण' के आपस में अणुव्रत, नैतिकता और राजनीति पर विशद रूप से चर्चा हुई। जगजीवनरामजी मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर लौट गये।

सत्ता का व्यक्ति संत से नहीं वरन् संत की संतता से प्रभावित होता है और इसी कथ्य की द्योतक है यह घटना।

गांठ गायब

वि.सं. २०३४ के चतुर्मास का ही प्रसंग है—सागरमलजी स्वामी के

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कान के पास एक छोटी सी फुंसी हो गयी। मुनिश्री ने सोचा प्राथमिक उपचार से यह फुंसी ठीक हो जाएगी। कई दिनों तक बोरोलिन आदि दवाई लगाई लेकिन विशेष लाभ नहीं हुआ। वह गांठ शनैः शनैः बड़ी होने लगी। बड़ी होने के कारण मुनिश्री के असाता बढ़ गयी। डॉक्टर को दिखाया। उन्होंने ऑपरेशन के लिए कहा। मुनिश्री की भावना थी कि यदि बिना ऑपरेशन के ही दवाई से ठीक हो जाए तो बहुत बढ़िया होगा। डॉक्टर की दवाई भी दी पर कोई फायदा नहीं हुआ। तब ऑपरेशन कराने का निर्णय लिया गया। श्रावक बच्छराजजी कठोतियाजी ने कहा—महाराज! आप निश्चिन्त रहिये, मैं सारी व्यवस्था कर दूंगा।

चार-पांच दिन बाद ऑपरेशन कराने का निर्णय हुआ। मुनिश्री गांठ पर हाथ लगाते तो उन्हें दर्द होता। दर्द के कारण नींद में भी कमी आयी। मुनिश्री विश्राम करने के लिए सो गये पर नींद नहीं आयी। भाईजी महाराज पधारे। उन्होंने सागरमलजी स्वामी को कहा—सागर! अभी तक नींद नहीं आयी।

भाईजी महाराज को देखते ही मुनिश्री विराज गये और अपनी स्थिति बताते हुए कहा—गांठ के कारण नींद नहीं आयी। दो तीन दिनों में ऑपरेशन हो जाएगा।

भाईजी महाराज ने कहा—सागर! तुझे ऑपरेशन कराने की जरूरत नहीं पड़ेगी। ये गांठ कल ऐसे ही ठीक हो जाएगी।

ऐसा कह भाईजी महाराज अन्तर्धान हो गये।

सुबह सूरज उगने के बाद सागरमलजी स्वामी ने कहा—मणिलालजी! आज मुझे गांठ संबंधी दवाई मत देना।

मणिलालजी स्वामी बोले—दवाई तो लेनी पड़ेगी।

सागर मुनि—आज मेरी दवाई लेने की इच्छा नहीं है।

मुनिश्री मणिलालजी स्वामी व मुनिश्री अभयकुमारजी, सागरमलजी स्वामी के पास प्रति दिन दोपहर में आगम का वाचन करने आते। मुनिश्री मूलपाठ के अर्थ को तथा रहस्य को संतों को बताते। उस दिन भी आये।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वाचन शुरू हुआ। आज सागरमलजी स्वामी का ध्यान अपनी गांठ पर था। वे अपने रूमाल (पसीलूणा) से उस गांठ को दबा रहे थे आपको अच्छा लग रहा था। उस गांठ को बार-बार दबाने से उसमें से पीला-पीला पदार्थ बाहर आया। मुनिश्री ने उसे देखा व पूर्ववत् वापस दबाने लगे।

सामान्यतया संत जब आगम पढ़ते तब मुनिश्री बीच-बीच में अर्थ के रहस्य या अन्य कोई प्रसंग बताते। किन्तु आज सारा ध्यान उस गांठ में रहा। वाचन समाप्त होने के बाद दोनों संतों ने निवेदन किया—आज के वाचन में आनन्द नहीं आया।

सागरमलजी स्वामी ने स्मित मुस्कान बिखेरते हुए कहा—आज तुम्हें वाचन में आनन्द नहीं आया पर मुझे तो बहुत ही आनन्द आया। अच्छा देखो मेरी गांठ कहां है?

मणिलालजी स्वामी व अभय मुनि आश्चर्यचकित से होते हुए बोले—गांठ है ही नहीं। क्या गांठ गायब हो गई?

मुनिश्री ने अपना रूमाल दिखाते हुए कहा—गांठ इसमें आ गई बिना ऑपरेशन के।

सभी को आश्चर्य हो रहा था कि बिना ऑपरेशन के गांठ कैसे ठीक हो गयी। मुनिश्री ने रहस्य को उजागर करते हुए भाईजी महाराज वाली घटना बताई।

उधर श्रावक बच्छराजजी कठोतिया व्यवस्था करने में संलग्न थे। उन्हें सूचना मिली संतों के दर्शन कर लो। उन्होंने सोचा—लगता है मुनिश्री के दर्द बढ़ गया होगा वे भागे-भागे विरधी भवन पहुंचे। सागरमलजी स्वामी आदि संतों को प्रसन्न मुद्रा में देख उन्होंने पूछा—महाराज आपके सुखसाता है दर्द बढ़ा तो नहीं?

मुनिश्री ने कहा—कठौतियाजी! दर्द की छोड़ो, अब तो यह देखो गांठ कहां है?

उन्होंने देखा गांठ थी ही नहीं, तब उन्होंने पूछा—मुनिश्री आपकी गांठ कहां गयी?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मुनिश्री ने उनकी जिज्ञासा को उपशांत करते हुए भाईजी महाराज वाला प्रसंग बताया।

सफल चतुर्मास

भारत की हृदय स्थली दिल्ली में सागरमलजी स्वामी ने स्वतंत्र रूप से पहला चातुर्मास किया। चातुर्मास में बहुत धर्मोद्योत हुआ। अनेकों अनेकों लोगों ने धर्म तत्त्व को समझा। कई सुलभ बोधि बने। व्याख्यान के समय पंडाल जनाकीर्ण हो जाता। दिल्ली में राजनैतिक लोगों के बीच धर्म प्रभावना हुई। कई लोगों को गुरुधारणा कराई। बारह व्रती बनाया। कहना तो यूं चाहिये सागरमलजी स्वामी का पहला चतुर्मास सफल ही नहीं सफलतम रहा।

सुदर्शन

दिल्ली चातुर्मास के बाद मुनिश्री गुरुदेव के उपपात में पहुंचे और फिर आदेशानुसार हरियाणा पधारें। आचार्यश्री ने आपका चतुर्मास हिसार फरमाया। मुनिश्री हिसार के आस-पास गांवों में विचरण करते हुए हांसी पधारें। हांसी कुछ दिन रुक हिसार जाने का निर्णय किया।

मुनिश्री को ज्वर हो गया। ज्वर के कारण शरीर टूटने लगा। शरीर में अशक्तता बढ़ गयी। विहार के दिन नजदीक आने लगे। पर विहार करने जैसी स्थिति नहीं थी। वैद्य, डॉक्टर आदि के द्वारा दी गई दवाई का आसेवन तो कर रहे थे पर शारीरिक स्थिति को देखते हुए लाभ दृष्टि गोचर नहीं हो रहा था।

हिसार से विहार कर वयोवृद्ध मुनिश्री छत्रमलजी हांसी पहुंचे। आपको चतुर्मास यही पर करना था। उन्होंने मुनिश्री की शारीरिक अस्वस्थता देखकर कहा—सागरमलजी! तुम्हारी शारीरिक कमजोरी देख मुझे लगता है तुम हिसार कैसे पहुंचोगे।

सागर मुनि बोले—मुनिश्री! मैं धीरे-धीरे विहार कर हिसार पहुंच जाऊंगा।

छत्रमलजी स्वामी बोले—मैं आचार्यश्री को अरज करा देता हूं। तुम

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

यहीं चतुर्मास कर लो और हम वापस हिसार चले जाते हैं।

सागरमलजी स्वामी ने कहा—नहीं महाराज! आप विहार करके बड़ी कठिनाई के साथ यहां पहुंचे है अब वापस पधारें यह उपयुक्त नहीं है। चातुर्मास लगने में दस दिन भी बाकी नहीं है। इतना अल्प समय रह गया है। हमें आचार्यश्री द्वारा निर्देशित स्थान पर ही चातुर्मास करना हैं आप तो यहीं पर विराजे। कल सुबह हम भी यहां से विहार कर देंगे।

अगले दिन सागरमलजी स्वामी आदि संतों ने विहार किया। छत्रमलजी स्वामी ने भारी मन से सभी को विदाई दी।

मुनिश्री विहार कर एक गेस्ट हाऊस में पधारें। मुनिश्री विहार से श्रान्त, क्लान्त हो गये, विश्राम किया। रात्रि को मुनि प्रकोष्ट वाले कमरें की कोटड़ी में पोढ़ाएं। रात्रि की नीरव वेला, शान्त वातावरण अर्धरात्रि का समय, एक सफेद आकृति आयी। मणिलालजी स्वामी को जगाया और पूछा—सागर! कहां है?

मुनि मणिलालजी बोले—मुनिश्री भीतर विश्राम कर रहे है? भाईजी महाराज वाली आकृति अंदर गयी। सागरमलजी को जगाकर कहा—सागर! कैसे है? भाईजी महाराज को देख मुनिश्री झट से विराजमान हो गये और बोले—ज्वर के कारण कमजोरी है। आज हिसार चतुर्मास के लिए हमने विहार किया है। आपकी कृपा रही तो मैं शीघ्र ही स्वस्थ हो जाऊंगा।

भाईजी महाराज ने कहा—चिंता मत कर हिसार आराम से पहुंच जायेगा। वहां जाकर सुदर्शन चूर्ण शुरू कर देना। यूं कह भाईजी महाराज अन्तर्ध्यान हो गये।

सागरमलजी स्वामी जाप कर पोढ़ा (विश्राम) गये। धीरे-धीरे हिसार पहुंचे। हिसार पहुंचने के बाद भाईजी महाराज के कथन के अनुसार अनुपान पूर्वक दवाई का सेवन शुरू किया। मुनिश्री कुछ ही दिनों में स्वस्थ हो गये।

वि.सं. २०३५ का हिसार चतुर्मास में मुनिश्री ने तेरापंथ धर्मसंघ की बहुत प्रभावना की।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

युवाचार्य बनने की बधाई

सागरमलजी स्वामी का रात्रि शयन आचार्य तुलसी के परिपार्श्व में ही होता था। माघ शुक्ला तीज का दिन। गुरुदेव के सान्निध्य में प्रतिक्रमण संपन्न कर सूर्योदय से लगभग बीस मिनट पूर्व सागरमलजी स्वामी चम्पालालजी नाहर की हवेली से भीखमचन्दजी नाहर की हवेली में प्रविष्ट हुए। जैसे ही मुनिश्री ने प्रवेश किया कि भाईजी महाराज सामने खड़े थे। मुनिश्री ने भाईजी महाराज को देखते ही कहा—मोटा पुरुष आप अभी!

भाईजी महाराज—सागर! तुझे पता है आचार्यश्री ने निर्णय कर लिया है नत्थू को युवाचार्य बनाने का।

सागर मुनि—मुझे क्या करना चाहिये?

भाईजी महाराज—तुम मेरी तरफ से शुभाशीष और अपनी तरफ से बधाई दे देना।

सागर मुनि—किसे दूं? आचार्यश्री को या नथमलजी स्वामी को।

भाईजी महाराज—आचार्यश्री को क्या देना है। वे तो स्वयं बनाने वाले है। यह तो नत्थू को दो, जिन्हें अभी तक पता नहीं है।

भाईजी महाराज निर्देश देकर अदृश्य हो गये।

सागरमलजी स्वामी भीतर कमरे में आये। एक छोटा-सा कागज लिया। उस पर कुछ लिखा। मुनिश्री मणिलालजी स्वामी को बुलाया और उन्हें चिट देते हुए कहा—यह चिट मुनि नथमलजी स्वामी को दे आओ।

मुनिश्री मणिलालजी स्वामी हमेशा निर्देशित कार्य को तदनुरूप करते हैं। पर उस दिन पता नहीं क्या सूझी उन्होंने चिट खोल कर देखी, पढ़ी और उसे बंद कर कहा—अभी तो कोई चर्चा ही नहीं है। फिर अभी क्यों?

सागरमलजी स्वामी—ऊपर से आदेश है।

मणिलालजी स्वामी आपके शब्द सुन समग्र बात समझ गये। उसी क्षण चिट को लेकर मुनिश्री नथमलजी (आचार्यश्री महाप्रज्ञ) के पास पहुंचे। नथमलजी स्वामी ध्यानस्थ थे। मुनिश्री ध्यान सम्पन्न होने की प्रतीक्षा में थे।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ध्यान सम्पन्न कर नथमलजी स्वामी ने आंख खोली और कहा—आओ! मणिलालजी अभी कैसे आये।

मणिलालजी—सागरमलजी स्वामी ने यह चिट निवेदन की है।

मुनि नथमलजी ने उसे चिट को खोला, पढ़ा और पढ़ते ही गंभीर हो गये। चिट को बंद किया फिर खोला। ऐसे तीन बार किया। मुनि राजेन्द्रकुमारजी से डायरी मंगवाई। और डायरी में चिट रख दी।

मुनि दुलहराजजी स्वामी ने पूछा—मणिलालजी क्या दे गये थे? कोई खास बात नहीं यह कहकर नथमलजी स्वामी ने बात का पटाक्षेप कर दिया।

वि.सं. २०३४ माघ शुक्ला पंचमी का दिन आचार्य तुलसी ने सभी संतों को पंडाल में उपस्थित होने का निर्देश दिया। सागरमलजी स्वामी को मन ही मन पता था आज क्या होने वाला है। आचार्य तुलसी ने पुण्य वेला में मुनि नथमलजी को युवाचार्य महाप्रज्ञ के रूप में नियुक्त किया। युवाचार्य नियुक्त करते ही कईयों को भाईजी महाराज दिखायी दिये। पण्डाल भी हवा में उठ गया और वापस ज्यों का त्यों नीचे बैठ गया।

मुनिश्री नथमलजी युवाचार्य महाप्रज्ञ बनने के बाद यथास्थान पधारें। विराजते ही आपने वह डायरी मंगवाई। डायरी में से चिट निकाल कर मुनि दुलहराजजी को देते हुए कहा—तुम उस दिन पूछ रहे थे कि मणिलालजी क्या दे गये? यह पढ़ो, वे यह चिट दे गए थे। मुनिश्री दुलहराजजी ने उस चिट को पढ़ा, आचार्यश्री के साथ-साथ अनेक साधु-साध्वियों ने पढ़ा। सारे स्तब्ध रह गए। उस चिट में लिखा हुआ था—

महाप्रज्ञश्री!

भाग्योदय की इस पुण्य वेला में युवाचार्य बनने पर भाईजी महाराज का शुभार्शीवाद! हमारी और से शत-शत शुभकामनाएं।

महाप्रज्ञ

मुनि नथमलजी का नाम महाप्रज्ञ नहीं था। युवाचार्य मनोनीत करते समय आचार्य तुलसी ने मुनिश्री नथमलजी (बागोर) का सम्मान रखने के

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

लिए उनका नाम न बदलकर मुनि नथमलजी का नाम बदलकर युवाचार्य महाप्रज्ञ कर दिया। युवाचार्य महाप्रज्ञजी ने पूछा—सागरमलजी! मेरा नाम तो नथमल था तुमने चिट में महाप्रज्ञ कैसे लिखा। क्या तुम्हें इसका भी पता चल गया था।

सागरमलजी स्वामी—युवाचार्यप्रवर मैंने कैसे लिखा कह नहीं सकता पर कोई अदृश्य शक्ति मुझे लिखवाये जा रही थी और मैं लिखे जा रहा था।

लम्बे विहार

सागरमलजी स्वामी राजलदेसर में विराज रहे थे। मुनिश्री का चतुर्मास बम्बई फरमाया हुआ था। मुनिश्री ने सोचा—पन्द्रह, बीस किलोमीटर का विहार तो प्रायः करते है। इस बार लम्बे-लम्बे विहार कर उदयपुर पहुंचना है। मुनिश्री ने सभी संतों को आमंत्रित किया। अपने विचार बताएं। सभी संतों ने प्रसन्नता के साथ अपनी स्वीकृति दी।

सागरमलजी स्वामी, मुनिश्री मणिलालजी, मुनिश्री विनयकुमारजी और मुनिश्री अभयकुमारजी चारों ही संतों ने विहार किया। विहार करते करते आप राणावास पहुंचे। वहां से विहार कर सीधा बागावास पधारें।

मारवाड़ की धरती कांठा प्रदेश की शुष्क भूमि। कांटो और कंकरो के पथ पर चलते हुए अरावली के पर्वतीय हिस्सों में पहुंचे। उन हिस्सों में प्राचीन किस्से भी स्मृति-पटल पर उभर आये। प्रकृति के नैसर्गिक शृंगार का साक्षात्कार करते हुए पर्वतीय शृंखलाओं को पार कर मुनिश्री सहवर्ती संतों के साथ आगे से आगे बढ़ते जा रहे थे। सभी संत मात्र १० या १५ दिन की प्रलम्ब यात्रा करते हुए उदयपुर पहुंच गये। फिर यथासमय बम्बई पहुंचे और वि.सं. २०३६ का चातुर्मास सानन्द संपन्न किया।

गुजरात समाचार

सागरमलजी स्वामी का चातुर्मास आचार्यश्री ने अहमदाबाद फरमाया इसी बीच सूरत भी पदार्पण हुआ। मुनिश्री के धारा प्रवाह प्रवचन को सुनने के लिए बहुत लोग आते। आपके समाचार गुजरात समाचार पत्र में भी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आने लगे। आपके विचारों को जब गुजरात समाचार के सह-सम्पादक ने पढ़ें तो वह प्रभावित होकर मुनिश्री के दर्शन करने को आये। मुनिश्री ने वार्तालाप करते हुए तेरापंथ धर्मसंघ के बारे में बताया तथा अपने संग्रह में संग्रहित कुछ वस्तुएं बतायी।

सम्पादकजी ने उनके बारे में जानकारी नोट की और अगले दिन गुजरात समाचार के मुख पृष्ट पर छाप दी। इस प्रकार एक सप्ताह तक यही क्रम चला। जनता ने भी इस अखबार में छपी इन जानकारियों को बड़ी रुचि से पढ़ा।

एक दिन अखबार के मालिक ने सम्पादकजी को ऊंची आवाज के अंदाज में पूछा—रोज-रोज मुख पृष्ट पर ये खबरे क्यों छापते हो?

सम्पादकजी—सर! मुझे उनके विचार अच्छे लगे। उनके पास जो संग्रहित वस्तुएं है वे कलात्मक है साथ ही साथ प्रेरणास्पद भी है।

मालिक—जनता को मुख पृष्ट पर ताजा खबर चाहिये। ये खबरें भीतर भी आ सकती हैं। आप इस बात का ध्यान रखें। ग्राहकों को कैसे जोड़ कर रखे और कैसे अन्य ग्राहक को आकृष्ट करें।

सम्पादकजी बोले—सर! इन तीन चार दिनों में गुजरात समाचार पत्र के ग्राहक कितने बढ़े है यह भी आप जानिये।

जब मालिक के सामने पांच दिन पूर्व व पांच दिन पश्चात की ग्राहक गणना लाकर प्रस्तुत की तो वे दंग रह गये। मात्र पांच दिन में ग्राहक संख्या बहुत बढ़ गयी थी।

ग्राहक संख्या देख मालिक मौन हो गये। सात दिन तक लगातार मुनिश्री की खबर छपती रही।

व्याख्यान में आवाज

वि.सं. २०३६ जेठ शुक्ला ११ शनिवार, १३ जून १९८१ का प्रसंग है। सागरमलजी स्वामी मेवाड़ में विचरण कर रहे थे। विहार करते हुए मुनिश्री खरणोटा पधारे। वहां घीसूलालजी बावलिया की हवेली में ठहरे। व्याख्यान का समय हुआ। मुनि मणिलालजी स्वामी ने कहा—आज मेरा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्वास्थ अनुकूल नहीं है। मेरी इच्छा विश्राम करने की है। ऐसा कहकर हवेली के पिछवाड़े की ओर जाकर सोने की तैयारी करने लगे। सागरमलजी स्वामी व्याख्यान देने के लिए पधार गये। मुनिश्री व्याख्यान दे रहे थे तब स्वर्गस्थ भाईजी महाराज की आकृति दिखायी दी और आवाज आयी—''मणिलालजी को संभालो।'' सागरमलजी स्वामी ने शांति मुनि की ओर उन्मुख होकर कहा—देखो मणिलालजी कहां है?

शांति मुनि—अभी जाकर आया हूं। उन्हें नींद आ रही है।

मुनिश्री व्याख्यान सम्पन्न कर लगभग पौने दस बजे के करीब अन्दर पधारे। मुनिश्री ने देखा मणिलालजी हाथ पर हाथ दिये सिर झुका कर बैठे थे। मुनिश्री ने कंधा हिलाकर पूछा—ठीक है।

मुनि मणि बेहोशी के स्तर में—आ.....आ..... कोई जीव काटा है। यूं कह अपना दाहिना पांव आगे किया। उनके पैर में जबरदस्त जलन थी। जैसे ही मुनिश्री मणि मुनि को कमरे में लाने को उद्यत हुए की अदृश्य आवाज आयी—''मैंने पहले ही कहा था?'' अब उवसग्गहरं का पाठ करो। मणि मुनि को सुलाया। आदेश के अनुसार डंक वाले स्थान पर सागरमलजी स्वामी हाथ रख पाठ करने लगे। स्थिति का पता चलते ही पचासों भाई एकत्रित हो गये। लैंप के प्रकाश में स्पष्ट गोचर हो रहे थे दो दांतों के निशान। एक भाई दौड़ा। साइकिल ली पार्श्वस्थ मिनक्यावास गया। वहां से तुलसासिंह राजपूत को लाये। तुलसासिंहजी ने अपने इष्ट को याद किया। थोड़ा झूमा और बोला—काटा तो जानवर ही है। भाग्य था संतों का जहर केवल चमड़ी पर ही चढ़ा है अभी लहू में नहीं उतरा है।

लोग बोले—बापजी! कुछ उपचार करो।

वह भाई सागरमलजी स्वामी की ओर इशारा करते हुए बोला—उपचार हो रहा है बाबा मेरे से आगे चल रहे हैं। इनसे ज्यादा मैं क्या करूंगा? सुबह तक ठीक हो जाएंगे। वह झटका खाकर उठा और बोला मुझे घर पहुंचा दो।

लोगों ने सलाह-मशविरा किया। आमेट समचार करे—कोई डॉक्टर

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आयेगा। मणि मुनि ने कहा—डॉक्टर क्या करेगा ? ठिकाना लोगों से आकीर्ण था। बीसों लोग रात भर वहीं सोये। श्रावकजन बार-बार मुनि मणिलालजी स्वामी को हिलाते और कहते नींद मत लेना महाराज। सागरमलजी स्वामी ने निर्धारित माला दो बजे तक संपन्न की, हाथ हटाया पूछा—कैसे?

मुनि मणि—जलन कम पड़ गयी है अब मुझे नींद आ रही है।

सभी ने कहा—नींद किंचित मात्र भी नहीं लेना है।

फिर भाईजी महाराज की आवाज आयी—'सो लेने दो इसे, मैं खड़ा हूं सिहराने। तुम भी सो जाओ। तीनों ही संत सो गये। कुछ भाई रात भर जागे। 'ॐ भिक्षु जय भिक्षु' जाप रात भर चलता रहा।

भोर में हर्ष विभोर मुद्रा में मणि मुनि उठे। सागरमलजी स्वामी ने सर्पदंश वाले स्थान को देखा एक रुपया टिके जितना स्थान काला राख जैसा था और पैर पर सूजन भी थी।

आचार्य भिक्षु, भाईजी महाराज और सागरमलजी स्वामी के जाप से रात्रि उपसर्ग टल गया। वि.सं. २०३८ का चातुर्मास मुनिश्री ने आमेट किया।

स्वास्थ्य निकाय

मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण' सेवाभावी संत के रूप में उभरें। भाईजी महाराज के सान्निध्य में रहकर बहुत से संतों की सेवा की। मुनिश्री को दवाईयों की बहुत अच्छी जानकारी थी। मुनिश्री को आयुर्वेदिक अनेकों नुस्खों का ज्ञान था। वे समय-समय पर आचार्यश्री तुलसी की औषध की सेवा भी किया करते थे। आपकी कार्य निपुणता देख आचार्यश्री तुलसी ने आपको 'स्वास्थ्य निकाय' के रूप में गंगाशहर मर्यादा महोत्सव पर नियुक्त किया। नियुक्त पत्र इस प्रकार है—

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अर्हम्

सं. २०३८, मा.शु. १३

गंगाशहर (राज.)

स्वास्थ्य निकाय

व्यवस्थापक–मुनि सागरमलजी 'श्रमण'

कार्य–

१. स्वास्थ्य संरक्षा के उपायों की खोज, जानकारी करना और अवगति देने के लिए संगोष्ठी आयोजित करना ।

२. स्वास्थ्य सम्बन्धी ग्रन्थों का चयन तथा निर्माण ।

३. चिकित्सा केन्द्रों की अपेक्षाओं आवश्यक जानकारी, निवेदन और सम्पादन ।

सप्त सूत्र–

१. तटस्थता २. गोपनीयता ३. समभाव ४. सामूहिक-सद्भाव ५. साधना रुचि ६. गणनिष्ठ ७. कर्तव्य परायणता ।

आचार्य तुलसी

प्यास

मुनिश्री सागरमलजी स्वामी, मणिलालजी स्वामी आदि संतों ने चितौड़ से विहार किया। प्रचंड गर्मी के कारण रास्ते में मणिलालजी स्वामी को प्यास लग गयी। पास में पानी भी नहीं था। मुनिश्री के कण्ठ सूखने लगे। चलना कठिन हो गया। सागरमलजी स्वामी ने पात्री ली और आपके लिए पानी लाने के लिए निकल गये। पास में ही एक गांव था वहां से प्रासुक पानी लेकर आयें। मुनिश्री मणिलालजी स्वामी ने पानी पीकर तृप्ति का अनुभव किया।

चाकरी

तेरापंथ धर्मसंघ में जितने भी आचार्य हुए वे अपने भीतर अनेकों-

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अनेकों विशेषताओं को संजोये हुए होते हैं। नवमाधिशास्ता आचार्यश्री तुलसी की सोच व कतिपय निर्णय ऐसे होते की सभी विस्मित से रह जाते। आचार्य के हाथ में संघ की सत्ता होती है और उनके आदेश-निर्देश पर ही सब कुछ निर्भर करता है। आचार्यश्री तुलसी में यह महनीय खूबी थी कि कब, किस व्यक्ति या साधु को किस प्रकार से काम में लेना, एक बार का प्रसंग है—

छापर सेवा केन्द्र में परिस्थितियां प्रतिकूल चल रही थी। आचार्यवर का चिन्तन चल रहा था कि किस साधु को वहां पर भेजा जाएं, जिससे वातावरण उपशांत हो जाए। अनेकों साधुओं पर दृष्टि गई और अंत में सागरमलजी स्वामी पर जाकर दृष्टि टिक गयी। यद्यपि सागरमलजी स्वामी को चाकरी बख्शीस थी पर उस परिस्थिति में उनको वहां भेजने की बड़ी अपेक्षा थी। आचार्यश्री तुलसी ने आदेश दिया—मुनि सागर छापर सेवा केन्द्र में व्यवस्था संभालो।

आचार्यवर का इंगित मिलते ही मुनिश्री ने छापर की और विहार कर दिया। छापर पहुंच कर सेवा केन्द्र कि व्यवस्था संभाली। फिर आचार्यश्री का सन्देश आया वो इस प्रकार है—

।। अर्हम् ।।

३-३-१९८३

शिष्य सागर!

तुमने छापर-केन्द्र को संभाल लिया, बहुत अच्छा किया। यह प्राथमिक रूप से तुम्हारे द्वारा ही हो सकता था। मुनि महालचंदजी स्वामी का काम सिद्ध हो गया। यह भी श्रेय तुमको ही मिला। तुमने उन्हें अंतिम में अच्छा सहाज दिया। साधुवाद।

सभी छोटे-बड़े संतों को वन्दना सुखपृच्छा।

आचार्य तुलसी

सागरमलजी स्वामी ने आचार्यश्री को निवेदन करवाया—कृपा कर मेरी चाकरी फरमा दीजिए। आचार्यश्री ने फरमाया—सागर तुझे चाकरी मैंने

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बख्शीस की और में ही तेरी चाकरी घोषित करूं यह नहीं हो सकता। तुम्हें चाकरी के लिए नहीं भेजा है। प्रत्युत् व्यवस्था संभालने के लिए निर्देश दिया है।

छापर सेवा केन्द्र में मुनिश्री लगभग तेरह महीनें तक रहे। छापर में धर्म प्रभावना बहुत हुई। मुनिश्री ने व्यवस्था को समीचीन रूप से संभाला। जब मुनिश्री पधारे थे तब स्थितियां सर्वथा प्रतिकूल थी पर मुनिश्री ने व्यवस्था को जिस प्रकार संभाला वह आपकी दक्षता का सुन्दर परिचय है।

मुख्यमंत्री

आचार्यवर के आदेशानुसार सागरमलजी स्वामी, मणिलालजी स्वामी और अमृत मुनि रायपुर पहुंचे। चतुर्मास प्रवेश होने वाला था। महेन्द्रजी धारीवाल मुनिश्री के दर्शनार्थ आये। महेन्द्रजी समाज में सक्रिय कार्यकर्ता थे। सामाजिक कार्यों की गति प्रगति और सेवा में सदा तत्पर रहते थे। साथ ही साथ राजनीति के क्षेत्र में अच्छा प्रभुत्व था। उन्होंने मुनिश्री से निवेदन करते हुए कहा—महाराज! आपका चातुर्मासिक मंगल प्रवेश है। बड़ा कार्यक्रम का आयोजन करने की इच्छा है। हम सोच रहे है, आपके कार्यक्रम में मुख्यमंत्री आये तो बहुत अच्छा रहेगा।

पास में बैठे मणिलालजी स्वामी ने कहा—मुख्यमंत्री को बुलाने की क्या आवश्यकता है।

महेन्द्रजी बोले—मुख्यमंत्री के आने से अन्य लोग भी आयेंगे और कुछ नहीं तो धर्म की दो बातें तो सुनेंगे। आप कृपा करायें।

महेन्द्रजी की और उन्मुख होकर मुनिश्री ने कहा—महेन्द्रजी हमारे मुख्यमंत्री समाज ही है। समाज आयेगा। हमारे लिए मुख्यमंत्री के आगमन से कम नहीं है।

महेन्द्रजी धारीवाल श्रद्धानत हो गये। और उस दिन से महेन्द्रजी के मन में मुनिश्री के प्रति आस्था, श्रद्धा उत्तरोत्तर और वृद्धिगत होती गयी।

रायपुर चतुर्मास बहुत ही प्रभावक रहा।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दक्षिण यात्रा

परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी ने सागरमलजी स्वामी को दक्षिण यात्रा करने का निर्देश दिया और पहला चातुर्मास बैंगलोर फरमाया।

दक्षिण भारत का इतिहास ही अलग रहा है। जैन इतिहास भी प्राचुर्य रूप से वहां उपलब्ध होता है। जैन तीर्थंकरों व जैनाचार्यों से संबंधित इतिहास आज भी वहां मुखर है। यहां के वन इतने सघन है कि कई स्थानों पर सूर्य का प्रकाश भी पत्तों, शाखाओं व लताओं के मध्य से गुजर कर धरा पर नहीं पहुंच पाता है। उन वनों में अनेकों तपोवन है जहां आज भी संत महात्मा तप लीन बने हुएहैं। वहां का प्राकृतिक सौन्दर्य अवर्णनीय है। दक्षिण प्रदेश अर्वाचीन युग में प्राचीन परम्पराओं को सहेजे हुए है। दक्षिण की इतनी विशेषताएं है कि उनको व्यक्त करना कठिन है। यह विशेषताएं तो दक्षिणांचल के अंचल में जाने पर ही ज्ञात हो सकती है।

सागरमलजी स्वामी ने दक्षिण की ओर विहार किया। मुनिश्री विजयनगरम् पहुंचे। वहां से फिर बेंगलोर चातुर्मास किया।

युवा शक्ति

युवक का संकल्प बल बलवान होता है वह कार्य की विभीषिकाओं से घबराता नहीं है प्रत्युत प्रत्येक कार्य को साहस के साथ पूर्ण करता है। बचपन से भी यौवन ज्यादा महत्त्वपूर्ण होता है। क्योंकि यौवन में समझ और सामर्थ्य दोनों होते हैं। सागरमलजी स्वामी का ध्येय रहता, युवा वर्ग हमेशा निष्ठा के साथ काम करता हुआ आगे बढ़े। कई युवकों में उत्साह नहीं होता, वे निष्क्रिय सा जीवन जीते है। उनके विकास के समस्त आयाम कुंठित हो जाते है। जो युवा क्रियाशील है पर यदि वह व्यसनों से ग्रसित है तो युवा शक्ति की टीम में सशक्त युवा का स्थान कैसे ग्रहण कर पायेगा? जरूरत है आज का हर युवक आत्मोदय के साथ सशक्त युवा बनें।

सागरमलजी स्वामी कार्यवश बाहर पधार रहे थे कि दीपचंदजी नाहर गुटखा हाथ में ले रहे थे। सागरमलजी स्वामी ने दूर से देख लिया। मुनिश्री

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ने पीछे से आकर उनकी पीठ पर हाथ रखते हुए कहा—तुम जैसे युवक इस चीज को नहीं खाएंगे तो और कौन खाएगा।

मुनिश्री को देख दीपचंदजी ने गुटखा फेंक दिया। तब मुनिश्री ने कहा—मुझे देखकर फेंकने से कुछ नहीं होगा। इसे छोड़ने से और इसका त्याग करने से होगा।

दीपचंदजी बोले—तो महाराज! करा दीजिए जीवन भर के लिए त्याग। मुनिश्री ने उसी वक्त उन्हें त्याग करा दिये।

मुनिश्री ने दीपचंदजी को धर्म तत्त्व समझाया और उसकी निष्पत्ति सामने आयी कि वे धर्मनिष्ठ एवं सशक्त कार्यकर्ता के रूप में उभरे।

बैंगलोर चतुर्मास में बहुत ही धर्म-प्रभावना हुई।

सुनकी की घाटी

जगदलपुर वालों ने मंगलिक सुनी। विजयनगर वालों ने व्यवस्था को संभाला। सामने थी सौ किलोमीटर की सुनकी की घाटी। घाट को आठ दिनों में पार करना था। मन में अमित उत्साह था। तीनों संत और साथ में युवक भी मुनिश्री की पैदल सेवा कर रहे थे। जंगल का रास्ता। जंगली पशुओं का घर। दिल की धड़कनों को तेज करने वाली सायं-सायं की आवाज। मन प्रसन्न करने वाली पक्षियों की मधुर-मधुर ध्वनि। वृक्षों से आच्छादित मार्ग। नाना जड़ी बूटियों से निःसृत हवा शरीर को पुष्ट और मन को संतुष्ट करने वाली थी। चारों ओर मनोज्ञ दृश्य। पर्वतारोहण का आनन्द ही अलग होता है। गगनचुम्बी पर्वतों के बीच विहार करना एक यादगार पल बन जाता है। मुनिश्री दस किलोमीटर का विहार कर कोलब देव घाटी पहुंचे। हनुमान मंदिर में विराजे। यह मंदिर ३६४५ फीट की ऊंचाई पर है।

मुनिश्री की यह यात्रा रोमांचकारी थी। वहां का प्राकृतिक दृश्य कश्मीर की याद दिलाता है। सुनकी की घाटी का इतिहास बताता है कि इस खतरनाक घाटी से कभी भी कोई जैन मुनि नहीं गुजरें। सागरमलजी स्वामी ने यात्रा कर एक नया इतिहास रच दिया।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

बेहोश

जल कल-कल ध्वनि करता हुआ बढ़ता रहता है। बहाव में रूकाव, झुकाव, चढ़ाव, घुमाव, ठहराव और फिर बहाव होता है। मुनिश्री यात्रा करते हुए आगे बढ़ रहे थे। यात्रा का आनन्द भी था तो यात्रा की यातना भी थी। आंध्र प्रदेश में मुनिश्री विहरण कर रहे थे। गर्मी का परिषह अत्यधिक था। गर्मी के कारण शरीर क्लान्त सा हो गया। कालहस्ती पहुंचते-पहुंचते सूर्य ने उग्र रूप धारण कर लिया। गांव का नाम भी कालहस्ती, कोई छोटा-मोटा जानवर भी नहीं बलवान हस्ती। काल हस्ती में मणिलालजी स्वामी गर्मी के कारण बेहोश हो गये। उपचार आदि किये गये व थोड़े प्रयत्न के बाद मुनिश्री को होश आ गया। सागरमलजी स्वामी ने मुनि मणि को दवाई आदि दी।

मुनिश्री विहार करते हुए एस. आर. पुरम् पधारे। स्कूल में विराजना हुआ। पुलिस स्टेशन में मुनिश्री का जोरदार स्वागत हुआ। मुनिश्री का प्रभावी प्रवचन हुआ।

मुनिश्री मोमोडूगू पधारें और वहां पर फोरेस्ट बगले में विराजे। नरसापुरम् में बेंगलोर से ज्ञानशाला संघ आया। संघ में ३५० श्रावक-श्राविकाएं थी।

मर्यादा महोत्सव

सागरमलजी स्वामी गुड़ियात्तम पधारें। मर्यादा महोत्सव के कार्यक्रम का आयोजन हुआ। मुनिश्री ने तेरापंथ की मौलिक मर्यादाओं का विशद रूप से विवेचन किया। मर्यादा की महत्ताओं पर विशेष प्रकाश डाला। आचार्य की आज्ञा को अखण्ड रूप से आराधना करने को कहा। गण व गणपति के प्रति सतत समर्पित बने रहने की प्रेरणा दी। मर्यादा महोत्सव का कार्यक्रम सानन्द संपन्न हुआ।

सोना मिल गया

सागरमलजी स्वामी ने मद्रास शहर में साहुकारपेट स्थित तेरापंथ भवन में चातुर्मास किया। मुनिश्री साधना सम्पन्न एवं प्रपन्न योगी थे। मुनिश्री के

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

पास अनेकों व्यक्ति निजी या पारिवारिक समस्या लेकर आते। मुनिश्री उनका यथोचित समाधान कर देते। कई बार लोग कहते कि ऐसे कैसे होगा तो मुनिश्री फरमाते कह दिया न तेरा काम हो जाएगा।

एक बार एक भाई मुनिश्री को अपनी समस्या बताते हुए बोला—महाराज! मेरा इतना तोला सोना था वह गुम हो गया है। कई दिनों से परेशान हूं। कुछ बताईये।

मुनिश्री ने फरमाया—चिंता क्यों करता है। स्वामीजी का जाप करो। भिखू-स्याम के जाप से सब काम सिद्ध होते हैं।

आठ दिन बीते नौवें दिन चोर चुराया हुआ सोना सुनार कि दुकान पर बेच रहा था। उस भाई ने देख लिया। उसके पास जाकर वह भाई बोला—यह जेवर तो मेरा है। कहते है चोर के पांव कच्चे होते है। वह चोर सकपका गया और सारा जेवर वही छोड़ भाग गया। वह भाई जेवर लेकर घर पहुंचा। शाम को सपरिवार मुनिश्री के दर्शन करने पहुंचा। सारी बात निवेदन की।

सागरमलजी स्वामी ने मद्रास चौमासा कर विहार किया। पूज्यश्री ने मुनिश्री का दूसरा चतुर्मास फिर से मद्रास फरमाया। इस बीच आचार्यश्री का संदेश आया, वह इस प्रकार है—

अर्हम्

१०-०३-१९९०

मुनि सागरमलजी आदि संतों ने अच्छा काम किया है। बहुत साहस से लम्बी यात्रा की है। कन्याकुमारी से लेकर अन्य दक्षिण क्षेत्रों में गये हैं। केवल गये ही नहीं क्षेत्रों को संभाला है। लोगों को संभाला है। उससे उनका उत्साह बढ़ा है। दुबारा मद्रास आना है। वहां पूरा काम करना है। समणियां भी आ रही है। वहां अपना केन्द्र चलायेगी। तुम भी उनको मार्गदर्शन देते रहना। मद्रास में रहते हुए पूरे तमिलनाडु को संभालना है। मौका आने पर समणियां भी क्षेत्र की संभाला करेगी।

जैन विश्व भारती **आचार्य तुलसी**

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

अर्हम्

१०-३-१९९०

मुनि सागरमलजी योगक्षेम वर्ष में उपस्थित नहीं हो सके। वहां रहकर योगक्षेम वर्ष का ही कार्य कर रहे हो। शासन की सेवा करना योगक्षेम वर्ष का ही कार्यक्रम है। समय-समय पर हमारे मन में आता कि वे लोग यहां होते तो अच्छा रहता। शासन की सेवा करना, जनता को धर्म ध्यान की प्रेरणा देना महत्त्वपूर्ण कार्य है और वह कार्य पूरा सिघाड़ा कुशलता के साथ कर रहा है प्रसन्नता।

जैन विश्व भारती **युवाचार्य महाप्रज्ञ**

धर्मस्थला

गांधी नगर, बैंगलोर तेरापंथ भवन में मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण' व साध्वी राजीमतीजी का ऐतिहासिक मिलन समारोह हुआ।

मुनिश्री श्रवणबेलगोला पधारे। भट्टारक चारुकीर्तिजी ने सागरमलजी स्वामी का बहुत सम्मान किया।

मुनिश्री विहार करते हुए धर्मस्थला पधारे। आपकी अगवानी करने धर्मस्थला के धर्माधिकारी श्रीमान वीरेन्द्रजी हेगड़े आये। गंगा हथिनी आई। उसने मुनिश्री को वन्दन किया। मुनिश्री बसन्त महल में विराजे। मुनिश्री की उपासना करने वीरेन्द्रजी हेगड़े व उनका परिवार आया। वीरेन्द्रजी मुनिश्री के विचारों से बहुत प्रभावित हुए। उनकी मां बोली—हमारे भाग्य कितने बलवान है आचार्यश्री हमारे निवेदन किये बिना भी ऐसे विद्वान संतों को भिजवाते है।

धर्मस्थला में मर्यादा महोत्सव के कार्यक्रम का आयोजन हुआ। २१ गांवों से ७०० लोग आये। समाज के अनेकों प्रबुद्ध जन कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। नवकार मंत्र के उच्चारण के साथ कार्यक्रम आरम्भ हुआ। संतों ने अपने विचार व्यक्त किये।

सागरमलजी स्वामी ने फरमाया—हम धर्मस्थल आये। धर्मस्थल की विशेषताओं को जाना। यहां के धर्माधिकारी वीरेन्द्रजी हेगड़े सरल और

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

धर्मनिष्ठ है। जो व्यक्ति धर्मनिष्ठ होता है वह भ्रष्ट नहीं होता। आचार्य भिक्षु ने मर्यादा पत्र लिखा और सभी को एक सूत्र दिया—एक के लिए सब सबके लिए एक। गुरु की आज्ञा का अखण्ड रूप से पालन करना साधु-साध्वियों का परम कर्तव्य है। इस प्रकार मुनिश्री ने अपने विचार व्यक्त किये।

वीरेन्द्र हेगड़े ने अपना भाषण कनड़ भाषा में दिया। जिस का हिन्दी में अनुवाद श्रावक पुठमलजी ने अक्षरसः किया।

कुंदकुंद कुटीर में मुनिश्री ने रात्रि प्रवास किया। वहां के दर्शनीय स्थानों का अवलोकन किया। मुनिश्री की प्रभावी यात्रा से प्रसन्न होकर आचार्यश्री तुलसी का संदेश आया—

अर्हम्

जैन विश्व भारती, लाडनूं

श्रमण सागर!

तुम दक्षिण भारत में बहुत अच्छा काम कर रहे हो। सभी साधु-साध्वियों का तुम्हारे प्रति सौहार्दपूर्ण सद्भाव है। मुनि मणिलाल बहुत मृदु सुकोमल स्वभाव का है, वह थोड़े में द्रवित हो जाता है। उसकी मृदुता सदैव स्मरणीय है। दक्षिण भारत के सभी क्षेत्रों में तुम्हारी अच्छी सराहना है। सभी स्थानों की सुन्दर खबर हैं। जहां भी गये हो अच्छा कार्य किया है। संघ की प्रभावना हुई हैं। आशा से अधिक तुम्हारा दक्षिण-प्रवास सफल रहा, प्रसन्नता।

आचार्य तुलसी

गुरुदर्शन

सागरमलजी स्वामी ने छह वर्ष तक दक्षिण भारत की यात्रा की। दक्षिण भारत में धर्मोद्योत भी बहुत किया। अनेकों-अनेकों लोगों को तेरापंथ से जोड़ा। दक्षिण भारत की प्रलम्ब यात्रा सम्पन्न कर मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण', मुनि मणिलालजी स्वामी और अमृतकुमारजी स्वामी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

ने परम पूज्य गुरुदेव तुलसी के दर्शन किये।

परम पूज्य आचार्यश्री तुलसी ने आपकी सफलतम यात्रा पर अपने उद्‌गार व्यक्त किये। अक्षय तृतीया के दिन २२१ पारणे हुए। लगभग पच्चीस हजार लोगों की परिषद में सागरमलजी स्वामी का चातुर्मास सरदारशहर फरमाया।

इतिहासकार

सरदारशहर चतुर्मास सम्पन्न कर पाली चतुर्मास के लिए विहार करते हुए मुनिश्री बगड़ी पधारे। तेरापंथ का ऐतिहासिक स्थल बगड़ी जहां पर आचार्य भिक्षु ने अभिनिष्क्रमण किया। चैत सुदी नवमी का पावन दिन, सागरमलजी स्वामी के सान्निध्य में भिक्षु अभिनिष्क्रमण दिवस का कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिस स्थान पर आचार्य भिक्षु ने बैठकर पूरी रात जगाई थी उसी स्थान पर मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण', मुनिश्री मणिलालजी स्वामी आदि संतों ने बैठकर पूरी रात जगाई। उस दिन भयंकर आंधी व बरसात भी आयी।

आचार्य भिक्षु समाधि स्थल पर सागरमलजी स्वामी पधारे। समाधिस्थल के पार्श्व में स्थित भवन में विराजे। भिक्षु तपोभूमि पर अक्षय तृतीया पारणा महोत्सव का कार्यक्रम आयोजित हुआ। बाहर से काफी लोग आये। तीन पारणे हुए। मुनिश्री ने तपस्या के साथ आचार्य भिक्षु के प्रति अपने विचार व्यक्त किये।

इतिहास को पढ़ना आसान है पर इतिहास को रच देना बहुत ही कठिन है। आचार्य भिक्षु ने ऐसा ही महान कार्य किया और ऐसा तत्त्व संसार को दिया कि उनका इतिहास बन गया। उन्हीं महामना आचार्य भिक्षु को सागरमलजी स्वामी ने भावांजलि अर्पित की। पांच, छह दिन रूककर मुनिश्री ने पाली की ओर विहार कर दिया।

पाली चतुर्मासिक प्रवेश हुआ। पाली में दो तेरापंथ भवन थे एक गांव में तो दूसरा थोड़ा दूर था। गांव वाला भवन बहुत ही छोटा था। और दूसरा भवन पहले से अपेक्षा कृत बड़ा था। सब कुछ सर्वे होने के बाद

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मुनिश्री ने फरमाया—चतुर्मास नये भवन में करने का विचार है। मुनिश्री के विचार सुन समाज के कुछ लोग आपके विचारों से सहमत नहीं हुए। पर मुनिश्री अपने निर्णय के अनुसार नये भवन में चतुर्मास करने पधार गये।

समाज के कुछ लोग कह रहे थे—इस भवन में दर्शनार्थ, प्रवचन श्रवणार्थ लोग नहीं के बराबर ही आएंगे। पर मुनिश्री ने प्रवचन फरमाना शुरू किया तो भवन खचाखच भरने लगा। जहां लोगों के आने की बात नहीं थी वहां लोगों की दिन भर हलचल रहती। मुनिश्री ने उस भवन में पहला चतुर्मास किया। उसके बाद प्रति वर्ष वहां पर चातुर्मास होने लगे। जो लोग कहते थे—इस भवन में चातुर्मास करना उचित नहीं है वे कहने लगे—महाराज आपने इस भवन में चातुर्मास कर बहुत ही अच्छा किया।

सागरमलजी स्वामी इतिहासविज्ञ थे। इतिहास की घटना को स्मृति में रखना और उसे व्याख्यायित करने में आप बड़े ही माहिर थे। इतिहास की घटना को अभिव्यक्त करते समय आपकी भावभंगिमां और कहने का तरीका इतना सरल, सहज और प्रेरक होता कि श्रोता गण इतिहास को सुनते तो ऐसा महसूस करते कि मानो वह अभी-अभी उनके आंखों के सामने घटित हो रहा है।

इतिहास का संरक्षण प्रायः धूमिल होता रहता है। पर तेरापंथ का इतिहास काफी सुरक्षित रहा है। शासन महास्तम्भ मुनिश्री हेमराजजी स्वामी ने इतिहास को सुरक्षित रखा और फिर उस इतिहास को जयाचार्यश्री ने लिपिबद्ध कर पूर्ण तया सुरक्षित कर दिया। कालुजी स्वामी (बड़ा) ने भी बड़े संतों से सुन इतिहास को लिपिबद्ध किया। तुलसी युग में मुनिश्री नवरत्नमलजी स्वामी, बुद्धमलजी स्वामी द्वारा इतिहास का अच्छा प्रस्तुतिकरण हुआ।

पाली चतुर्मास में सागरमलजी स्वामी ने इतिहास पर प्रवचन दिये। मुनिश्री के प्रवचनों को रेकॉर्ड कर ऐतिहासिक घटना को सुरक्षित करने का पालीवासियों ने एक विनम्र प्रयास किया। प्रवचन की कैसेट तैयार हुई। बहुत लोगों ने कैसेटों के सेट खरीदे। वे कुल चालीस कैसेट्स थी। उस

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भारी भरकम कैसेट्स के सेट को चार सीड़ी में परिवर्तित कर दिया गया। वह सीडी आचार्य भिक्षु समाधिस्थल के भिक्षु स्टॉल पर 'तेरापंथ का इतिहास' के रूप में खूब बिकी। उन सीड़ियों को सुन आज भी लोग आनन्द विभोर हो उठते है।

अनासक्त

पाली चतुर्मास में मुनिश्री की प्रेरणा पाकर युवक परिषद ने संघीय गीतों का सुन्दर संकलन किया। संकलन के पश्चात युवकों ने सोचा—इस संकलन को जन-जन तक पहुंचना चाहिये। इस संकलन को हमें पुस्तकाकार में प्रस्तुत करना चाहिए। पर असमंजसता थी कि इस पुस्तक का नाम क्या रखें ? युवक मुनिश्री के पास आयें। मुनिश्री से पूछा।

सागरमलजी स्वामी ने चिन्तन पूर्वक बताया—'अनासक्त'।

उस पुस्तक का नाम 'अनासक्त' रखा गया। यह पुस्तक बहुत लोकप्रिय हुई। अब तक इसकी ५०००० से भी अधिक प्रतियां बिक चुकी है। और अब भी इस पुस्तक की लोकप्रियता बरकरार है।

व्याख्यान

सागरमलजी स्वामी पाली चतुर्मास कर विचरण करने लगे। आचार्यप्रवर ने आपका चातुर्मास बालोतरा फरमाया। मुनिश्री ने उस ओर विहार कर दिया। आप विहार करते हुए पचपदरा पधारे। पचपदरा में नगर प्रवेश हुआ। मुनिश्री ने व्याख्यान फरमाया। बहुत लोगों ने व्याख्यान श्रवण किया।

दोपहर में कुछ मंदिरमार्गी साध्वियां आयी। मुनिश्री के दर्शन किये। प्रारंभिक वार्ता के पश्चात एक साध्वीजी बोली—मुनिश्री मैंने सुना है आप व्याख्यान बहुत अच्छा देते है। हमारी इच्छा है हम आपका व्याख्यान श्रवण करें। आपकी आज्ञा लेना चाहती है।

मुनिश्री ने फरमाया—इसमें आज्ञा की क्या बात, आप तो हमारी बहनें है। आप निःसंकोच व्याख्यान सुन सकती है।

अगले दिन जब वे साध्वियां आयी तो मुनिश्री के पार्श्व में लगी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कुर्सियों पर बैठने के लिए इनकार करते हुए बोली—हम मुनिश्री के सामने कुर्सी पर कैसे बैठे। यूं कह साध्वियां नीचे बैठ गयी।

मुनिश्री लगभग पचपदरा पन्द्रह दिन विराजे। साध्वियों ने लगभग बारह या तेरह दिन तक व्याख्यान श्रवण किया।

सागरमलजी स्वामी की व्याख्यान की शैली रोचक व आकर्षक थी। आप व्याख्यान देने से पहले यह देख लेते परिषद कैसी है, जैसी परिषद वैसा व्याख्यान फरमा देते। विषय को प्रतिपादित करने की शैली आपमें अनूठी थी। एक ही विषय पर आप ऐसा फरमाते कि वह व्यक्ति के अंतस को झकझोर देती। व्याख्यान श्रवण कर्ता अपने जीवन पर दृष्टि डालकर यह सोचता कि मुनिश्री ने बात तो सही कही। हमें परिष्कार की बहुत आवश्यकता है।

बालोतरा चतुर्मास में सागरमलजी स्वामी ने 'माला' इस विषय पर चार महिनों तक व्याख्यान दिया। एक ही विषय को इतना लम्बा चला देना मुनिश्री के प्रखर प्रवचनकार होने का द्योतक था।

अस्वस्थ

सागरमलजी स्वामी रतलाम चतुर्मास के लिए पधारें। रतलाम के आसपास के क्षेत्रों में विहरण करते हुए मुनिश्री भाटीबडोदिया पधारें। रमेशजी कोठारी (मेरे संसारपक्षीय पिताजी) के घर में विराजे। पूरे परिवार ने दर्शन सेवा का लाभ लिया।

उस समय मैं नादान बच्चा था। उम्र लगभग चार वर्ष थी। मुनिश्री की मैंने काफी देर सेवा की।

मणिलालजी स्वामी आज भी फरमाते है—सुबह सुबह हमारे दर्शन करने चड़ी बनियान में आया था।

मुझे आज भी थोड़ा-थोड़ा याद आता है। मैंने मुनिश्री की पैदल कुछ दूर तक सेवा की थी।

सागरमलजी स्वामी रतलाम पधारे। रतलाम के उपनगरों में विराजते हुए काटजू नगर पधारे। मुनिश्री जिस मकान में विराजे उस मकान में एक

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

काला सांप रहता था। मुनिश्री ने एक जड़ी धागे से बांध कर दरवाजे पर लटका दी।

अब वह सांप मुनिश्री जिस कमरे में विराज रहे थे उसके आस-पास घूमता पर अंदर कमरे में नहीं आता।

सेठजी का बाजार, तेरापंथ भवन में मुनिश्री का प्रवेश हुआ। कुछ ही दिनों बाद मुनिश्री अस्वस्थ हो गये। अस्वथतता बढ़ती गयी। शारीरिक निर्बलता, बैचेनी और अनिद्रा की समस्या उत्पन्न हो गयी।

आपकी अस्वस्थता देख मणिलालजी स्वामी दुश्चिन्त्य एवं अधीर हो उठे।

वैद्य और डॉक्टरों ने भी आपको देखा। पर कोई भी बीमारी सामने नहीं आयी। आखिर समस्या का समाधान सामने आया। यहां का जल वायु आपके शरीर के अनुकूल नहीं थी।

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का संदेश आया। मुनिश्री को राजस्थान आने की आज्ञा प्रदान की।

सूचना प्रभारी

सागरमलजी स्वामी का दृष्टिकोण रहता—सामाजिक व संघीय स्थितियां यदि अनुकूल रहती है तो संघपति भी निश्चिन्त रहते है। सागरमलजी स्वामी विज्ञ और गंभीर थे। मुनिश्री परिस्थिति का आकलन कर निर्णय करते। मुनिश्री आचार्यश्री की दृष्टि की आराधना करते हुए तदनुरूप कार्य करते। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी सागरमलजी स्वामी की विशेषताओं से सुपरिचित थे, उन्होंने गंगाशहर मर्यादा महोत्सव पर 'सूचना प्रभारी' के रूप में आपको नियुक्त किया।

नमिऊण यंत्र

परम पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाप्रज्ञ के साथ मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण' ने दिल्ली चातुर्मास किया।

रात्रि के समय सागरमलजी स्वामी इतिहास पर प्रवचन दिया करते थे

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

एक दिन आचार्य भिक्षु के इष्ट मंत्र की चर्चा करते हुए मुनिश्री ने कहा—आचार्य भिक्षु नमिऊण मंत्र के आराधक थे। वे नमिऊण मंत्र की सयंत्र साधना करते थे। स्वामीजी का वह यंत्र तपस्वी भागचंदजी स्वामी के पास आया। वहां से इधर-उधर घूम फौजी लाठ के पास आया। उनके बाद भीमजी स्वामी के पास आया। भीमजी स्वामी से गुणचंदलालजी स्वामी ने मांगा। फिर वह यंत्र उनके पास रहा। तब मैंने (श्रमण-सागर) स्वामीजी के उस सिद्ध यंत्र को देखा। आचार्य भिक्षु सिरियारी नदी में जब आतापना लेते तब नमिऊण मंत्र की यंत्र के साथ साधना करते.....।

यह प्रसंग संतों ने आचार्यश्री को निवेदन कर दिया। आचार्यवर ने सागरमलजी स्वामी को याद किया। मुनिश्री आचार्यश्री की सेवा में उपस्थित हुए। आचार्य ने पूछा—सागरमलजी वह नमिऊण यंत्र का पत्र कहां है?

मुनिश्री ने कहा—मुझे नहीं पता?

आचार्य ने स्मित मुस्कान व विनोदी लहजे में फरमाया—तो बिना अते-पते की बात ही क्यों छेड़ी?

सागरमलजी स्वामी ने निवेदन किया—पत्र के अते-पते के लिए तहकीकात की जाये तो गुणचंदलालजी स्वामी के स्वर्गवास के बाद उनका पूठा मुनि राजकरणजी ने संभाला होगा। पूठा आचार्यश्री तुलसी के चरणों में आया होगा । उसका निरीक्षण मुनि मधुकरजी ने किया होगा ।

बात के खोज, पानी में थे। उस सिद्ध गाथा यंत्र को ढूढना कोई आसान कार्य नहीं था। सागरमलजी स्वामी की विशेषता थी कि जब भी वे इतिहास के संदर्भ में फरमाते तब लोगों को विशेष घटना क्रम से अवगत कराते।

नमिऊण यंत्र अब कहां है? इसका कोई पता नहीं। मिल जाये तो हमारा परम भाग्य, नहीं मिले तो समझना चाहिये वह अनन्त में विलीन हो गया।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

योग प्रयोग

मुनि सागरमलजी स्वामी की योग साधना से मुनि जयकुमारजी स्वामी बहुत प्रभावित थे। सिरियारी में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का पावन प्रवास हो रहा था। मुनिश्री जयकुमारजी स्वामी अच्छे योगी संत है। योग प्रयोग करते हुए मुनिश्री जयकुमारजी ध्यान की गहराईयों में प्रविष्ट हो गये। एक दिन बीता फिर दूसरा दिन और क्रमशः तीसरा पूरा हुआ व चौथा दिन शुरू हुआ। कईयों ने मुनिश्री को ध्यान की गहराईयों से वापस लाने का प्रयत्न किया। पर सफलता नहीं मिली। ध्यान कि दुनिया से वापस लाना हर किसी के हाथ की बात नहीं है। ध्यान के रंग में जिसका मन रंजित हो जाता है वही ध्यान के आनन्द को जान सकता है अस्तु।

जय स्वामी ध्यान की गहराईयों में रमण कर रहे थे। उन्हें वापस बाहर लाना भी अति आवश्यक था। सागरमलजी स्वामी ने भी अपनी ओर से प्रयास करना प्रारम्भ किया। उनके हाथ में पूंजनी थी। मुनिश्री ने पूंजनी लेकर उनके सिर पर जोर से मारी कि वे ध्यान से बाहर आ गये।

विशेष साधना

सागरमलजी स्वामी दो वर्ष तक बोरावड़ विराजे।

मुनिश्री ने कुछ विशेष साधना भी की। मुनिश्री योगी थे वे योग करने के लिए विविध प्रयोग करते समय का सदुपयोग करते। योग (मन, वचन और काया) को स्थिरीकरण करने का प्रयास करते।

मुनिश्री साधना-आराधना के साथ व्याख्यान, सेवा और श्रम भी करते, संतों को भी पढ़ाते। सागरमलजी स्वामी की सेवा में चैतन्य मुनि रहे। वे मुनिश्री के सान्निध्य में अध्ययन करते।

चैतन्य मुनि स्वयं बताते हैं कि २००३ के चतुर्मास में मैंने आचार्य भिक्षु से श्रीमद् जयाचार्य तक के इतिहास को सागरमलजी स्वामी के सान्निध्य में पढ़ा। उस समय सागरमलजी स्वामी ने मुझे इतिहास संबंधी जानकारियां बतायी। अमुक घटना घटी इसका क्या कारण था आदि अनेक रहस्यों को उजागर किया। मैं (चैतन्य मुनि) मानता हूं सागरमलजी स्वामी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

का मेरे जीवन में अनन्त उपकार रहा है।

चैतन्य मुनि कहते है—मुझे जब-जब भी सागरमलजी स्वामी का सान्निध्य प्राप्त हुआ कुछ न कुछ नई प्रेरणा, नया ज्ञान प्राप्त हुआ।

सिरियारी प्रवेश

सागरमलजी स्वामी बोरावड़ से पाद विहार करते हुए सिरियारी की और पधारने लगे। आपको पहुंचाने के लिए भूपेन्द्र कुमारजी स्वामी आये।

मुनिश्री की अवस्था ७८ साल की थी। मणिलालजी स्वामी को भी चलने में कठिनाई होती। मुनि मणि विश्राम के लिए बार-बार रुकते। इस प्रकार छोटे-छोटे विहार करते हुए मुनिश्री ने सिरियारी प्रवेश किया।

सागरमलजी स्वामी व मणिलालजी स्वामी की सेवा भूपेन्द्र मुनि ने समर्पित भाव से की। मुनिश्री पद्मकुमारजी ने भी जागरूकतापूर्वक सेवा की।

सागरमलजी स्वामी को सिरियारी पहुंचाकर भूपेन्द्र मुनि ने विहार किया।

मुनिश्री ने २८ जून, २००४ सोमवार को आचार्यश्री महाप्रज्ञ, युवा मनीषी युवाचार्य महाश्रमण के दर्शन किये।

संत मंडली

आचार्य भिक्षु द्विशताब्दी वर्ष सिरियारी में मनाया गया। पर्युषण में मुनिश्री ने इतिहास पर प्रवचन आरम्भ किया। जब आप आचार्य भिक्षु के बारे में फरमाते तो लगता कि हम भिक्षु युग को अपने सामने देख रहे हैं। मुनिश्री जयाचार्य के बारे में कहते तो लगता हम जय युग को मानो अपनी आंखों के सामने देख रहे हैं।

युवामनीषी युवाचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में मुनिश्री ने इतिहास के संदर्भ में प्रवचन दिये।

शाम को प्रतिक्रमण के पश्चात् सागरमलजी स्वामी के आसपास संत मंडली आकर बैठ जाती। संतजन इतिहास के विषय में आपसे प्रश्न करते

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

और मुनिश्री समाधान के साथ इतिहास के रहस्य को उजागर करते।

संतों को तत्त्वज्ञान सिखाते। उनकी जिज्ञासाओं का उपशमन करते। अपने जीवन घटना प्रसंगों को भी बताते।

समागत सभी संतों को प्रसन्न मन से समाधान देते। उन्हें प्रेरक व उद्‌बोधक घटनाएं सुनाते। मुनिश्री की कृपा पाकर संत आप्यायित हो उठते।

यंत्र-मंत्र-तंत्र

सागरमलजी स्वामी यंत्र-तंत्र और मंत्र में गहरी अभिरुचि रखते थे। मुनिश्री का इन तीनों शास्त्रों पर श्रेष्ठ अधिकार था। मुनिश्री की गणित बहुत ही अच्छी थी। यंत्र शास्त्र में गणित का महत्त्व बहुत है। अधिकांश यंत्रों में अंक होते हैं। अंकों की समानता होने पर वह यंत्र उपयोगी व कारगर माना जाता है। मुनिश्री यंत्र को देखकर फरमा देते कि यह यंत्र गलत है और गलत यंत्र को सुधार कर भी बता देते। मुनिवर ने मंत्र शास्त्र का अध्ययन भी किया व साधना भी की। मुनिश्री मंत्र में छुपे रहस्यों को तत्काल पकड़ लेते। मुनिश्री को मंत्र के आगे पीछे लगने वाले बीजाक्षरों का अच्छा ज्ञान था। बीजाक्षरों के द्वारा हम शारीरिक, मानसिक चिकित्सा भी कर सकते हैं। बीज मंत्र-यंत्र की शक्ति को द्विगुणित कर देते है। मुनिश्री मंत्र के बारे में कई बार फरमाया करते—व्याधिग्रस्त व्यक्ति की व्याधि देखकर उसके अनुपात की दवाई उसे दी जाती है। ठीक इसी प्रकार किसी मंत्र को किसी भी पुस्तक में देखकर तत्काल जाप शुरू नहीं करना चाहिये। जाप गुरु, संत या साधक द्वारा प्रदत्त हो तो वह लाभदायक व अभीष्ट की पूर्ति करता है और अनिष्ट से बचाता है।

सांसारिक जीव किसी न किसी दुःख से आक्रान्त रहता है। इसी कारण वह अशान्त सा रहता है। व्यक्ति दुःख निवारण के लिए धर्म के क्षेत्र में प्रविष्ट होता है। आध्यात्मिक मंत्रों का जाप कर सुख को प्राप्त करता है। मंत्र के जाप से उसे संबल मिलता है। वह निर्बल से सबल बन जाता है। मंत्र का आलम्बन लेकर व्यक्ति साधना करता हुआ सिद्धि के द्वार तक पहुंच जाता है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

सागरमलजी स्वामी के पास बहुत लोग आते। अपनी समस्या बताते। मुनिश्री समाधान देते। और वे साधना के द्वारा अपनी समस्याओं से राहत पाते।

मुनिश्री द्वारा प्रदत्त मंत्र का जाप कर हजारों-हजारों लोग लाभान्वित हुए।

तंत्र शास्त्र का सागरमलजी स्वामी को विशद् ज्ञान था। वे कई बार जड़ी बूटी आदि देखकर बता दिया करते कि यह क्या काम आती है। तंत्रशास्त्र के बारे में उनके पास यत्र-तत्र लिखी जानकारी भी थी। मुनिश्री ने प्राच्य विद्याओं से समृद्ध अनेकों-अनेकों ग्रन्थों को देखा। कई ग्रन्थों का पारायण भी किया।

मुनिश्री ने यंत्र-मंत्र और तंत्र पर आधारित दो बड़े-बड़े ग्रन्थ लिखे। वे हस्तलिखित ग्रन्थ सिरियारी चातुर्मास में परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी को भेंट कर दिये गये।

वीरेन्द्रजी हेगड़े

धर्म स्थल के धर्माधिकारी वीरेन्द्रजी हेगड़े सिरियारी चातुर्मास में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के दर्शन करने आये। पूज्यश्री के साथ आपकी विशेष वार्तालाप हुई। जब वीरेन्द्रजी प्रवचन पंडाल की और जा रहे थे। तब उनकी नजर सागरमलजी स्वामी पर पड़ी। मुनिश्री को देख वीरेन्द्रजी हेगड़े बोले—मुनिश्री! आप यहां?

सागरमलजी स्वामी ने फरमाया—आपको हम याद है।

वीरेन्द्रजी बोले—आपको कैसे भूल सकता हूं। आपकी फोटो मेरे ऑफिस में लगाई हुई है।

मुनिश्री ने कहा—इस बार हम गुरुदेव के साथ ही है।

वीरेन्द्रजी बोले—महाराज! आज आपके दर्शन कर प्रसन्नता हुई।

भिक्षु जीवन झांकी

तेरापंथ द्विशताब्दी पर आचार्य भिक्षु के जीवन संबंधी चित्र बने। पर उनका प्रकाशन नहीं हुआ। कालान्तर में वे चित्र धर्मसंघ से विलुप्त हो गये

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

और किसी गृहस्थ के हाथ में चले गये। संघ में केवल श्वेत-श्याम (ब्लैक एण्ड व्हाइट) फोटो बचे। संघीय फोटोग्राफर सम्पतजी गांधी ने उन श्वेत-श्याम फोटोओं को कम्प्यूटर के माध्यम से रंगीन किया।

भिक्षु जीवन झांकी का काम संपूर्ण हुआ। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् ने तत्परता दिखायी। भादवा सुद तेरस के दिन उस पुस्तक का विमोचन हुआ। आचार्य महाप्रज्ञ ने प्रस्तुत पुस्तक की सराहना की।

भिक्षु जीवन झांकी में आचार्य भिक्षु के जन्म के समय से लेकर दाह-संस्कार तक के लगभग पच्चास से अधिक फोटो है।

अमित वात्सल्य

सिरियारी में मेरी (मुनि कुशल) दीक्षा हुई। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने महत्ती कृपा कर मुझे सागरमलजी स्वामी की सेवा में रखा। यह मेरा अहोभाग्य था। मैं जैसे ही मुनिश्री के पास में आया। मुनिश्री ने मुझे अमित वात्सल्य दिया। जब मैं दोपहर में विश्राम कर के उठा तो मुनिश्री ने मेरे कम्बल पर मेरा नाम बड़े ही सुन्दर अक्षरों में लिख दिया। मुनिश्री पहले दिन से ही मुझे साधु के क्रियाकलापों का ज्ञान चतुराईपूर्वक सिखाने लगे।

दो कल्याणक

सागरमलजी स्वामी शैक्ष संतों को सतत प्रेरणा देते। उनमें सुसंस्कारों का आर्विभाव कैसे हो सकें, वे संघ में दीप्ते हुए साधु कैसे बन सकें यह आंतरिक भावना मुनिश्री की रहती व साथ ही साथ उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित भी करते रहते।

सागरमलजी स्वामी, मणिलालजी स्वामी बाल साधुओं से विशेष लगाव रखते। मुनि मुदितकुमारजी, मुनि आकाशकुमारजी प्रायः मुनिद्वय के पास आकर उपासना करते। मुनिश्री के परिपार्श्व में सो जाते। मुनिश्री से विविध प्रकार के प्रश्न पूछते। मुनिश्री समाधान देते। उन्हें पुराने संघीय धारणाओं से अवगत कराते। प्राच्य ज्ञान के विषय में पूछे गये प्रश्नों का परिमित उत्तर देते। भविष्य उज्ज्वल बनाने के लिए प्रयोग बताते।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मुनिश्री ने सरदारशहर से दिनांक १४.३.२००५ को विहार किया। मुनिश्री शाम को विहार कर ढाणी में पधारे। वहां पर चार पांच किसानों के घर थे। प्रतिक्रमण के पश्चात छोटे-छोटे चार-पांच बालक-बालिकाएं आयी।

मुनिश्री ने फरमाया—कुशलजी! बच्चे आये है इन्हें कहानी सुनाओ।

मैंने मुनिश्री को निवेदन करते हुए कहा—महाराज! मुझे बोलना इतना अच्छा नहीं आता है।

मुनिश्री ने कहा—बोलना तो बोलने से आयेगा, मैं यही बैठा हूं। तुम जाओ सुनाओ। हिम्मत कर मैंने उन ग्रामीण बच्चों को एक कहानी सुनायी। बच्चे बहुत प्रसन्न हुए। मैं आकर मुनिश्री को वन्दना करने लगा तो मुनिश्री ने कहा—तुमने बहुत अच्छे ढंग से सुनाया है इसलिए दो कल्याणक बख्शीश करता हूं। परन्तु बोलने की शैली को इससे अच्छी बनाना होगा।

उस प्रथम सफलता और प्रेरणा ने मेरी हिम्मत को द्विगुणित कर दिया।

ओ. पी. जिन्दल

हरियाणा के उर्जा मंत्री ओमप्रकाशजी जिन्दल का देहांत हो गया था। कुछ ही दिनों के बाद मुनिश्री का हिसार पदार्पण हुआ। मुनिश्री जिन्दल हाऊस पधारें। भीतर प्रवेश करते ही नवीनजी जिन्दल ने मुनिश्री को वंदना की। मुनिश्री को भीतर ले गये। ओमप्रकाशजी जिन्दल की धर्मपत्नी सावित्री जिन्दल ने मुनिश्री के दर्शन किये। मुनिश्री ने उन्हें संबल प्रदान करते हुए कहा—अब तो तुम इस घर में बड़ी हो। तुम्हें हिम्मत रखनी चाहिये। तुमने तो धर्म तत्व को समझा है। संयोग था और अब वियोग हो गया अब तो समत्व भाव को अंगीकार करना चाहिये। मुनिश्री ने सामायिक आदि की भी प्रेरणा दी। सावित्रीबाई ने मुनिश्री को कहा—ऐसे समय पर संबल प्रदान कर आपने बड़ी कृपा कराई।

वृद्धावस्था में सेवा

सागरमलजी स्वामी ने भिवानी चतुर्मास के लिए विहार किया। हिसार

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

से विहार करने से पूर्व ही मणिलालजी स्वामी के बवासीर कि तकलीफ हो गयी थी। किसी तरह विहार करते हुए भिवानी पधारें। रास्ता कठिनाई पूर्वक पार हुआ। उस समय मैंने देखा कि सागरमलजी स्वामी मणिलालजी स्वामी की सेवा कितनी तत्परता के साथ करते थे। मुनिश्री अग्लान भाव से सेवा करते। वे दूसरों की राह नहीं देखते अपितु निष्ठा भाव से सेवा करते। मुनिश्री को वृद्ध अवस्था में जहां सेवा की अपेक्षा रहती है वहां वे स्वयं बड़े निष्काम भाव से मणिलालजी स्वामी की सेवा करते। मैं आपकी स्फूर्ति देख कायल हो जाता। मुझे भी प्रेरणा मिली कि अवस्था चाहे कितनी भी आ जाये पर हो सके जहां तक औरों की सेवा करनी चाहिये।

बीस गाथा

सन् २००५ भिवानी चतुर्मास का प्रसंग है—प्रसंगवश मुनिश्री सागरमलजी स्वामी ने कहा—यदि तुम दो घंटे में दसवेआलियं सूत्र के २० गाथा कंठस्थ कर सुना दो तो तुम जो मांगोगे वह तुम्हें दे दूंगा।

अगले दिन मैंने बीस गाथा कंठस्थ कर ली। फिर मैं (मुनि कुशल) बैठा-बैठा सोचने लगा कि मुनिश्री से क्या मांगूं। महाराज के पास तो बहुत चीज है। मेरे मन में विकल्प उठने लगे—यह मांग लूं, नहीं नहीं यह मांग लू। आखिर में मैंने निश्चय किया मुझे क्या मांगना है।

मैं मुनिश्री के पास गया वन्दना कर बीस गाथा सुना दी। फिर मैंने कहा—मुनिश्री मैं मांगूं।

मुनिश्री ने कहा—बोलो क्या चाहिये।

मैंने कहा—मुनिश्री मेरे ऊपर सदा आर्शीर्वाद बनाकर रखना। मेरी अभीप्सा है मैं आपके पास अंत तक रहूं।

मुनिश्री ने आशीर्वाद देते हुए कहा—ठीक है। प्रसन्नता से रहो विकास करते हुए आगे बढ़ो।

सात महिना पांच पद

भिवानी चतुर्मास के बाद मुनिश्री हांसी पधारे। हांसी श्रद्धा क्षेत्र है। यहां तेरापंथ के घर बहुत है। यहां पर मुनिश्री सात महीना विराजे।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मुनिश्री ने नवकार महामंत्र पर अपना प्रवचन आरम्भ किया। मुनिश्री प्रांजल भाषा में नवकार मंत्र पर प्रवचन करते। प्रवचन सुन जनता आप्यायित हो उठती। उस समय मुनिश्री ने नवकार मंत्र के अनेक रहस्यों को उद्घाटित किया। मुनिश्री ने नवकार मंत्र की जानकारी प्रदान करते हुए कहा—नवकार मंत्र का रचयिता कौन है? इसका प्रादुर्भाव कब और क्यों हुआ? यह आज तक अज्ञात सा विषय बना हुआ है। नवकार मंत्र अपने आप में एक विधाता है। हम नवकार मंत्र का आलम्बन लेकर साधना करते हुए सिद्धि को प्राप्त कर सकते हैं। नवकार मंत्र नित्य पढ़ने वाला साधक आरोग्य, समाधि, लब्धि और उपलब्धि को प्राप्त करता है।

मुनिश्री ने नवकार मंत्र के प्रथम पद के बारे में विश्लेषण करते हुए फरमाया—णमो अरहंताणं के अलावा णमो अरिहंताण, णमो अरूहंताणं, णमो अरोहंताणं, णमो अ-रहं ताणं, णमो अरहताणं इन सभी के भिन्न-भिन्न प्रयोग है जैसे—णमो अरहंताणं—साधना के लिए। णमो अरिहंताणं कर्मों के निकदं (विनाश) के लिए। णमो अरोहंताणं आरोग्य और चित्त शांति के लिए। णमो अ-रहंताणं पूर्वजन्म को जानने के लिए। णमो अरहंताणं विशिष्ट शक्ति या लब्धि की प्राप्ति के लिए इस प्रकार अनेकों-अनेकों प्रयोग जिनके द्वारा हम लाभान्वित हो सकते हैं।

इस प्रकार मुनिश्री ने नवकार मंत्र के पांच पदों व नवकार मंत्र के रहस्य, साधन और निष्पत्ति तथा बीजाक्षर युक्त नवकार मंत्र के प्रयोग के बारे में बताया।

गुरु कृपा

सन् २००७ का चतुर्मास मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण' ने गुरुदेव के सान्निध्य में किया।

इतिहासवेत्ता मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण' का प्रवचन इतिहास के संदर्भ में होता तो लोग झूम उठते।

पर्युषण पर्व में रात्रिकालीन प्रवचन में मुनिश्री पधारते। इतिहास की घटनाओं को सुनने के लिए इतिहास रसिकों से पंडाल भर जाता। मुनिश्री

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

घटना को ऐसे ढंग से प्रारम्भ करते की सहसा लोगों का ध्यान प्रवचन की और आकृष्ट हो जाता। इतिहास को सुनाना भी एक कला है। एक व्यक्ति चुटकुला सुनाता है तो भी हंसी नहीं आती और वही चुटकुला दूसरा सुनाता है तो वातावरण ही हास्यमय हो जाता है। मुनिश्री का प्रस्तुति करण ही ऐसा था कि लोग ऐतिहासिक प्रसंगों को सुन भाव विभोर हो उठते।

एक दिन मुनिश्री प्रवचन संपन्न कर पधारें। आचार्य महाप्रज्ञजी पट्टासीन थे। मुनिश्री ने वन्दना की। पूज्यश्री ने फरमाया—तुम्हारा थोड़ा सा व्याख्यान अभी सुना फिर मैंने सोचा—अभी इधर से जाओगे। इसलिए विश्राम न कर बैठ गया।

मुनिश्री ने निवेदन करते हुए कहा—बड़ी कृपा की। अब आप पोढ़ाएं।

आचार्यवर की कृपा पाकर मुनिश्री प्रसन्न हो गये।

अंतिम विहार

परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने मर्यादा महोत्सव पर सागरमलजी स्वामी का चातुर्मास सिरियारी फरमा दिया। मुनिश्री ने दिनांक १.२.२००७ को उदासर से आचार्य महाप्रज्ञजी व युवाचार्यश्री महाश्रमणजी के दर्शन कर विदाई ली।

सागरमलजी स्वामी, मणिलालजी स्वामी हस्तचालित साधन में विराजे। आपको गांव के बाहर तक पहुंचाने के लिए २५ से ३० संत आये। बीच में साध्वीप्रमुखांजी का ठिकाना आया। साध्वियां आयी मुनिश्री के दर्शन किये। मिठाई से भरी एक पात्री साध्वियों ने सागरमलजी स्वामी को दी। मुनिश्री ने अपने हाथों से सभी संतों को मिठाई बख्शायी। उस समय का माहौल उल्लास व आह्लाद से आकीर्ण था।

मुनिश्री ने उदासर से विहार किया और ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए सिरियारी भिक्षु समाधि स्थल पर पहुंचे। यह मुनिश्री का अंतिम विहार था।

सतरंगी चांद

आचार्य भिक्षु का प्रति वर्ष सिरियारी में भिक्षु चरमोत्सव मनाया जाता है। इस प्रसंग पर देश भर से हजारों हजारों लोग अपने आद्यप्रणेता की

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

स्तुति करने के लिए आते है। सन् २००७ का भिक्षु चरमोत्सव सागरमलजी स्वामी के सान्निध्य में होने वाला था। यह प्रसन्नता का विषय था।

मुनिश्री महाप्रज्ञ भवन पधारे। रात्रि में ८.०० बजे के आसपास कार्यक्रम आरम्भ हुआ। बाहर से आये गायक-गायिकाओं ने सुन्दर प्रस्तुति दी। मुनिश्री का मंगल उद्‌बोधन विशाल जन सभा के बीच प्रारम्भ हुआ। मुनिश्री ने कहा—आचार्य भिक्षु एक महान साधक थे। उन्होंने तपस्विनी नदी में आतापना ली थी। अपने आपको उन्होंने तपाया, खपाया। ऐसे महान साधक को हम याद कर रहे हैं, दर्शन की इच्छा व्यक्त कर रहे हैं। दर्शन आप लोगों को करना है? और आप कहे तो इस पर्दे पर स्वामीजी को अभी उतार कर दिखा दूं। हवा रुक जायेगी सब कुछ स्थिर हो जाएगा। क्या उस महाशक्ति से साक्षात्कार करने जितनी आपमें क्षमता है? इस परदे पर स्वामीजी अभी पधार जाएंगे। पर हिम्मत आप लोगों को रखनी होगी।

मुनिश्री अपना उद्‌बोधन प्रदान कर ही रहे थे कि तेरस का चांद सतरंगी चांद बन गया। उस सतरंगी चांद को देख लोग कहने लगे—आचार्य भिक्षु इसमें दिख रहे हैं। कई लोग खड़े होकर ॐ भिक्षु जय भिक्षु का जाप करने लगे। वह सतरंगी चांद केवल सिरियारी में दिखा। बम्बई, मद्रास, कलकत्ता, आसाम, हिसार आदि जगह लोगों ने मोबाईल पर फोन कर अपने ज्ञातिजनों को बताया कि आसमान में सतरंगी चांद दिख रहा है वे लोग उठे भी सही पर उन्हें सतरंगी चांद दिखाई नहीं दिया। यह सौभाग्य केवल सिरियारी तक ही सीमित था।

मुनिश्री ने चरमोत्सव पर दो गीतों की रचना की। मुनिश्री ने जिस गीत का संगान किया उसका ध्रुव पद इस प्रकार है—

स्वामी जी! सिरियारी बुलावे जी
सिरियारी लेवे बारणा.....

गीत के साथ मुनिश्री ने अणचीबाई की गुलराब वाली घटना भी सुनायी। यह घटना अपने आपमें ऐतिहासिक घटना थी। मुनिश्री के फरमाने से पूर्व यह घटना प्रायः कम लोगों को ही पता थी।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

श्रम

सागरमलजी स्वामी को नवां दशक चल रहा था। वृद्धा अवस्था आ जाने के बाद भी मुनिश्री की कार्य करने की अद्‌भूत शैली थी। मुनिश्री के प्रत्येक कार्य में चातुर्य का निदर्शन होता। मुनिश्री कपड़ों की बहुत ही बारीक सिलाई करते। समाचार पत्र, लेखन आदि कार्य करते समय चश्में का प्रयोग बहुत ही कम करते। अधिकांशतया आपका काम बिना चश्में के ही निकल जाया करता। मुनिश्री जिस आसन पर आसीन होते उस पर सलवटें आदि नहीं के बराबर होती। प्रतिदिन सुबह-सुबह टहलना, जाप करना, निजी कार्य करना, आगन्तुक लोगों को समझाना, वृद्ध या चलने में जो अक्षम हो उन्हें दर्शन देना, व्रत निपजाना तथा साथी सन्तों के कार्य में हाथ बटाना आदि आदि कार्यों को आप सहजतापूर्वक सम्पादित करते।

कई बार मैंने देखा कि दोपहर में हम सब विश्राम करते तब उस समय यदि कोई श्रावक दर्शनार्थ आ जाता तो मुनिश्री विश्राम का परित्याग कर पहले आगन्तुक श्रावक को दर्शन देते।

मुनिश्री की भक्त वत्सलता व कार्य के प्रति स्फूर्ति देख हम सभी आश्चर्यचकित से रह जाते। आपकी श्रमशीलता देख सभी को एक प्रेरणा मिलती।

योगी

सागरमलजी स्वामी योगी संत थे। इस जन्म में भी आपको योग साधना करने का ऐसा ही सहज अवसर मिल गया। मुनिश्री की ललाट की रेखाएं योगसाधना की द्योतक थी। योग साधना में मुनिश्री ने बहुत ही पारंगतता पायी। मुनिश्री के पास अनेकों योगी आते और चर्चा करते। क्योंकि योगी की भाषा योगी ही समझ सकता है।

मुनिश्री जयकुमारजी स्वामी सागरमलजी स्वामी की साधना से बहुत प्रभावित थे। सागरमलजी स्वामी जब राज (आचार्यवर की सन्निधि) में आते तब जय मुनि विश्राम के लिए मुनिश्री के पास में आते और जहां

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मुनिश्री विश्राम करते वहां पर आकर बैठ जाते और रात्रि भर बैठे-बैठे ध्यान करते। कई संत और सतियां व समणियां मुनिश्री के दर्शन करते तथा योगाराधना के गुर सिखकर जाते।

सागरमलजी स्वामी के पास दिव्य शक्तियां आती यह गुप्त सच्चाई है। भाईजी महाराज के अलावा भी उनके पास कोई न कोई आता था। कई साधक श्रावक आते वे मुनिश्री से योग साधना के बारे में पूछते। मुनिश्री उन सबका मार्ग प्रशस्त करते। उन्हें आगे बढ़ने के लिए आलम्बन देते।

जो व्यक्ति स्थिर योग की साधना आरम्भ कर देता है वह योग के शिखरों को छू लेता है। मुनिश्री केवल साधक ही नहीं थे। उनकी साधना में सिद्धि के पुट का स्पष्ट दर्शन होता था। मुनिश्री ने साधना सिद्धि के द्वार तक पहुंचाई थी। इसी कारण मुनिश्री का प्रभावी व ओजस्वी व्यक्तित्व था।

हमारे जैसे भाव होंगे वैसा ही स्राव होगा और जैसा स्राव होंगा वैसे ही भाव होंगे। जैसे भाव होंगे वैसा ही स्वभाव होगा और जैसा स्वभाव होगा वैसा ही हमारा प्रभाव होगा। भावों का शुद्धिकरण योगसाधना के द्वारा सहज व सरलता के साथ धीरे-धीरे किया जा सकता है। साधना के प्रभाव से आभामण्डल शुद्ध होता है और जिसका आभामण्डल शुद्ध होने लगता है वह भूमण्डल पर सभी को प्रिय लगने लगता है। प्राच्य युग में ऋषि मुनियों के आभामण्डल के प्रभाव से खुंखार जंगली जानवर भी पास में आते ही शांत चित होकर बैठ जाते। अस्तु! सागरमलजी स्वामी के स्थिर योग का एक उदाहरण। सन् २००८ भाद्रवा सुद तेरस को सागरमलजी स्वामी लगभग आठ घंटे से भी ज्यादा एक ही आसन में विराजे रहे। इतने लंबे समय तक एक आसन में बैठना एक वृद्ध व्यक्ति के लिए बहुत ही मुश्किल होता है।

गौरव

सागरमलजी स्वामी सिरियारी में विराज रहे थे। मुमुक्षु गौरव (लाडनूं) ने मुनिश्री के दर्शन किये। मुनिश्री को दीक्षा सम्बन्धी जानकारी दी। मुनिश्री ने प्रसन्न चित्त मुद्रा में कहा—अड़सठ वर्ष पहले मैंने दीक्षा ली

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

और अब अड़सठ वर्ष के बाद कोठारी कुल में फिर से दीक्षा हो रही है। मुनिश्री ने आगे कहा—गौरव! दीक्षा लेकर शासन का गौरव बढ़ाना। विनय हमारा मूल धर्म है। आचार्य भिक्षु ने भी हमें यही सिखाया।

मुमुक्षु गौरव—तहत्! कृपा करायी।

इस प्रकार मुनिश्री ने और भी शिक्षा प्रदान की। मुनि गौरवकुमारजी संसार पक्ष में मुनिश्री सागरमलजी स्वामी के पोते हैं।

समय प्रबन्धन

भगवान् महावीर ने कहा—'इणमेव खणं वियाणिया' अर्थात् यही क्षण उपलब्धि का है। हर क्षण का हम सदुपयोग कर बहुत कुछ प्राप्त कर सकते है। जीवन में सफल वही हो सकता है। जो कुछ करके दिखाता है। जो भी महापुरुष हुए है उन्होंने साधना का स्वेद बहाया है तभी वे महापुरुष बन सके।

सागरमलजी स्वामी में समय प्रबन्धन का अच्छा गुण था। समय पर काम करना मुनिश्री को अच्छा लगता। मुनिश्री खाली तो नहीं के बराबर विराजते। दिन भर कुछ न कुछ करते रहते। निष्क्रिय होकर बैठना मुनिश्री को उचित नहीं लगता।

समय पर कार्य को संपादित करना मुनिश्री का क्रम था। समय पर अमुक कार्य करना तो करना ही है। सिरियारी में मुनिश्री के सान्निध्य में आखातीज का कार्यक्रम शुरू होने वाला था। उससे पूर्व मुनिश्री ने मुझसे पूछा—कुशलजी! कार्यक्रम कितनी बजे पूरा करना है?

मैंने कहा—महाराज! साढ़े दस बजे पूरा करना है।

कार्यक्रम समय से थोड़ा लेट शुरू हुआ। साढ़े दस बजने में पांच मिनट बाकी थे। मुनिश्री का व्याख्यान प्रारम्भ हुआ ओर पांच मिनट में समाप्त।

हम सभी ने मुनिश्री से निवेदन किया। मुनिश्री थोड़ा और फरमायें। मुनिश्री ने कहा—मुझे साढ़े दस बजे समाप्त करने का कहा था। मैंने ठीक साढ़े दस बजे अपनी बात पूरी कर दी।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मणिलालजी स्वामी, माणकचंदजी धोका ने भी निवेदन किया। पर मुनिश्री ने मनाही कर दी।

लोगों में बहुत अच्छी प्रतिक्रिया रही। कई लोगों ने कहा—मुनिश्री ने समय पर प्रवचन संपन्न कर बहुत अच्छा किया।

समय बहुत ही मूल्यवान है। समय पर समय का सदुपयोग कर लिया जाये तो समय सार्थक हो जाता है। समय का जो सम्मान करता है उसे समय सम्मानीय बना देता है। अमुक कार्य इतने बजे तक पूरा करना है तो करना ही है। व्यक्ति का दृढ़ संकल्प उसे ऊंचाईयों तक पहुंचा देता है। यदि हम वर्तमान की पूजा करेंगे तो वर्तमान हमें पूजनीय बना देगा।

आचार्यश्री तुलसी

एक भाई ने सागरमलजी स्वामी के दर्शन किये। वन्दना कर मेरे पास आया और बोला महाराज! मुनिश्री आचार्यश्री तुलसी जैसे लगते है। मुनिवर के दर्शन करते समय मुझे लगा मानो मैं आचार्यश्री तुलसी के ही साक्षात् दर्शन कर रहा हूं।

मैंने कहा—यह बात आप ही नहीं अनेकों-अनेकों लोग कहते है। दरअसल मुनिश्री संसार पक्ष में गुरुदेव तुलसी के ननिहाल परिवार से संबंधित है। अतः चेहरा पूज्य गुरुदेव से मिले यह तो सहज बात है।

सागरमलजी स्वामी के शरीर में कई शुभ लक्षण थे जैसे—

१. बड़े बड़े कान और कानों पर केश।

२. तेजस्वी आंखें।

३. दाहिनी आंख के पास बड़ा काला मस।

४. दाहिनी ललाट पर छोटा सा मस।

५. गले में तीन प्रलंब रेखाएं।

६. हाथों में अति उत्तम रेखाएं।

७. सिंहाकृति सा पेट।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

८. मुनिश्री की प्रबल भाग्यशालिता की द्योतक उनके पांव में स्पष्ट निर्दोष पदम रेखा थी। ऐसी रेखा किसी-किसी के होती है। इसके अलावा भी मुनिश्री के शरीर में अनेक शुभ लक्षण थे।

आहार

सागरमलजी स्वामी के छोटे-मोटे कई त्याग किये हुए थे। उनमें से एक था—अपने लिए खाने संबंधि कोई भी वस्तु नहीं मंगाना। मुनिश्री कभी भी गोचरी वालों से कहकर आहार नहीं मंगाते। हालांकि इस प्रकार के त्याग को पालना बहुत ही कठिन है पर मुनिश्री ने इस त्याग को लगभग ४० साल तक निभाया।

मुनिश्री तपस्वी भी थे। सागरमलजी स्वामी ने उपवास से लेकर अठाई की तपस्या की। वि.सं. २०३८ के बाद मुनिश्री सागरमलजी स्वामी व मुनिश्री मणिलालजी स्वामी ने कई वर्षों तक एकान्तर तप सावन-भादवा में किये।

तप की आराधना के साथ मुनिश्री विशेष साधना भी करते। तपस्या के द्वारा कर्मों को तिलांजलि दी जा सकती है। अपने आपको नैष्कर्म्य बनाया जा सकता है।

रचना

सागरमलजी स्वामी ने अपने जीवन में अनेकों-अनेकों गीतों की रचना की और कई गीत बहुत प्रसिद्ध भी हुए।

मुनिश्री की रचना में भाषा का सौष्ठव अनुपम था। मुनिश्री के गीतों में जीवंतता का दर्शन होता है। जब गीत का मधुर संगान होता है तो लोग उन स्वर लहरियों में झूम उठते है। शब्दों का संयोजन मुनिश्री अजब ही करते थे।

सिरियारी में होने वाले प्रति वर्ष भिक्षु चरमहोत्सव के उपलक्ष्य में मुनिश्री ने कई गीतों की रचना की।

काव्य जगत में मुनिश्री की कविताओं ने खूब धूम मचाई। मुनिश्री की एक सुप्रसिद्ध कविता है—

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

दिल की दो बातें कहने दो।
यह अन्तर ध्वनि का स्रोत इसे मत रोको बह लेने दो।
दिल की दो बातें कहने दो।

यह कविता कई बालक बालिकाओं ने प्रोग्रामों में गाकर प्रथम तथा द्वितीय इनाम प्राप्त किया।

कविता के संदर्भ में मुनिश्री की एक पुस्तक है—चिरन्तन-चिन्तन।

सागरमलजी स्वामी ने सिरियारी में इतिहास के संदर्भ में लिखना प्रारम्भ किया। उन्होंने 'भिक्षु भिक्षु म्हारी आत्मा पुकारें' इस एक ढाल पर एक पुस्तक लिखी। इसमें आचार्य भिक्षु के स्मरण मात्र से होने वाले चमत्कारों के बारे में बताया। पुस्तक की भाषा सरल है। पाठक एक घटना को पूरा नहीं पढ़ पाता है कि मन दूसरी घटना को पढ़ने के लिए स्वतः आतुर हो उठता है। भिखू स्याम पुस्तक के आशीर्वचन में आचार्य महाप्रज्ञजी लिखते है—

मुनि सागरमलजी कलाकार हैं। उनमें रचना, लेखन और वक्तृत्व तीनों की कला का समन्वय है। प्रकृति से सरस हैं ओर उनके लेखन में भी सरसता है। प्रस्तुत गीत और उसकी घटनाओं का इतनी सरसता से समाकलन किया है कि पढ़ने वाले का हाथ एक पृष्ट के पूरे होने से पहले ही दूसरे पृष्ट को छूने लग जाता है। सचमुच इस गीत की पुस्तक पाठक के अन्तःकरण का स्पर्श करेगी, यह बिना किसी अतिशयोक्ति से कहा जा सकता है। मुनि सागरमलजी के कार्य में मुनि मणिलालजी का योग सहज होता है। दोनों मुनियों को एक सरस कृति प्रस्तुत करने के लिए साधुवाद देना आवश्यक मानता हूं।

मुनिश्री की यह कृति बहुत ही लोकप्रिय हुई और इसकी लोकप्रियता का प्रमाण यह है कि मात्र तीन चार वर्ष में प्रस्तुत पुस्तक के दस संस्करण छप गये।

कई लोग ऐसे आये। जिन्होंने बताया 'भिखु स्याम' पुस्तक हम सत्ताईस बार पढ़ चुके है और अभी भी पढ़ने में आनंद की अनुभूति होती है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उस समय के युवाचार्य और आज के आचार्य महाश्रमणजी के निर्देश से मुनिश्री ने जयाचार्यश्री द्वारा रचित विघ्न हरण की ढाल को लिखना प्रारम्भ किया। इस कृति में मुनिश्री ने संघ सुरक्षा कमेटी का विवरण दिया है। आचार्य भिक्षु से संबंधित घटनाओं का उल्लेख करते हुए रहस्यों को उजागर किया। तपस्वी संतों के तप की महिमा को बताते हुए उनके जाप के बारे में भी बताया है। आचार्य भिक्षु नवकार मंत्र के अलावा कौन सा जाप करते यह भी इस पुस्तक में उल्लेखित है। इसमें मंत्रों और मंत्रों के प्रयोग के बारे में बताया गया है। आसंग अनेक अनछूए पहलुओं को छूने का विनम्र प्रयास किया गया है। परिशिष्ट में बीज मंत्रों से संबंधित जानकारी भी दी गई। इस कृति का नामकरण ''जय जय जय महाराज'' भी अपने आपमें महत्त्वपूर्ण है।

यह पुस्तक बहुत ही जनप्रिय हुई। लोगों ने इस कृति को पढ़ तेरापंथ इतिहास के अनूठे रहस्यों के बारे में जाना, समझा।

मुनिश्री के लिखने की शैली कुछ इस प्रकार है कि एक बार प्रारम्भ करने के बाद पूरा प्रकरण नहीं पढ़ लेते है तब तक जिज्ञासा बनी ही रहती है कि यह कैसे हुआ? आगे क्या हुआ?

मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण' ने अपने जीवन में बहुविध व्याख्यानों की रचना की। सागरमलजी स्वामी के शब्द होते पर राग कौन सी होनी चाहिये—यह चयन मुनिश्री मणिलालजी स्वामी करते। जहां पर शौर्य का प्रकरण आता वहां पर वैसी ही राग, वैसे ही भाव और जहां पर दुःखद प्रकरण आता वहां तद्नुरूप राग व भाव होते। इसी तरह जहां वैराग्य का प्रकरण आया वहां वैराग्य से वैभवित शब्दों का समावेश होता।

घटना क्रम में जैसे भाव होते वैसे ही मुनिश्री उन्हें भाव गर्भित कर देते।

सागरमलजी स्वामी के व्याख्यान संत-सतियां आज भी उपयोग करते हैं।

मुनिश्री के सभी व्याख्यानों में से एक व्याख्यान बहुत ही बड़ा है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

उसका नाम है महाबल मलया सुन्दरी। उसमें कम से कम पन्द्रह सौ या सौलह सौ पद्य है। यह विशाल व्याख्यान इतना सरस है कि इसे पढ़ने वाला आनन्द विभोर हो जाता है।

मुनिश्री ने साहित्यिक रचनाएं बहुत की। मुनिवर की रचनाएं बहुत विख्यात हुई।

फक्कड़ संत

सागरमलजी स्वामी अत्यंत सरल व भद्र प्रकृति के संत थे। पर साथ ही साथ उनकी फितरत में फक्कड़पन था। वे किसी के बहाव में बहना पसंद नहीं करते। उन्हें जो उचित लगता उसे क्रियान्विति का रूप दे देते। मुनिश्री का चिन्तन प्रारम्भ में कई लोगों को ठीक नहीं लगता पर वे ही बाद में कहते कि मुनिश्री आपका निर्णय सही रहा।

सिरियारी भिक्षु समाधि स्थल पर राजस्थान के बहुत बड़े नेता आये। कई लोग मुनिश्री के पास आये और बोले—महाराज आप भी समाधिस्थल पर पधारें। मुनिश्री ने स्पष्ट शब्दों में कहा—मेरा विचार वहां जाने का नहीं है। वे समाधि स्थल तक जा सकते है तो दर्शन करने के लिए यहां तक भी आ सकते हैं। लोगों ने काफी निवेदन किया। पर मुनिश्री अपने निर्णय पर अटल रहे।

आखिर में वे नेताजी मुनिश्री के दर्शन करने हेम अतिथि गृह में आये। आपके दर्शन किये, वार्तालाप किया व मंगल पाठ सुन कर रवाना हुए।

उनके जाने के बाद वे ही लोग वापस आयें और बोले—मुनिश्री आपका वहां न पधारना ठीक रहा। आप पधार जाते तो शायद वे दो मिनट भी नहीं विराज सकते थे।

मुनिश्री फकड़ संत थे। जो कहना है वह साफ-साफ कहते। दबाव या लुका छिपी को प्रश्रय नहीं देते। मुनिश्री का जीवन खुली किताब के समान था।

थापिवाला संत

सागरमलजी स्वामी साधक संत थे। उनकी यौगिक शक्ति का प्रभाव

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

था कि जब भी कोई व्यक्ति मुनिश्री को वंदना करता मुनिश्री उसे आशीर्वाद फरमाते और वंदन कर्ता का मन सहज ही प्रफुल्लित हो जाता।

मुनिश्री बहिनों को 'जीकारा' व भाईयों को वात्सल्य भरा आशीर्वाद दिराते। मुनिश्री उसे आशीर्वाद दिराते और वंदन कर्त्ता का मन सहज ही प्रफुल्लित हो जाता। आप आशीर्वाद दिराते तो श्रावकों को अनन्य आनन्द की अनुभूति होती। कई श्रावकों को मैंने देखा कि जब तक मुनिश्री आशीर्वाद नहीं देते तब तक वे अपना सिर नहीं हटाते।

कई लोग कहते—आशीर्वाद तो कई संत देते है पर सागरमलजी स्वामी का आशीर्वाद मिलते ही तृप्ति का अनुभव होता है। आपको अनेकों-अनेकों लोग थापिवाला संत कहते थे।

अस्वस्थ

दिनांक २३.६.२०१० सागरमलजी स्वामी के बुखार चढ़ा पर उसे सामान्य बुखार मानकर तीन दिन तक इलाज किया। डॉ. बी. आर. शर्मा आये। खून लिया। लेबोटरी में जांच के बाद रिपोर्ट असामान्य आयी। इलाज शुरू हुआ।

शाम को मुनिश्री ने अल्प आहार ग्रहण किया। फिर मुनिश्री ने पंचमी पधारने की भावना व्यक्त की। हम दोनों संतों ने हाथ का सहारा दिया पर मुनिश्री नहीं उठ पाएं। और देखते ही देखते निचेष्ट से हो गये। या कहना यूं चाहिये अर्ध कौमा में चले गये। मुनिश्री की यह स्थिति देख मणिलालजी स्वामी मानसिक रूप से कमजोर पड़ गये। हमारी दिन चर्या सारी अस्त व्यस्त हो गयी।

डॉ. बी. आर. शर्मा ने प्रकाशजी चौधरी, मनीषजी जैन आदि डॉक्टरों से सम्पर्क कर मुनिश्री का ईलाज प्रारम्भ किया। कम्पाउंडर संदीपजी और भोमारामजी तत्परता से सेवा देने लगे।

वे आठ दिन हमने बड़ी कठिनता से निकाले। नौवे दिन जयचंदलालजी स्वामी पधार गये। ज्ञानेन्द्रकुमारजी स्वामी ने मुनिश्री की सारी व्यवस्थाएं सुचारु की और तन-मन से मुनिश्री की सेवा में लग गये।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मुनिश्री के अस्वस्थता के समाचार तेरापंथ समाज में हवा की तरह फैलने लगे। जगह-जगह से फोन आने लगे। मुनिश्री शीघ्र से शीघ्र स्वस्थ हो यह मंगलकामना करते हुए कई स्थानों पर सामूहिक जाप हुए।

स्थिति की जटिलता को देखते हुए परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मुनिश्री विनयकुमारजी स्वामी के सिंघाड़े को सेवार्थ सिरियारी भेजा। मुनिश्री गिरीशकुमारजी स्वामी ने मुनिश्री की अच्छी सेवा की। वे दिन भर मुनिश्री की सेवा में ही रहते।

दिनांक २३.७.२०१० के दिन मुनिश्री ने अपने कपड़ों की सिलाई की। मुनिश्री जिस गति से अस्वस्थ हुए तो वापस धीरे-धीरे स्वस्थ भी हो गये।

तेरापंथ इतिहास मनीषी

दिनांक २५.७.२०१० सरदारशहर में विराजित परम पूज्य आचार्य महाश्रमणजी ने तेरापंथ स्थापना दिवस के पावन अवसर पर मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण' की विरल विशेषताओं को बताते हुए कहा—मुनिश्री सागरमलजी स्वामी हमारे धर्मसंघ के वयोवृद्ध और विशिष्ट संत है। मुनिश्री को बहुत अच्छा ज्ञान है। इतिहास की घटना को भी आप सरलता के साथ व्यक्त करते है। इतिहास के क्षेत्र में आपने बहुत काम किया है। अभी मुनिश्री सिरियारी में विराज रहे है। मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण' को मैं 'तेरापंथ इतिहास मनीषी' के रूप में स्वीकार करता हूं।

यह समाचार डॉ. बृजराज शर्मा (भिक्षु अस्पताल के डॉक्टर) को मिले। उन्होंने मुनिश्री को निवेदन करते हुए कहा—आचार्यश्री ने आपको 'तेरापंथ इतिहास मनीषी' का अलंकरण दिया है।

मुनिश्री ने कहा—मुझे तो आचार्यवर की कृपा चाहिये। उनकी कृपा ही मेरे लिए सबसे बड़ा अलंकरण हैं। आप आचार्यवर के दर्शन करो तो निवेदन कर देना।

मुनिश्री जब स्वस्थ हो गये तब मैंने पूछा—महाराज! आप अस्वस्थ थे तब भाईजी महाराज आपको दर्शन देने आये थे?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मुनिश्री ने कहा—हां।

मैंने पूछा—उन्होंने क्या फरमाया।

मुनिश्री ने कहा—तुम्हें मैं नहीं बता सकता।

आंखों का ऑपरेशन

सागरमलजी स्वामी के आंखों में मोतियाबिन्द हो गया था। दिखने में थोड़ी कठिनाई महसूस होने लगी। मणिलाल जी स्वामी और डॉ. साहब काफी समय से मुनिश्री के आंखों के ऑपरेशन कराने की चेष्टा में थे। पर कहीं व्यवस्था बैठ नहीं रही थी। समय बीतता जा रहा था।

शासन-गौरव मुनिश्री धनंजयकुमार जी स्वामी सिरियारी पधारें। मुनिश्री की यह कठिनाई धनंजयकुमारजी स्वामी व अक्षय कुमारजी स्वामी को पता चली तो दोनों ही संत इस कार्य को करने में ऐसे जुट गये कि मानो स्वयं की आंख का ही ऑपरेशन करना हो। अक्षय कुमार जी स्वामी के सम्पर्क काम में आये और व्यवस्था हो गयी। एक आंख का ऑपरेशन भी हो गया।

मुनिश्री ने कहा—धनंजयजी! दूसरी आंख का ऑपरेशन होगा तब आपका यहां रहना बहुत जरूरी है।

धनंजय मुनि बोले—आचार्यश्री आज्ञा देंगे तो मैं वापस आ जाऊंगा।

अक्षय मुनि को मुनिश्री ने आशीर्वाद दिया। आकाश मुनि व सुधांशु मुनि ने मुनिश्री की अच्छी सेवा की।

धनंजयकुमारजी स्वामी दूसरी आंख के ऑपरेशन के लिए भरी गर्मी में वापस आये। यह था मुनिश्री के प्रति आत्मीय संबंध अन्यथा वापिस आना इतना आसान नहीं था। मुनिश्री आये व दूसरी आंख का ऑपरेशन हुआ।

मुनिश्री धनंजयकुमारजी स्वामी का योग मिलने पर यह कार्य यथाशीघ्र पूर्ण हो गया। वरना.....

मुनिश्री सागरमलजी स्वामी, मुनिश्री मणिलालजी स्वामी और मुनिश्री

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

धनंजयकुमारजी स्वामी, तीनों ही संतों के आपस में अनन्य आत्मीयता थी। तीनों ही संत आपस में काफी देर तक विचार विमर्श करते रहते। उस समय मुनिश्री धनंजयकुमारजी स्वामी की आंतरिक आत्मीयता देख सागरमलजी स्वामी अत्यन्त प्रसन्न हो जाते।

मुनि आकाशकुमारजी और मुनि सुधांशुकुमारजी मुनिश्री की सेवा करते। प्रश्न पूछते। समाधान पाते। दोनों ही संतों को मुनिश्री खूब वात्सल्य प्रदान करते। इतिहास के बारे में बताते। प्रगति करने के गुर सिखाते।

सत्ता और सत्य

सागरमलजी स्वामी के नातिले पंकजजी कोठारी ने मुनिश्री से पूछा—महाराज सत्ता और सत्य में क्या अन्तर है?

सागरमलजी स्वामी ने सत्ता और सत्य के फरक को समझाने के लिए लम्बी व्याख्या नहीं की अपितु परिमित शब्दों में उत्तर देते हुए कहा—जो दूसरों को सता-सता कर मिले वह सत्ता और जो स्वयं को तपा-तपा कर मिले वह सत्य है।

मुनिश्री ने विशाल व्याख्या न कर मात्र दो लाईन में जितनी मार्मिक व्याख्या की वह उनकी विशेषता थी। वे प्रश्नों का उत्तर ऐसा दिराते की आगन्तुक व्यक्ति संतुष्ट हो जाता। मुनिश्री में प्रश्न पूछने की कला भी अजब थी। एक बार जयसिंहपुर से बहुत सारे युवक आये हुए थे। मुनिश्री ने लगभग आधा घंटे तक उनसे प्रश्नोत्तर किये ओर वे प्रश्नोत्तर केवल नवकार मंत्र पर ही पूछे। किन्तु मुनिश्री के सरल-सरल प्रश्न के उत्तर भी वे समुचिता के साथ नहीं दे पाये।

मुनिश्री की आधे घंटे की सेवा सम्पन्न कर जैसे ही वे युवक उठे तो उन्होंने कहा—धर्म के बारे में बहुत पढ़ा, बहुत सुना पर आज जो हमको जानने को मिला वह अन्यत्र हमें इस प्रकार सुनने को नहीं मिला। वे युवक मुनिश्री के प्रति कृतज्ञ हो गये। उनका मन आह्लादित हो उठा।

अस्वस्थ

२३.८.२०११ को मुनिश्री फिर अस्वस्थ हो गये। आपको खांसी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

का काफी परिषह रहा। परन्तु मुनिश्री का मनोबल, आत्मबल और साधना बल बहुत बलवान था। मुनिश्री शारीरिक कमजोरी के बाद भी अपने कार्यों को करने कि चेष्टा करते। आगन्तुक लोगों को सेवा कराते, उन्हें धर्म ध्यान की प्रेरणा देते।

सागरमलजी स्वामी के शरीर में कमजोरी निरंतर बढ़ने लगी। शरीर में विटामिन, प्रोटीन आदि की कमी हो गयी थी। फल स्वरूप मुनिश्री को दस या पन्द्रह सेकेण्ड के लिए बेहोशी आने लगी। मुनिश्री को प्रोस्टेड की प्रोबलम थी। आपकी यह स्थिति आचार्य वर को जब ज्ञात हुयी तब पूज्यश्री ने सन्देश फरमाया जो इस प्रकार है—

अर्हम्

२५.८.२०११

तेरापंथ इतिहास मनीषी मुनिश्री सागरमलजी स्वामी 'श्रमण' अस्वस्थ है जितना संभव हो उनका उपचार हो जाए। यदि डॉक्टर आदि कि अपेक्षा हो तो हमें ज्ञात हो जाए। जप आदि का प्रयोग हमेशा चलता रहे।

केलवा **आचार्य महाश्रमण**

इस प्रकार समय-समय पर आचार्यवर के संदेश आते रहे। पूज्यश्री की कृपा मुनिश्री व हम संतों पर बनी रही।

अंतिम प्रवचन

अस्वस्थ होने के बाद भी मुनिश्री २०९वें भिक्षु चरमोत्सव पर महाप्रज्ञ भवन पधारें। कार्यक्रम प्रारम्भ होने के बाद आप पधारें। आपने एक गीत की रचना की उसका ध्रुव पद था—'म्हारे भिखु-स्याम-भिखु स्याम रटन एक ही लागी....इसी गीत का संगान करते हुए उन्होंने आचार्य भिक्षु के प्रति अपने विचार प्रकट करते हुए कहा—

सिरियारी भिक्षु युग में तेरापंथ का गढ़ रहा है। यहां का राज परिवार उस समय से लेकर आज तक सेवाएं देता आ रहा है। आचार्य भिक्षु का आज के दिन निर्वाण हुआ। पक्की हाट में आचार्य भिक्षु विश्राम ध्यानस्थ थे। दर्जी के शब्द सुन आचार्य भिक्षु जिन मुद्रा में अवस्थित हुए और

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कहा—दर्जी कह रहा है मेरा काम तो तैयार है अब देरी बाबोजी की है। मेरे क्या देरी? यूं कहा स्वामीजी ने स्वेच्छा से इच्छा मृत्यु का वरण किया। आज उस प्रप्पन्न महायोगी की हम यशोगाथा गा रहे है। हम उनके दर्शन करना चाहते हैं पर मुझे लगता है मेरे आगे भी भिक्षु है। पीछे भी भिक्षु है। दांये-बांये भी भिक्षु है और जिधर देखता हूं उधर भिक्षु की छवि दिखायी देती है। वह महान संत अपने दृढ़संकल्प के साथ आगे बढ़ा। विपरीत परिस्थितियों में भी पराङ्मुख नहीं हुआ। उनके द्वारा.....।

अंतिम बार भिक्षु समाधि स्थल

दिनांक ९.९.२०११ मुनिश्री सागरमलजी स्वामी समाधि स्थल पधारें। समाधिस्थल पर बारह या तेरह मिनट तक जप किया। मंगलपाठ सुनाया। मुनिश्री का भिक्षु समाधिस्थल पर यह अंतिम पदार्पण था।

सागरमलजी स्वामी प्रायः भिक्षु स्वामी का जप किया करते। आचार्य भिक्षु के प्रति मुनिश्री की अनंत आस्था थी। सिरियारी में यात्री दर्शनार्थ आते तब मुनिश्री सभी को भिक्षु स्वामी की तेरह माला फेरने के लिए कहते।

मुनिश्री अस्वस्थ अवस्था में भी अधिक से अधिक भिक्षु स्वामी का जाप किया करते। आचार्य भिक्षु ही मुनिश्री के इष्ट थे और जो व्यक्ति अपने इष्ट का श्रद्धा के साथ जाप करता है उसके अभीष्ट की पूर्ति प्रायः हो जाती है। मुनिश्री 'भिखू स्याम' यह जाप करने के लिए विशेष रूप से फरमाते थे। 'भिखू स्याम' जाप की शक्ति को बताते हुए मुनिश्री कहते—यह नवांकी जाप है और नौ का अंक हमेशा अखंडित रहता है। यह जाप परम शक्तिशाली है। इस जाप को करने से अनेकों प्रकार के लाभ होते हैं।

अंतिम पांच दिन

दिनांक १८.१०.२०११ के दिन सागरमलजी स्वामी ने मणिलालजी स्वामी और मेरे हाथ का सहारा लेकर पूरे हेम अतिथि गृह का चक्कर काटा साथ में मुनि राजकुमारजी स्वामी भी थे। मुनिश्री आठ नम्बर कमरे में पधारे और फरमाया—मणिलालजी! शरीर बुढ़ापे में कैसा हो गया।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मणिलालजी स्वामी ने कहा—बुढ़ापे में ऐसा ही होता है।

मुनिश्री ने कहा—देखो मेरे हाथ कैसे हो गये है। अब इस शरीर का भरोसा नहीं, पता नहीं कब छूट जाए।

हम संतों ने कहा—महाराज! अस्वस्थता के कारण ऐसा होता है थोड़ा सा स्वस्थ होने पर सब कुछ ठीक हो जाएगा।

मुनिश्री नौ नम्बर कमरे में पधारे। मैंने मुनिश्री से कहा—महाराज! आप जब तक विराजेंगे तब तक मैं आपकी सेवा तन-मन से करूंगा। आप की सेवा में किसी भी प्रकार की कोई कमी नहीं रखूंगा। मेरा कोई अविनय हुआ तो मुझे क्षमा करना। मुझे आशीर्वाद दे।

सागरमलजी स्वामी ने मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए कहा—कुशलजी! खमतखामणा करता हूं। तुम बहुत विकास करोगे, बहुत आगे से आगे बढ़ोगे। सदा धर्म संघ की सेवा करना। अपनी चर्या में सजग रहना।

मैं मुनिश्री का अमित वात्सल्य पाकर प्रसन्न चित्त हो गया।

दिनांक १९.१०.२०११ डॉक्टर साहब आये, मुनिश्री की सुखसाता पूछी। मुनिश्री ने पूछा—मैं कब तक स्वस्थ होऊंगा।

डॉ. साहब बोले—मुनिश्री आप शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएंगे।

मुनिश्री—मैं आपकी गोलियां लेते-लेते ऊब गया हूं।

डॉ. साहब बोले—आपके स्वस्थ होते ही में दवाई गोली बंद कर दूंगा।

आचार्य भिक्षु के दर्शन

शाम को घड़ी में लगभग पांच बज रहे थे। मुनिश्री पाट पर विश्राम कर रहे थे। अचानक मुनिश्री ने तेज स्वर में कुछ कहा। मणिलालजी स्वामी त्वरित गति से मुनिश्री के पास आये और पूछा—क्या भाईजी महाराज पधारे थे?

मुनिश्री ने कहा—नहीं।

मुनिश्री मणिलालजी ने पूछा—स्वामीजी (आचार्य भिक्षु) पधारें?

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मुनिश्री ने कहा—हां स्वामीजी आये।

मणिलालजी स्वामी ने मुझे बताया। मैं मुनिश्री के पास गया उनसे पूछा—महाराज भाईजी महाराज पधारे?

मुनिश्री ने कहा—नहीं।

मैंने पूछा—स्वामीजी ने आपको दर्शन दिये?

मुनिश्री ने कहा—हां।

मैंने पूछा—स्वामीजी कैसे दिख रहे थे? अभी हम फोटो में देख रहे है ठीक वैसे ही या दूसरे रूप में? आपकी स्वामीजी से क्या बात हुई?

मुनिश्री ने कहा—मैं तुम्हें कुछ भी नहीं बता सकता।

सागरमलजी स्वामी ने जीवन भर आचार्य भिक्षु का जाप किया और वह जाप संख्या संभवतः एक करोड़ से भी ऊपर चली गयी थी। मुनिश्री का जाप दिन दिन बढ़ता गया और मुनिश्री के जाप से निकलने वाली तरंगे पांचवें देवलोक में विराजित आचार्य संत भीखणजी के इंद्रासन से टकराई होगी और आचार्य भिक्षु अपने भक्त को दर्शन देने के लिए पधार गये होंगे।

आचार्य भिक्षु के दर्शन होने के बाद सागरमलजी स्वामी के स्वास्थ्य में सुधार हुआ।

संथारे की भावना

२०.१०.२०११ सागरमलजी स्वामी को संभवतः पता चल गया था कि अब मेरा आयुष्य निकट है। मुनिश्री ने अपना जीवन संयम में बिताया अब साधना और आराधना के द्वारा आत्मोद्धार करना चाहते थे। सायं प्रतिक्रमण के पश्चात मुनि श्री ने फरमाया—मणिलालजी! मेरी इच्छा संथारा करने की है।

मुनिश्री की बात सुन मणिलालजी स्वामी स्तंभित से रह गये। पर दूसरे ही क्षण संभलते हुए कहा—भाईजी महाराज! फरमाते थे साधु का जीवन अपने आप में संयमी जीवन है। साधु का समाधिपूर्वक, त्याग की भावना के साथ देवलोक गमन हो तो वह संथारे के समकक्ष ही है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मुनिश्री मौन हो गये। रात्रि में दस बजे के आसपास सागरमलजी स्वामी ने कहा—मुझे तो संथारा करना है। मणिलालजी स्वामी ने मना किया। मैंने कहा—महाराज! आप इतनी जल्दी क्यों करते है। अभी तो मुणिन्द मोरा पुस्तक पूरी करनी है। और भी कई कार्य करने है। डॉ. साहब बोले—आप अभी संथारे के विचार छोड़ दे। आज आपके स्वास्थ्य में सुधार भी हैं। हमने निवेदन किया—अभी तो आप विश्राम करे। सुबह इस विषय पर चिन्तन करेंगे।

सभी को दर्शन करने दो

२१.१०.२०११ का प्रभात हुआ। मुनिश्री ने स्वस्थता का अनुभव किया। हमें भी लगा आज मुनिश्री पहले से कुछ स्वस्थ है। डॉ. साहब आये और बोले—आज आपके ड्रिप नहीं चढ़ायेंगे।

मुनिश्री ने प्रसन्न होते हुए कहा—आज मैं डॉक्टर के जंजाल से मुक्त हो गया हूं।

मुनिश्री ने ऐसे लहजे में कहा कि सारा वातावरण हास्यमय हो गया।

मुनिश्री प्रसन्न मन से लेखन कार्य करने के लिए विराजे। मुनिश्री ने कहा—अमुक कलर की डायरी है वह लाकर मुझे दो। मैंने मुनिश्री को निवेदन की। मुनिश्री ने कुछ समय तक लिखा। फिर डायरियां रख थोड़ी देर विश्राम किया। मुनिश्री विराजे। फिर कहा—कुशलजी! इतने लोग दर्शनार्थ आते है उन्हें खिड़की से ही दर्शन कराते हो अन्दर आने की मनाही क्यों करते हो। कितनी भावना के साथ आते है।

मैंने कहा—मुनिश्री आपके इन्फेक्शन न हो जाये इसलिए मनाही करते है।

मुनिश्री ने कहा—अब किसी भी दर्शनार्थी को मनाही मत करना। जो भी मेरे दर्शन करना चाहे उन्हें दर्शन करने देना। दरवाजा खोल दो।

मुनिश्री के आदेशानुसार दरवाजा खोल दिया। लोग अन्दर आकर दर्शन करने लगे। दोपहर में मुनिश्री ने कहा—कल रणजीत! (मुनिश्री के भाई) जा रहा है। उसे आज थोड़ी देर सेवा करा देता हूं। मुनिश्री ने रणजीत

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जी व उनके घर से सुशीलाजी को सेवा करायी।

अंतिम शिक्षा

२२.१०.२०११। सागरमलजी स्वामी मणिलालजी स्वामी और मेरा सहारा लेकर आठ नम्बर रूम में पधारे। दैनिक कार्य सम्पन्न किया। आज मुनिश्री ने प्रातराश ग्रहण नहीं किया। डॉ. मनीषजी ने आपका इलाज किया जिससे आपको राहत महसूस हुई। दोपहर में मुनिश्री ने अल्पतम आहार आग्रहपूर्वक निवेदन पर ग्रहण किया। दोपहर में मैंने मुनिश्री से निवेदन किया कुछ शिक्षा फरमाओ, मुनिश्री ने शिक्षा फरमाते हुए कहा—कुशलजी सदा बड़े संतों का विनय रखना। गुरु आज्ञा हो वैसा कार्य करना। मणिलालजी का ध्यान अच्छी तरह रखना। कभी कोई गलती हो जाये तो तत्काल खमतखामणा कर लेना।

मैंने महाराज को कहा—तहत! ध्यान रखने का भाव है।

मणिलालजी स्वामी की ओर उन्मुख होकर मुनिश्री ने कहा—मणिलालजी आहार पूरा करा करो। अब मेरे काम तुम्हें ही करना है। साथी संतों को तुम्हें ही संभालना है। गुरुदेव के अभिप्राय को समझ प्रत्येक कार्य करते रहना।

हमने मुनिश्री से खमतखामणा किये।

मुनिश्री शाम को कई दिनों से आहार ग्रहण नहीं कर रहे थे अतः आज भी आहार ग्रहण नहीं किया।

सांय प्रतिक्रमण के पश्चात् मणिलालजी स्वामी ने मुनिश्री को कहा—महाराज! आप मेरा मोह छोड़ दो। आप मेरे बारे में न सोचे। संघ है पूज्यवर है। आप तो आत्म-कल्याण करें।

मुनिश्री यह सुन मुस्कराने लगे। उन्होंने मणिलाल जी स्वामी के सिर पर खूब हाथ फेरा।

मैंने मुनिश्री को वंदना की और पूछा—आपके सुखसाता है, आपको कैसा लग रहा है?

मुनिश्री ने कहा—आज बहुत अच्छा लग रहा है, पहले से आराम है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कमलेशजी आये उन्होंने पूछा—मत्थएणं वंदामि! आप के सुख साता है?

मुनिश्री ने कहा—हाँ थानेदार जी ठीक है।

मणिलाल जी स्वामी, मैं (मुनि कुशल) और कमलेशजी हम तीनों बैठे थे। हम तीनों से मुनिश्री ने कुछ देर बातचीत की।

रात्रि के लगभग नौ बज रहे थे। मैंने मुनिश्री से कहा—महाराज! अब आप स्वामीजी का जाप कीजिये।

मुनिश्री ने कहा—अब काम क्या है यही काम करना है।

यह मेरी मुनिश्री से अंतिम बातचीत थी। फिर मैंने एक, डेढ़ घंटे तक नवकार मंत्र, लोगस्स पाठ और आचार्य भिक्षु का जाप मुनि श्री को सुनाया।

अंतिम बातचीत

रात्रि को ११:०० बजे के आसपास मणिलाल जी स्वामी जाप सुना रहे थे। उस बीच मुनिश्री ने कहा—मणिलाल जी! कल सुबह सूरज उगते ही डॉ. साहब के द्वारा आचार्य श्री को निवेदन कर प्रायश्चित आदि लेना चाहता हूं।

मणिलाल जी स्वामी ने कहा—सूबह सुरज उगते ही डॉ. साहब को कहने का भाव है। यह मुनिश्री की अंतिम बातचीत थी।

रात भर हम सागरमल जी स्वामी को संभालते रहे। रात को हमने देखा सागरमल जी स्वामी कुछ बोल रहे थे। देर तक बोलते रहे। काफी शब्द अस्पष्ट थे, अत: बताया नहीं जा सकता वे क्या बात कर रहे थे।

पश्चिम काल का प्रतिक्रमण मणिलालजी स्वामी ने सागरमल जी स्वामी को सुनाया। मुनि श्री की हमने पलेवणा की।

प्रयाण

दिनांक २३.१०.२०११ रविवार कार्तिक कृष्णा एकादशी के दिन सूर्योदय हुआ। हम पानी लेकर आये। हेम अतिथि गृह, कमरा नम्बर नौ,

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

मुनि श्री लगभग पांच वर्ष से जिस स्थान पर विराज रहे थे आज वही पर आप विश्राम कर रहे थे। मुनिश्री देख रहे थे। मणिलाल जी स्वामी मुनिश्री के सन्निकट ही बैठे थे। मैं (मुनि कुशल) मुनिश्री के मस्तक के पास खड़ा था। मुनि राजकुमार जी स्वामी भी पास में ही खड़े थे।

अचानक सागरमल जी स्वामी के शरीर में प्रकंपन होने लगा। मुझे उसी समय महसुस हो गया मुनिश्री का आयुष्य निकट आ गया लगता है। मैं मुनि श्री के कान में नवकार मंत्र सुनाने लगा। और दस सेकिंड के भीतर-भीतर मुनिश्री का शरीर सक्रिय से निष्क्रिय हो गया। देह से विदेह हो गया। प्राणवान से निष्प्राण हो गया और मुनिश्री का प्रयाण हो गया।

आचार्य भिक्षु अस्पताल के डॉ. बी. आर शर्मा ने मुनिश्री की नाड़ देखकर देवलोकगमन की घोषणा की।

हमने मुनिश्री के पार्थिव शरीर को वोसिराया। श्रावकों ने आपकी देह को दर्शनार्थ बाहर पंडाल में रख दिया। सभी लोगों के चेहरों पर गहरी मायूसी थी।

तेरापंथ इतिहास मनीषी मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण' के देवलोकगमन के बाद आचार्यवर का प्राप्त संदेश इस प्रकार है—

अर्हम्

२३.१०.२०११

मुनिश्री सागरमलजी स्वामी का स्वर्गवास हो गया। तेरापंथ इतिहास के एक मनीषी संत थे। धर्मसंघ में क्षति हो गयी। अब मुनिश्री मणिलालजी स्वामी खूब मनोबल रखें यह अपेक्षा है वे लम्बे काल तक सागरमलजी स्वामी के साथ रहे हैं। आज्ञा, आलोवणा व्यवस्था का पूरा जिम्मा मुनिश्री मणिलालजी स्वामी संभालें।

केलवा **आचार्य महाश्रमण**

मुनिश्री के देवलोकगमन की सूचना मोबाइल, टेलिफोन आदि के द्वारा तेरापंथ समाज में प्रेषित होने लगी। टी.वी. पर भी मुनिश्री के देवलोकगमन की सूचना प्रसारित हो गयी।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

जोड़ी टूट गयी

सागरमलजी स्वामी व मणिलालजी स्वामी को साथ में रहते हुए लगभग उनसठ वर्ष हो रहे थे। सागरमल जी स्वामी का वात्सल्य मणिलाल जी स्वामी का विनय और दोनों की पारस्परिक सेवा ही आपसी सामंजस्य की प्रवर भूमिका थी। मुनिश्री कुछ कह देते तो मणिलाल जी स्वामी मौन रहते और मणिलाल जी स्वामी कुछ कहते तो मुनिश्री मौन रहते। सहिष्णुता का मंत्र लेकर दोनों ही मुनियों ने उनसठ वर्ष साथ गुजारे। राम लक्ष्मण की जोड़ी आज टूट गयी।

अधूरे कार्य

सागरमल जी स्वामी 'मुणिन्द मोरा' पुस्तक लिख रहे थे। मुनिश्री ने लगभग दो सौ से अधिक पृष्ठ लिख दिये थे और आगे का कार्य भी गतिमान था पर मुनिश्री के देवलोकगमन हो जाने से पुस्तक का कार्य अधुरा रह गया। मुनिश्री द्वारा आवश्यक व करणीय कार्य और भी थे पर सभी कार्य अधूरे रह गयें। इतिहास का मुनिश्री को बहुत ज्ञान था। मुनिश्री के मस्तिष्क में इतिहास के अनेकों संदर्भ सुरक्षित थे पर तेरापंथ इतिहास मनीषी के देवलोकगमन से ऐसे बहुत से कार्य अपूर्ण रह गये।

सागरमल जी स्वामी फरमाया करते—मैं काम अधूरा छोड़कर जाऊंगा तो तुम सब याद करोगें। आज वास्तव में उन्हें याद करते हुये कहते है—काश! मुनिश्री लिखकर पधारते।

अंतिम संस्कार

मुनिश्री के अंतिम दर्शन के लिये जगह-जगह से लोग आने लगें। ४:३० पर प्रयाण यात्रा प्रारम्भ हुई। पांच रजत कलशों से सुसज्जित बैकुंठी को सर्वप्रथम समाधि स्थल पर ले जाया गया। वहां से यात्रा प्रारंभ हुई। नगर के बाहर से चक्कर लगाती हुई प्रयाण यात्रा तपस्विनी नदी में पहुंची। पूरी यात्रा में गुलाल व चांदी के फूल उछाले गये। विशाल जनमेदिनी के बीच मुनिश्री के भाई रणजीतजी कोठारी ने मुखाग्नि दी। मुखाग्नि देते ही लोग गगनभेदी नारे लगाते हुए बोले—

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

आचार्य भिक्षु की जय हो.....

श्रमण सागर की जय हो.....

मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण' की जय हो....

भिक्षु तपोभूमि में देखते-देखते मुनिश्री सागरमलजी स्वामी की देह पंचतत्त्व में विलीन हो गयी।

लोगों ने संघीय गीत गायें। मुनिश्री पर बनाया गया गीत भी लोगों ने गाया।

समाधि-स्थल

सागरमलजी स्वामी की अस्थियों को कलश में डालकर ढक्कन देने के पश्चात् मोली बांधी गयी। फिर इस अस्थि-कलश को समाधि-स्थल के बीच में स्थापित किया गया। धीरे-धीरे मुनिश्री की समाधि बनकर तैयार हुई। समाधि पर सफेद मार्बल लगाया गया और मुनिश्री की जीवन संबंधी जानकारियां उत्कीर्ण की गयी। मुनिश्री की समाधि पर कई लोग आते है व मुनिश्री का जाप (ॐ सागर नमो नमः, ॐ सागर श्रमाणय नमः) कर धन्यता का अनुभव करते हैं।

चातुर्मास विवरण

तेरापंथ इतिहास मनीषी मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण' ने अपने जीवन में कुल ७१ चातुर्मास किये—उनका विवरण इस प्रकार है—

वि. सं.	चतुर्मास स्थान	किसके साथ	तप दिन	यात्रा-मान
१९९७	लाडनूं	आचार्य तुलसी	उप. १	०
१९९८	राजलदेसर	आचार्य तुलसी	५	१६० कि.मी.
१९९९	रतनगढ़	नगराजजी (सरदारशहर)	७	१६० कि.मी.
२०००	बीकानेर	चम्पालालजी (मीठिया)	६	२५०
२००१	दिल्ली	डूंगरमलजी	८	८८०
२००२	जगरावां	मन्नालालजी	१७	८८०
२००३	समाणा	मन्नालालजी	१७	५६०
२००४	रतनगढ़	आचार्य तुलसी	१६	४४०

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वि. सं.	चतुर्मास स्थान	किसके साथ	तप दिन	यात्रा-मान
२००५	जयपुर	भाईजी महाराज	७	८००
२००६	दिल्ली	भाईजी महाराज	९	१२८०
२००७	भिवानी	भाईजी महाराज	११	१९२०
२००८	दिल्ली	आचार्य तुलसी	१४	२०००
२००९	सरदारशहर	आचार्य तुलसी	१४ तेला-१	१२००
२०१०	जोधपुर	आचार्य तुलसी	१४	१७६०
२०११	बम्बई	आचार्य तुलसी	३६	१६००
२०१२	उज्जैन	आचार्य तुलसी	२३ तेला-१	१४००
२०१३	सरदारशहर	आचार्य तुलसी	७	११२०
२०१४	चूरू	चम्पालालजी (मिठिया)	७ बेला १	८००
२०१५	कानपुर	आचार्य तुलसी	५	१६००
२०१६	कलकत्ता	आचार्य तुलसी	३	१३६०
२०१७	राजनगर	आचार्य तुलसी	४	३०८०
२०१८	बीदासर	आचार्य तुलसी	५	१४४०
२०१९	उदयपुर	आचार्य तुलसी	९	१०४०
२०२०	लाडनूं	आचार्य तुलसी	१२	१००९
२०२१	गंगाशहर	भाईजी महाराज	५	१०००
२०२२	दिल्ली	आचार्य तुलसी	४	१६००
२०२३	बीदासर	आचार्य तुलसी	७	९६०
२०२४	अहमदाबाद	आचार्य तुलसी	३	१७८१
२०२५	मद्रास	आचार्य तुलसी	७	२४००
२०२६	बैंगलोर	आचार्य तुलसी	५	२२४०
२०२७	रायपुर	आचार्य तुलसी	३	३०००
२०२८	लाडनूं	आचार्य तुलसी	४	१६००
२०२९	चूरू	आचार्य तुलसी	१३	६००
२०३०	हिसार	आचार्य तुलसी	२	४८०
२०३१	दिल्ली	आचार्य तुलसी	४	४८०
२०३२	जयपुर	आचार्य तुलसी	६	६४०
२०३३	सरदारशहर	आचार्य तुलसी	७	४००

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वि. सं.	चतुर्मास स्थान	किसके साथ	तप दिन	यात्रा-मान
२०३४	दिल्ली	स्वतंत्र ठाणा ४	२३	५२०
२०३५	हिसार	ठा. ४	५	१०४०
२०३६	बम्बई	ठा. ४	१६	१६०६
२०३७	अहमदाबाद	ठा. ४	१६	४८०
२०३८	आमेट	ठा. ३	३०	१४०८
२०३६	सरदारशहर	ठा. ३	३०	११६३
२०४०	छापर	ठा. ६	३०	२७४
२०४१	नोहर	ठा. ३	२८	४५०
२०४२	अहमदगढ़	ठा. ३	३१	५७०
२०४३	जोधपुर	ठा. ३	३०	१०४४
२०४४	रायपुर	ठा. ३	३०	१६६४
२०४५	बैंगलोर	ठा. ३	३१	१८१०
२०४६	मद्रास	ठा. ३	३१	७६५
२०४७	मद्रास	ठा. ३	३२	१७५६
२०४८	आरकोनम्	ठा. ३	३१	७२७
२०४६	जयसिंहपुर	ठा. ३	३०	१६६३
२०५०	सरदारशहर	ठा. ३	४१	२०६८
२०५१	पाली	ठा. ४	३२	६८२
२०५२	बालोतरा	ठा. ३	३२	२४५
२०५३	रतलाम	ठा. ३	३१	११८३
२०५४	राजनगर	ठा. ३	५	५७३
२०५५	सरदारशहर	ठा. ५	३५	६५०
२०५६	दिल्ली	आचार्य महाप्रज्ञ	३०	७००
२०५७	पड़िहारा	ठा. ३	३३	७६६
२०५८	संगरूर	ठा. ३	३४	७४८
२०५६	बोरावड़	ठा. ३	१७	११६१
२०६०	बोरावड़	ठा. ३	४	०
२०६१	सिरियारी	आचार्य महाप्रज्ञ	३	२३०
२०६२	भिवानी	ठा. ६	३	६००

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

वि. सं.	चतुर्मास स्थान	किसके साथ	तप दिन	यात्रा-मान
२०६३	भिवानी	आचार्य महाप्रज्ञ	४	८०
२०६४	सिरियारी	ठा. ५	६	०
२०६५	सिरियारी	ठा. ४	६	०
२०६६	सिरियारी	ठा. ३	६	०
२०६७	सिरियारी	ठा. ४	५	०
२०६८	सिरियारी	ठा. ४	५	०

जीवन यात्रा

सागरमलजी स्वामी ने आचार्यश्री तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ के निर्देशानुसार भारत के विभिन्न प्रान्तों की प्रलम्ब यात्राएं की। मुनिश्री सरिता की भांति बहते हुए जन-जन की आध्यात्मिक पिपासा को उपशांत करते हुए आगे बढ़ते रहे। यात्राओं के द्वारा तेरापंथ धर्मसंघ की बहुत प्रभावना की। जीवन भर यात्रा कर मुनिश्री सिरियारी पधारें। सिरियारी में लगभग पांच वर्ष तक विराजे और भिक्षु भूमि में अपनी जीवन यात्रा सम्पन्न की।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

तेरापंथ इतिहास मनीषी
मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण' की स्मृति सभा

आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण' की स्मृति सभा

दिनांक २५.१०.२०११ केलवा में परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में सागरमलजी स्वामी की स्मृति सभा कार्यक्रम शुरू हुआ।

शासनश्री मुनि सुमेरमलजी 'सुदर्शन', शासनश्री मुनि सुखलालजी, शासनश्री मुनि पानमलजी, शासनश्री मुनि किशनलालजी, मुनि भवभूतिजी, शासनश्री मुनि राजेन्द्रकुमारजी, मुनि उदितकुमारजी, शासनगौरव मुनि धनंजयकुमारजी, मुनि तन्मयकुमारजी, मुनि मोहजीत कुमारजी, मुनि रजनीशकुमारजी, स्व. मुनिश्री के पोते मुनि गौरवकुमारजी, साध्वी जिनप्रभाजी, साध्वी कल्पलताजी ने उनकी विशेषताओं को विभिन्न कोणों से प्रस्तुत किया। वर्षों तक कासीद के रूप में उनकी सेवा करने वाले सुखदान चारण ने भी अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किये।

मंत्री मुनि ने अपने प्रेरक उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा—संघ महान है। संघ में जो आता है, समर्पण के साथ जीवन-यापन करता है वह महान् बन जाता है। मुनिश्री सागरमलजी स्वामी ने आचार्य तुलसी के करकमलों से दीक्षा प्राप्त की। मेरे और उनके बीच दीक्षा पर्याय में एक वर्ष का ही अंतराल था ७० वर्ष के संयम पर्याय में अनेक बार उनसे मिलना हुआ और साथ में रहे। उनकी संघ निष्ठा बेजोड़ थी। उन्होंने जीवन भर संघ की सेवा

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

की। वे भाईजी महाराज की सेवा में समर्पित रहे। उनके पास ज्ञान का, संघनिष्ठा का और सेवाभावना का खजाना था।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने भाव सुमन अर्पित करते हुए कहा—मुनिश्री सागरमलजी स्वामी की दीक्षा मेरे जन्म से पहले हो गई थी। मेरा जीवन में प्रथम बार आचार्यश्री तुलसी के सान्निध्य में कानपुर में साहित्य के कार्य विषयक मुनिश्री से मिलना हुआ। उनमें बहुत विशेषता थी। व्यक्ति अनेक विशेषताओं से ही विशिष्ट बनता है। मुनिश्री सागरमलजी स्वामी इतिहास के बहुत अच्छे जानकार थे। कलाकारी में उनकी सूक्ष्म दृष्टि रहती थी। वे साध्वियों की कला में भी मीन-मेख निकाल देते थे।

श्रद्धेय आचार्यवर ने मंगल प्रवचन में फरमाया—मुनिश्री सागरमलजी स्वामी इतिहास मनीषी थे। उनमें अनेकानेक विशेषताएं थी। मेरे जन्म से पहले मुनिश्री शासन में दीक्षित हो गये थे। मेरे लिए तो वे बहुत बड़े संत थे। यदा-कदा साधु-साध्वी दिवंगत होते हैं पर सबकी स्मृति सभा लम्बी नहीं चलती, कोई-कोई ही ऐसे होते है जिनकी स्मृति सभा लम्बी चलती है और अनेक साधु-साध्वियां गुणगान करते है। मुनिश्री सागरमलजी स्वामी भाईजी महाराज की सेवा करने वाले संत थे।

आचार्यश्री ने आगे कहा—मुनिश्री के बारे में जितना मैंने जाना समझा, वे वत्सलता प्रदान करने वाले थे। उन्हें 'थापी वाला संत' कहा जाता था। कोई वंदना करने जाता तो वे उसे थापी देते। यह उनका वात्सल्य भाव था। उनका सेवाभाव भी प्रशस्य था। मुनिश्री कुशल लिपिकार, चित्रकार, कलाकार और प्रवचनकार थे। उन्होंने कई प्रतिबोधक चित्र बनाए। तेरापंथ इतिहास व क्षेत्रीय इतिहास के वे विशिष्ट जानकार थे। मुनि बुद्धमलजी स्वामी, मुनि नवरत्नमलजी स्वामी पधार गए। अब मुनि सागरमलजी स्वामी भी नहीं रहे। उनके चले जाने से हमारे धर्मसंघ में एक इतिहास मनीषी संत की कमी हो गई। हमारे संतों के द्वारा उनकी पूर्ति हो सके, ऐसा प्रयास करना है।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

संतों के सेवाभाव का उल्लेख करते हुए आचार्यवर ने कहा—मुनि मणिलालजी स्वामी लम्बे समय तक उनके साथ रहे। मुझे लगता है उनका परस्पर एक आंतरिक लगाव था। सागरमलजी स्वामी उनकी सेवा कर देते और मणिलालजी स्वामी उनकी सेवा करते। उनका आपस में एकता भाव था। इतने ऐक्य भाव में थोड़ा राग भाव होना भी स्वाभाविक है। साथ में थे हमारे दो मुनि, मुनि राजकुमारजी व मुनि कुशलकुमारजी। हमारे संघ में सेवा की अच्छी व्यवस्था है। मुनि कुशलकुमार जी तो कई वर्षों से उनके साथ हैं। मुनि राजकुमार जी भरी गर्मी में चलकर आये। उनको भी सेवा का अच्छा मौका मिल गया।

आचार्यवर ने मुनिश्री के संदर्भ में दो पद्य फरमाए—

सागरगुण आकर सुखद, कलाकार विद्वान।
स्वामीजी के धाम में, किया स्वर्ग प्रस्थान।।
धैर्यवान बनकर रहें, मुनि प्रवर मणिलाल।
शासन की सेवा करें, रखें स्वास्थ्य संभाल।।

सागरमलजी स्वामी की स्मृति में चार लोगस्स का सामूहिक ध्यान किया गया।

सागरमलजी स्वामी की स्मृति सभा

आचार्य भिक्षु समाधिस्थल, हेम अतिथि गृह में दिनांक २३.१०.२०११ सायं प्रतिक्रमण के पश्चात् सागरमलजी स्वामी की स्मृति सभा का कार्यक्रम आयोजन हुआ।

कार्यक्रम का आरम्भ करते हुए सबसे पहले मैंने (मुनि कुशल) मुनिश्री का जीवन परिचय दिया और कहा—सागरमलजी स्वामी अनेकों-अनेकों विशेषताओं के पुंज थे। मुनिश्री केवल इतिहासकार ही नहीं थे वे कलाकार, चित्रकार, लिपिकार, प्रवचनकार, साहित्यकार, सलाहकार और संगीतकार भी थे। मुनिश्री के जाने से अपूरणीय सी क्षति हुई है।

पद्मजी पटावरी ने कहा—मैं जब जब सिरियारी आता तो मुझे मुनिश्री का सान्निध्य मिलता मैं उन पलों को विस्मृत नहीं कर सकता। मुनिश्री की

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

कृपा आज से नहीं राजनगर चतुर्मास से रही। मुनिश्री गंभीर चिंतक थे। मुनिश्री ने निर्मल चारित्र की आराधना की और भिक्षु समाधि स्थल पर अपनी यात्रा सम्पन्न की। ऐसे महान् योगी को मैं नमन करता हूं।

संस्थान के अध्यक्ष सुरेन्द्रजी सुराणा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा—मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण' के सिरियारी में विराजने से संस्थान का बहुत विकास हुआ। मैं मानता हूं मेरे जीवन में परिवर्तन लाने वाले मुनिश्री सागरमलजी है। मैं उनकी प्रेरणा के बाद ही सामायिक करने लगा हूं। मुनिश्री की मुझ पर असीम कृपा रही। मैं उनके उपकार को भूला नहीं सकता।

मुनिश्री मणिलालजी स्वामी ने सागरमलजी स्वामी के प्रति अपने विचार मौन रूप में ही व्यक्त किये।

सुखदानजी चारण आदि लोगों ने मुनिश्री के प्रति अपने विचार व्यक्त किए।

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

भाईजी महाराज के साथ मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण'

मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण' अंतिम बार भिक्षु समाधि स्थल पर

भिवानी चातुर्मास का एक भावपूर्ण दृश्य

उपप्रधानमंत्री व रक्षामंत्री जगजीवनरामजी और तीनों सेनाध्यक्षों के साथ चर्चा करते हुए मुनिश्री सागरमलजी 'श्रमण'

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org

श्रमण-सागर

- जन्म -

वि.सं. १९८२ माघ शुक्ला पाचम्, सोमवार १८ जनवरी १९२६, लाडनूं

- पिता व माता -

तिलोकचंदजी कोठारी, धापूदेवी कोठारी

- दीक्षा -

वि.सं. १९९७ कार्तिक कृष्णा आठम्, गुरुवार
२४ अक्टूबर १९४०, लाडनूं, आचार्यश्री तुलसी के द्वारा

- अग्रणी -

वि.सं. २०३२, पोष कृष्णा पाचम्, मंगलवार २३ दिसम्बर १९७५, लाडनूं

- उपलब्धियां -

आचार्यश्री तुलसी के द्वारा - 'स्वास्थ्य निकाय'
आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा - 'सूचना प्रभारी'
आचार्यश्री महाश्रमण के द्वारा - 'तेरापंथ इतिहास मनीषी'
मुनिश्री इतिहासकार, कलाकार, प्रखर प्रवचनकार,
सिद्ध हस्तलेखक और प्राच्यविद्याओं के ज्ञाता थे।

- साहित्य -

भिक्षु जीवन झांकी, भिखू स्याम भिखू स्याम्,
जय जय जय महाराज, चिरंतन-चिंतन इत्यादि।

- प्रयाण -

वि.सं. २०६८, कार्तिक कृष्णा ग्यारस, रविवार
दिनांक २३ अक्टूबर २०११ सिरियारी

© Jain Vishva Bharati For Personal & Private Use Only https://books.jvbharati.org